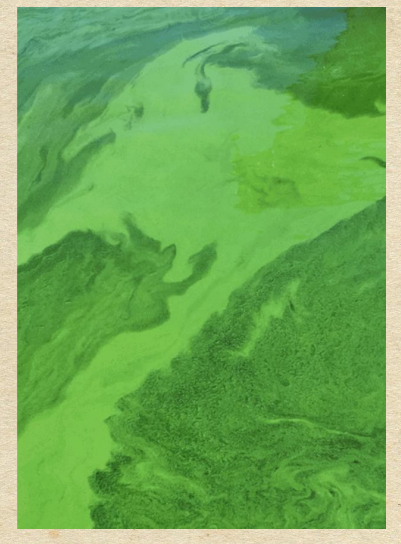

Sri Ramakrishna says, God has hidden everything with His maya. He doesn't let you understand anything. 'Lust and greed' constitute maya. Only he who removes the veil of maya can behold His vision. I was explaining to somebody that God is truly amazing, when He suddenly showed me a pond in the countryside (Kamarpukur). A person pushed aside the green scum covering the surface and drank the water below. The water was as clear as crystal. This showed that Sat-chit-ananda is covered by the maya of 'green scum'. Only he who can remove the scum can have His vision.

Sri Sri Ramakrishna Kathamrita Volume 3, IV.1 21 July 1883

नूपुर

2021

नूपुर - 2021

स्वामी नित्यात्मानन्द जी महाराज के
128वें जन्मोत्सव पर
स्मारिका-रूप में कतिपय 'नूपुर'

श्री रामकृष्ण श्री म प्रकाशन ट्रस्ट
(श्री म ट्रस्ट)

कार्यालय : 579, सैक्टर 18-बी, चण्डीगढ़ 160 018
फोन 0172-2724460
मो० 8427999572

मन्दिर : श्री श्रीरामकृष्ण कथामृत पीठ (श्री पीठ)
सैक्टर 19-डी, चण्डीगढ़ 160019

website : http://www.kathamrita.org
email : srimatrust@yahoo.com

आवरण चित्र

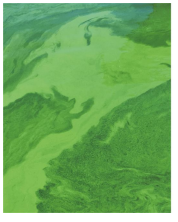

....किसी को समझाते-समझाते (ईश्वर एक विशेष आश्चर्यपूर्ण व्यापार है) दिखला दिया, हठात् सामने देखा देश (कामारपुकुर) का एक तालाब और एक व्यक्ति ने पाना (काही) हटाकर मानो पानी पी लिया। वह जल स्फटिकवत् है। दिखलाया कि वही सच्चिदानन्द माया रूप पाना (काही) से ढका हुआ है— जो इसे हटाकर जल पीता है, वही प्राप्त करता है।

— श्री श्रीरामकृष्ण कथामृत-3
21 जुलाई, 1883

© श्री म ट्रस्ट
गंगा दशहरा, 20 जून, 2021

सम्पादन	:	डॉ० (श्रीमती) निर्मल मित्तल
सहायता	:	डॉ० नौबतराम भारद्वाज सन्दीप नांगिया नितिन नन्दा
प्रकाशन	:	अध्यक्ष श्री रामकृष्ण श्री म प्रकाशन ट्रस्ट (श्री म ट्रस्ट) 579, सैक्टर 18-बी, चण्डीगढ़-160 018 फोन - 0172-2724460, मो० 8427999572
मुद्रण	:	प्रिंट लैण्ड, कश्मीरी गेट, दिल्ली - 110006

समर्पण

कथामृतकार श्री 'म' की सेवक-सन्तान
स्वामी नित्यात्मानन्द जी महाराज को
जो
श्री म दर्शन-ग्रन्थमाला के माध्यम से
श्रीरामकृष्ण-कथा को,
कथामृत में कही-अनकही ठाकुर-वाणी को
हम तक लाए।

'नूपुर' नाम क्यों?

ठाकुर दक्षिणेश्वर में नरेन्द्र, भवनाथ आदि भक्तों के संग में हैं।

ठाकुर गाना गा रहे हैं—

बोल रे श्रीदुर्गा नाम।
(ओ रे आमार आमार आमार मन रे)।
...
यदि बोलो छाड़ो-छाड़ो मा, आमि ना छाड़िबो।
बाजन नूपुर होये मा तोर चरणे बाजिबो॥*[1]

दीदी जी (श्रीमती ईश्वरदेवी गुप्ता) कहा करतीं कि ठाकुर-वाणी का अक्षर-अक्षर है 'नूपुर'। इन 'नूपुरों' की झंकार से सब पाठक ठाकुर का शुद्ध प्यार पाएँ, इस अभिलाषा से ही उन्होंने अपने गुरु महाराज के 101वें जन्म-दिन पर सन् 1994 में स्मारिका-रूप में वार्षिक पत्रिका का प्रारम्भ 'नूपुर' नाम से किया था। उनका विश्वास था कि ठाकुर-वाणी के पठन-श्रवण-मनन और पालन से व्यक्ति स्वयं बन जाता है माँ के चरणों का 'नूपुर'।

---

[1] [ओ मेरे मन, तू दुर्गा-दुर्गा नाम बोल।... यदि कहो छोड़, छोड़, किन्तु मैं नहीं छोड़ूँगा। हे माँ, मैं तेरे चरणों का नूपुर बनकर बजूँगा।]

— कथामृत भाग II, सप्तदश खण्ड, द्वितीय परिच्छेद, 19-09-1884

विषय-सूची

	निवेदन	...	7
1.	Sri Ramakrishna and Vivekachudamani	...	11
2.	Reminiscences of Swami Brahmananda	...	14
3.	मास्टर महाशय के सदुपदेश	...	17
4.	Letters of Swami Nityatmananda	...	33
5.	कैम्पाश्रम में जगबन्धु महाराज	...	41
6.	स्वामी विवेकानन्द और सेवा	...	79
7.	माँ सारदा	...	89
8.	नूपुर तेरे चरणों का	...	93
9.	Activities of Sri Ma Trust	...	97

•

श्री 'म' ट्रस्ट

श्री श्रीरामकृष्ण कथामृत के प्रणेता श्री महेन्द्रनाथ गुप्त, बाद में मास्टर महाशय वा श्री 'म' (M.) के नाम से विख्यात हुए।

इन्हीं श्री म के अन्तरंग शिष्य थे स्वामी नित्यात्मानन्द जो 'श्री म दर्शन' ग्रन्थमाला के प्रणेता हैं।और वे ही हैं श्रीरामकृष्ण श्री म प्रकाशन ट्रस्ट (श्री म ट्रस्ट) के संस्थापक।

अपने जीवन में ठाकुर-वाणी का पालन व प्रचार-प्रसार करने वाले श्री 'म' के पास दीर्घकाल तक रहकर स्वामी नित्यात्मानन्द जी को विश्वास हो गया था कि जगत् के सकल काम-काज करते हुए भी मन से ईश्वर के साथ रहा जा सकता है और यही है शाश्वत शान्ति तथा परमानन्द का सहज, सरल उपाय।परमानन्द की प्राप्ति ही है मनुष्य-जीवन का एकमात्र उद्देश्य।इसी परमानन्द की प्राप्ति जन-जन को हो, इस उद्देश्य से स्वामी नित्यात्मानन्द जी महाराज ने अपने प्रथम गुरु श्री 'म' की स्मृति में 12 दिसम्बर सन् 1967 को श्री 'म' ट्रस्ट (श्रीरामकृष्ण श्री 'म' प्रकाशन ट्रस्ट) को रोहतक में रजिस्टर करा दिया था जो बाद में चण्डीगढ़ ले आया गया।तब से लेकर आज तक ठाकुर-कृपा से ठाकुर-वाणी के प्रचार-प्रसार का कार्य निरन्तर चल रहा है और आगे बढ़ रहा है।

श्री 'म' ट्रस्ट से जुड़े ठाकुर-भक्तों/सेवकों पर ठाकुर इसी तरह अपना शुद्ध प्यार बनाए रखें, यही उनके श्री चरणों में प्रार्थना है।

— अध्यक्ष, श्री 'म' ट्रस्ट

निवेदन

विषम परिस्थितियाँ, आपदाएँ-विपदाएँ व्यक्ति के लिए दु:सह होती ही हैं। ये घर-परिवार-समाज-जन-धन की हानि कर उसे विनाश के गर्त्त में गिरा देती हैं। पर यही कठिन समय व्यक्ति को कुछ सिखा भी जाता है।

वर्तमान में कोविड-19 जैसी भयङ्कर महामारी देखेते-ही-देखते असंख्य जीवन लील गई, परिवार के परिवार तबाह हो गए, नौकरी-व्यापार-रोज़गार नष्ट हो गए। कहीं रोगी के इलाज़ के लिए पैसे नहीं है, कहीं हाथ में पैसा लिए घूम रहे हैं, फिर भी अपनों को बचा नहीं पा रहे, तो कहीं उनकी देखभाल के लिए अपने ही नहीं रहे। आबाल-वृद्ध, सभी का जीवन खतरे में है।

पर ऐसे में दूसरी ओर मानवता जगी है, कुछेक स्वार्थी एवं अवसरवादी जनों को छोड़ मनुष्य में प्राय: परस्परता का भाव, सेवा-भाव जगा है। अपने-पराये का भेद भुला कर, सब भूलकर स्वयं के जीवन को जोखिम में डालकर भी एक-दूसरे की सेवा-सहायतार्थ हाथ उठे हैं। कोविड-19 का संकट ऐसा तार सिद्ध हुआ है जिसने सबको जोड़ा है। अपनी-अपनी सीमाओं में, समुदायों में, वर्गों में, सम्प्रदायों में बँटा व्यक्ति सब भुलाकर परस्परता के महत्त्व को समझ रहा है।

सामान्य, सुख के समय में धार्मिक ग्रन्थों, धर्मोपदेशकों की बात लोग प्राय: सुनते नहीं हैं, सुन लें तो उस पर आचरण नहीं करते हैं। परन्तु मनुष्य के दुर्दिनों में इस कोविड-महामारी ने उसे स्पष्ट रूप से बता दिया है, सिखा दिया है कि धन, जन, सम्पत्ति, मोटर-गाड़ियाँ, बंगले, बड़ी-बड़ी उपाधियाँ, मानव-निर्मित समस्त सुख क्षणभंगुर हैं, दो दिन के हैं, आज हैं, कल नहीं। समस्त बन्धु-बान्धव उसके अपने नहीं, यह देह जो उसे इतनी प्यारी है, वह भी उसकी अपनी नहीं, उस पर भी उसका जोर नहीं, सब

अनित्य है, अस्थायी है, असत्य है। वह जान गया है कि ईश्वर ही एकमात्र सत्य वस्तु है।

उसने यह भी देखा है कि संकट के समय आर्त्तभाव से ईश्वर को पुकारने पर वे स्वयं आकर उसे संकट से उबारते भी हैं। किसी-किसी भक्त को इसका अनुभव हुआ भी है। वर्ष 2020 के नूपुर के 'निवेदन' में एक भक्त के साथ घटी घटना का वर्णन हमने दिया भी है कि किस प्रकार माँ सारदा कोरोना-ग्रस्त एक भक्त की आन्तरिक और निरन्तर पुकार को सुन भक्त को जीवन-रक्षा प्रदान करती हैं।

वर्तमान का यह संकट तो समाप्त हो जाएगा, होना ही है। परन्तु ईश्वर से प्रार्थना है कि ऐसे समय में मानव के भीतर उदित सुसंस्कार यूँ ही बने रहें, ईश्वर के प्रति उसका विश्वास और भी दृढ़ हो!

प्रति वर्ष की भाँति इस वर्ष के नूपुर में भी छपी ठाकुर श्रीरामकृष्ण, माँ सारदा, स्वामीजी, श्री म तथा स्वामी नित्यात्मानन्द जी की वाणी, उनके विचार प्रत्येक पाठक को अवसाद से दूर करते हुए उसके मन में नवीन आशा का संचार करे। वह वाणी उसके हृदय में उतर जाए, उसे वह नित्यप्रति के जीवन में, व्यवहार में लाकर निज जीवन को धन्य बनावे और विशेषत: इस संकट-काल में उसका मनोबल बनाए रखे!

जय श्रीरामकृष्ण!

- डॉ० निर्मल मित्तल
सम्पादक

ठाकुर श्रीरामकृष्ण

श्री म

स्वामी नित्यात्मानन्द

श्रीमती ईश्वर देवी गुप्ता

श्रीमती ईश्वरदेवी गुप्ता अपने पास आने वाले भक्तों से कहा करतीं—

देखो! ठाकुर तुम्हारे कितने समीप हैं! तुम आपस में एक-दूसरे का हाथ पकड़ो, फिर अन्तिम जन का हाथ पकड़ते हुए कहतीं— देखो, तुम सब का हाथ है मेरे हाथ में, मेरा हाथ है स्वामी नित्यात्मानन्द के हाथ में, उनका हाथ है श्री म के हाथ में और श्री म ने पकड़ा है ठाकुर को; तो तुम सब हो ना ठाकुर के पास! कहाँ दूर हैं ठाकुर तुमसे? तुम सब हो ठाकुर के अपने बालक! उनके निजी जन! एक हाथ से ठाकुर को पकड़े रखो कस कर! फिर तुम संसार में गिरोगे नहीं।

श्रीमती ईश्वरदेवी गुप्ता की यह आश्वस्त वाणी उनके साथ जुड़े ठाकुर-भक्तों का आज भी मंगल कर रही है। उन्हीं की प्रेरणा से उनके साथ जुड़े ठाकुर-भक्त श्री म ट्रस्ट के माध्यम से आज भी ठाकुर-सेवा में लगे हैं।

•

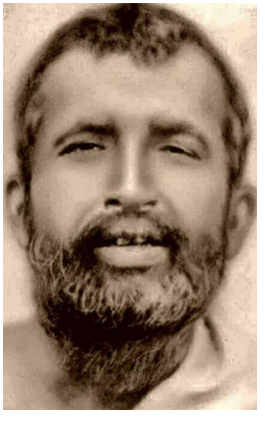

श्रीरामकृष्ण परमहंस
(1836-1886)

- जन्म : 18 फरवरी, सन् 1836 ईसवी।
- स्थान : कामारपुकुर (हुगली जिले का अन्तर्वर्ती ग्राम)
- माता-पिता : श्रीमती चन्द्रमणि देवी और श्री क्षुदिराम चट्टोपाध्याय (चटर्जी)।
- भाई-बहन : दो बड़े भाई, दो बहनें।
- शिक्षा : कुछ दिन पाठशाला में गए। प्रारम्भ से ही अर्थकरी विद्या से विकर्षण। स्कूल से भागे रहते। लेख सुन्दर। अद्भुत स्मरण-शक्ति।
- विवाह : 22-23 वर्ष की आयु में सन् 1859 में 6-7 वर्षीय सारदा मणि के साथ।
- दक्षिणेश्वर-वास : बड़े भाई रामकुमार की मृत्यु के बाद दक्षिणेश्वर में पुजारी। बाद में पूजा-कर्म से निवृत्त होकर वहीं दक्षिणेश्वर में स्वतन्त्र वास— प्राय: अन्त समय तक।
- महासमाधि : 16 अगस्त, 1886 ईसवी।

●

Sri Ramakrishna and Vivekachudamani

[Sri Ramakrishna says that God-realization is the aim of human life. However, there are impediments like 'lust and greed' in this path. God-realization is possible by God's grace while following the path shown by Sri Ramakrishna that helps us to remove the veil of ignorance caused by 'lust and greed.' Sri Ramakrishna explains it as below:]

"God has hidden everything with His maya. He doesn't let you understand anything. 'Lust and greed' constitute maya. Only he who removes the veil of maya can behold His vision. I was explaining to somebody that God is truly amazing, when He suddenly showed me a pond in the countryside (Kamarpukur). A person pushed aside the green scum covering the surface and drank the water below. The water was as clear as crystal. This showed that Sat-chit-ananda is covered by the maya of 'green scum'. Only he who can remove the scum can have His vision."

—Sri Sri Ramakrishna Kathamrita Vol. 3, 21 July, 1883

We must always be conscious of God-consciousness and aware of our inherent divine nature. If we do not, there's every possibility of our mind being assailed by temptations and distractions.

This simile is also explained by Acharya Shankar in a verse in Vivekachudamani -324 :

यथापकृष्टं शैवालं क्षणमात्रं न तिष्ठति।
आवृणोति तथा माया प्राज्ञं वापि पराङ्मुखम्॥

As sedge, even if removed, does not stay away for a moment, but covers the water again, so Maya or Nescience also covers even a wise man, if he is averse to meditation on the Self.

[The sedge has to be prevented from closing in by means of a bamboo or some other thing. Meditation also is necessary to keep nescience away.]

It is pointed out that even a wise man cannot escape the clutches of Mahamaya if he is not alert.

Further explaining this Sri Ramakrishna says :
Sri Ramakrishna: "God talked to me. It's not only that you can see God— you can talk with Him. Under the banyan tree, I saw Him coming up from the Ganges. O, how much we laughed after that! He twisted my fingers playfully. And then He talked. He actually talked to me.

"I wept for three days, and He showed me what the Vedas, the Puranas, the Tantras, and other holy books contain. He showed it all to me.

"One day He also revealed to me what the maya of Mahamaya is. A small light in the room gradually became bigger and bigger until it spread out over the whole world and enveloped it.

"And then He showed me a big lake totally covered with sedge. When a breeze parted it a little, I saw water. But in no time at all, the sedge came dancing from all sides and again covered it completely. I was shown that the water was Sat-chit-ananda and the sedge was maya. Because of maya, you can't see Sat-chit-ananda. But sometimes, though you can get a momentary glimpse, maya again covers it up.

—Sri Sri Ramakrishna Kathamrita Vol. 4, 9 August, 1885

— Nitin Nanda

Reminiscences of Swami Brahmananda

—M., the Apostle & the Evangelist, Vol. 7, Chapter 11

[Kedarnath Banerjee, an old man from Baruipur, has come to meet Sri M. He practices law. He comes to see M. from time to time. He is initiated by Swami Brahmananda. He feels a sort of vacuum in his heart after the departure of Swami Brahmananda.

Kedar narrates some reminiscences of Swami Brahmananda which are also explained further by Sri M.]

1. Once when "Maharaj" was in the Math I went to him one day and said to him that sometime I felt performing purushcharan (a religious ritual) ceremony. He was pacing the verandah and it appeared that he got worried on hearing me. After a while he said, "It is enough if you keep the mind on Thakur. Thakur said: You will not have to do much. It will be enough to keep your mind on me."

2. Swami Vijnanananda (Hari Prasanna Maharaj) used to live alone. Maharaj loved him so much because of it.

3. One day I was sitting when Maharaj suddenly said, "A bhakta can also attain jnana." He said just this and kept quiet. He was smoking the hukka (Indian pipe). After some time he again said, 'A bhakta, even after attaining the knowledge of Advaita, lives on with the 'I' of a devotee for enjoying His leela."

4. One day he said, "As long as this body endures one should repeat His name. This body is not going to last forever."

5. Maharaj used to say, "So and so wants a little name and fame. Well, should we not appoint him the Vice President?"
6. How much love the intimate disciples of Thakur have for each other. One can't see such a thing anywhere else. When one went to the Math, Baburam Maharaj would say, "The bridegroom is living in that locality, go and have his darshan." He would say this referring to Maharaj. What a deep love!
7. Maharaj would laugh and say, "People deal in so many commodities. Well, why don't they deal in Thakur? Please tell me this."
8. Maharaj would always exhort us to tell the truth.

— Collection by Nitin Nanda

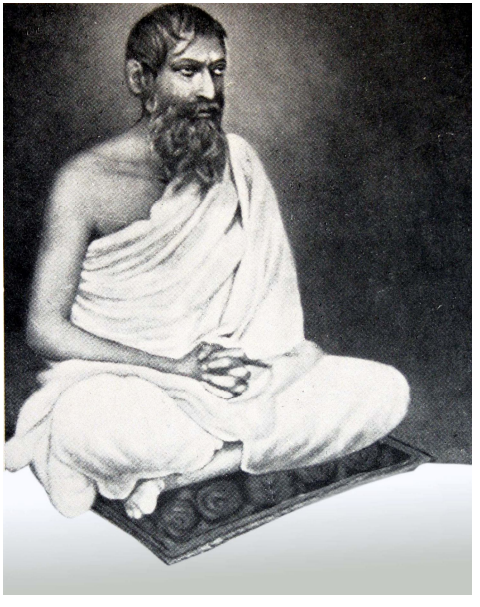

श्री म (मास्टर महाशय)
(1854-19932)

- पूरा नाम : श्री महेन्द्रनाथ गुप्त
- जन्म : शुक्रवार, नाग पञ्चमी, 31वाँ आषाढ़, 14 जुलाई, 1854 ईसवी।
- स्थान : कोलकता में शिमुलिया मोहल्ले की शिवनारायण दास लेन।
- माता-पिता : श्रीमती स्वर्णमयी देवी और श्री मधुसूदन गुप्त— वैद्य ब्राह्मण वंश।
- भाई-बहन : 4 भाइयों और 4 बहनों में तीसरी सन्तान।
- विवाह : सन् 1873 में श्रीमती निकुञ्ज देवी के साथ।
- शिक्षा :
  - सन् 1867 में आठवीं कक्षा से डायरी लेखन।
  - हेयर स्कूल से दसवीं की परीक्षा में द्वितीय स्थान।
  - गणित का एक पेपर न दे सकने पर भी एफ.ए. में 5वाँ स्थान।
  - सन् 1875 में प्रेजिडैंसी कॉलेज से बी.ए. में तृतीय स्थान।
  - पूर्वी और पश्चिमी विद्याओं में निपुणता।
- गुरु : श्रीरामकृष्ण परमहंस
- गुरु-लाभ : 26 फरवरी, सन् 1882 को रविवार के दिन।
- महासमाधि : शनिवार, 4 जून, सन् 1932 ईसवी को प्रातः 5.30 बजे।

●

मास्टर महाशय के सदुपदेश

- श्री 'म' दर्शन भाग-3 से

साधुओं का संग करने पर उनके जीवन का प्रभाव आ पड़ता है। इच्छा न होने पर भी जैसे कोई जोर करके ध्यान-जप करवा लेता है। सत्संग की ऐसी महिमा! क्रमश: लोग उनके जीवन का अनुसरण करते रहते हैं।

दुर्गा-पूजा के कुछ दिन मठ में रहना पूर्व जन्म की तपस्या रहने पर ही होता है। यह पूजा तो किसी कामना के लिए पूजा नहीं है। यह है निष्काम पूजा। ऐसी निष्काम पूजा मठ के साधु ही केवल कर सकते हैं। औरों के लिए यह काज है बड़ा ही कठिन।

ईश्वर साकार या निराकार— यह लेकर सिर न घुमाना। वरन् बोलो, हे ईश्वर! तुम जिस रूप में भी हो, मुझे दर्शन दो। यह कहकर प्रार्थना करने पर वे दर्शन देकर समझा देंगे कि उनका क्या रूप है। विजयकृष्ण गोस्वामी को यही बात कही थी।

जागो माँ कुलकुण्डलिनी— यह गाना ही एक महामन्त्र है। यदि कोई व्याकुल होकर निर्जन में गाए तो उनकी कृपा से दर्शन हो जाता है।

ज्ञानी माने जो संसार का कुछ भी नहीं चाहते, केवल मात्र ईश्वर को चाहते हैं। ईश्वर बिना कुछ लेंगे नहीं। जैसे चातक— सात समुद्र, तेरह नदी ही जल से भरपूर हैं; किन्तु लेगा नहीं। एक बून्द भी लेगा नहीं। जैसे नचिकेता।

ज्ञान, योग, व्रत-नियम, वेदाध्ययन, तपस्या द्वारा भी जो प्राप्त नहीं कर सकते, सत्संग से वह प्राप्त हो जाता है। जभी सत्संग बहुत दरकार। सत्संग में ईश्वर से प्यार होता है। वह होने से ही हुआ।

— 5.10.1922

नाना विषयों में मन बिखरा हुआ है। उसको एक स्थान पर लाना होगा। साधुसंग इसका सहायक है। साधु का एक स्थान है— ईश्वर; जैसे दाँत की व्यथा। दिखाई देता है कि नाना काज करता है, किन्तु भीतर में हैं भगवान्।

वे हैं सदा मंगलमय, सर्वमंगलमय, सब के लिए मंगलमय। वे सब भले के लिए ही करते हैं। देखने में लगता है खराब। माँ बेटे को मारती है। बाहर से दिखाई देती है निष्ठुरता। माँ के हृदय में जाकर देखो। बेटे के कल्याण के लिए सर्वदा माँ को चिन्ता है। झूठ बोलना सीख गया है, तभी मारती है। नहीं तो पीछे बेटे का अकल्याण होगा। अग्र, पश्चात् देखकर ही ऋषियों ने कही है यह बात— ईश्वर सर्वमंगलमय।

ईश्वर के दो डिपार्टमेंट हैं। एक तो विद्यामाया का, एक अविद्यामाया का। अविद्यामाया में जो हैं मुग्ध, वे ही पशु की भान्ति जीवन यापन करते हैं। आहार, विहार, मैथुन और भय— पशु के यही चार काज हैं। विद्यामाया जिनका आश्रय है, वे उनको पाने की चेष्टा करते हैं। सत्संग वे ही खोजते हैं।

वे हैं सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, कर्त्ता, प्रभु और फिर स्नेहमयी माता, पिता, बन्धु, सखा। सुख, दुःख, सुविधा, असुविधा— सब ही हैं उनका दान।

श्री कृष्ण हैं पाण्डव-सखा। किन्तु पाण्डवों को कितनी विपद्? सम्पद् में, विपद् में सब समय ही उन्हें पुकारना उचित। उन्हें आश्रय करने से वे सब ठीक कर देते हैं।

गृहियों को उचित है, हजार काज के भीतर भी समय निकाल लेना, उन्हें पुकारने का। अन्य सब वे ठीक कर देंगे। ठाकुर बोलते, बारह आना मन ईश्वर में और चार आना मन संसार में रखकर काज करना चाहिए। इस चार आना मन के काज से गृहस्थ में उथल-पुथल हो जाती है। स्थिर चित्त से चार आना मन का काज क्या कम बात? और कहा करते, बाप, माँ, स्त्री, पुत्र सब को ही बाहर से दिखाओगे कि वे कितने अपने हैं, किन्तु भीतर में जानोगे कि तुम भी उनके कोई नहीं हो, वे भी तुम्हारे कोई नहीं हैं। ईश्वर ही हैं सब के अपने।

ठाकुर किसी के ऊपर जोर नहीं देते थे— वह करना होगा, यह करना होगा, कह कर। कहा करते, ईश्वर की इच्छा से जो जहाँ भी हो, जो कुछ भी कर रहा हो, वही करता रहे। किन्तु मन-मन में ईश्वर को पुकारे।

ठाकुर ही हैं स्वयं आदर्श गृही और फिर आदर्श संन्यासी भी। माँ, भाई, स्त्री, कुटुम्ब, इनके संग रहा करते, किन्तु कोई भी आसक्ति नहीं। सब करके देखा है, किन्तु मन एक ही भाव में है। सर्वदा बोलते, माँ-माँ। ईश्वर के बिना कुछ भी जानते नहीं।

उनके दर्शन हो जाने पर सब संशय चले जाते हैं। दर्शन होते हैं उनकी कृपा से। कृपा होती है व्याकुल होने से; और व्याकुलता होती है सत्संग से। तभी साधुसंग है मूल। इसके बिना उपाय नहीं।

कोई-कोई कहते हैं, ईश्वर के सम्बन्ध में कुछ नूतन बातें कहो, original research; यह तो सब पुराना हो गया है। ऐसे लोग केवल कथा सुनना चाहते हैं, और वाह-वाह करते हैं, 'शाबाश वक्ता' कह कर। काम कुछ भी नहीं करते। ईश्वर हैं चिर नूतन। उनका दर्शन करो पहले। तब समझोगे, वे कैसे हैं। उनकी कथा कभी भी पुरानी नहीं होती। एक ही कथा, किन्तु चिर-नूतन। साधुसंग करो, पथ पर चढ़ो पहले। ऋषियों के पास कोई कुछ भी जिज्ञासा करने जाता था तो कहते, पहले तपस्या करके आओ, फिर जिज्ञासा करो। नहीं तो क्या बोलना था, बोल दिया क्या, इसका भी निश्चय नहीं। एक छटाँक बुद्धि से कैसे अनन्त को बूझे? एक सेर लोटे में दस सेर दूध कभी नहीं समाता।

आज भी दक्षिणेश्वर में ठाकुर को देखा जा सकता है। यदि कोई पुस्तक पढ़ कर, वे कब कहाँ बैठे थे, कहाँ क्या किया था, यह सब जान कर निज को उसी स्थान पर, उसी समय, उसी संग में मैं हूँ, ऐसा सोचे, और कल्पना की छवि अंकित करे तो आज भी उनका संग हो जाता है। उनको देखा जा सकता है। आज जो कल्पना है वही कल वास्तव है। कल्पना घनीभूत होने से दर्शन होता है।

'एतद्वै तत्' (कठोपनिषद् 2:3:1)— सब ही आत्मा। किसी-किसी भाष्यकार ने 'तत्' को आत्मा अर्थ में लिया है। ठाकुर ने इसका और भी सहज अर्थ किया है। वे कहते हैं, यह 'तत्' ही ईश्वर है— मेरी माँ। वेद

में जिसको ब्रह्म बोला है, आत्मा बोला है, मैं उसको ही माँ बोलता हूँ। जब सृष्टि, स्थिति, प्रलय करती हैं, तब बोलता हूँ 'माँ, 'आद्याशक्ति, 'काली'। स्वरूप में रहते समय बोलता हूँ ब्रह्म। जैसे साँप कुण्डली मारे भी रहता है और फिर हिलता-डुलता और चलता है। शक्ति-ब्रह्म अभेद। आत्मा, ब्रह्म, ईश्वर, काली— सब ही एक।

मरुभूमि में जैसे मरूद्यान है, वैसे ही संसार में मठ, आश्रम, साधुसंग हैं। त्रिताप-दग्ध जीव वहाँ जाकर शान्ति-लाभ करता है। यही जो (बेलुड़) मठ हुआ है, यह भी उनकी ही इच्छा से हुआ है।

श्वसुर घर बनाना होगा, सब को ही। बाप के घर कन्या का सदा रहना चलता नहीं। एक जन्म में हो या दो जन्म में हो या बहुजन्मों में ही हो, श्वसुर घर बनाना ही होगा। सकल जीव ही सर्वस्व त्याग करके उनके लिए व्याकुल होंगे, एक दिन। सत्त्व, रज, तम इन्हीं गुणों के भेद से दो दिन आगे, पीछे; किन्तु व्याकुल होना होगा ईश्वर के लिए।

विजयकृष्ण गोस्वामी ने एक दिन कीर्तन किया। समाप्त होने पर ठाकुर बोले, 'वही काज हुआ।' जितने क्षण उनका नाम होता है, उनका चिन्तन होता है, उतने क्षण ही real life (वास्तविक जीवन) है।

— 7.10.1922

मनुष्य के भीतर चार भाग हैं— स्थूल, सूक्ष्म, कारण और महाकारण। स्थूल बाहर का जगत् लिए रहता है; सूक्ष्म इन्द्रिय, मन लेकर रहता है। कारण शरीर का विषय आद्याशक्ति का चिन्तन है। महाकारण में पहुँचने पर तब सब एकाकार। तब स्थूल, सूक्ष्म, कारण— इनका अभाव हो जाता है। मन का तब नाश हो जाता है। मन माने इन्द्रियों के वशीभूत मन, बाह्य पदार्थ द्वारा जिसकी सृष्टि है। इस अवस्था का नाम ही है ब्रह्मानन्द।

राम, कृष्ण, बुद्ध, क्राइस्ट, चैतन्य, रामकृष्ण— ईश्वर के सम्बन्ध में, परम सत्य के सम्बन्ध में, इनकी वाणी लेनी चाहिए। इनके निकट God revealed हुए हैं, ईश्वर ने दर्शन दिए हैं। इनकी वाणी है वेद-वाणी। ठाकुर ने माँ से कहा, 'माँ, पाँच जने पाँच प्रकार से बोलते हैं। उनमें से

किसी की भी बात मैं नहीं लूँगा। तुम जो कहोगी, केवल वही लूँगा।' ऋषियों के पास वेद इसी प्रकार revealed (प्रत्यक्ष) होता था।

व्याकुलता कैसी होती है— चुम्बक के संग में जैसे सूई। चुम्बक के संग-संग सूई घूमती है। जो हैं ईश्वर-जन्य व्याकुल, उनकी यही दशा होती है।

गृहियों को साधुसंग बड़ा ही दरकार। साधुसंग ही एकमात्र औषध। और कभी-कभी निर्जनवास करना भी उचित। एक दिन, दो दिन, तीन दिन, किंवा अधिक, जिसको जैसी सुविधा हो। वही है partial (आंशिक) संन्यास। इस बात को तो ठाकुर बहुत ही कहते। निर्जन में जाने से अपने आप ही मन में चिन्ता आ जाती है, कर क्या रहा हूँ? दिन जा रहे हैं। 'मरण' मुँह खोले सम्मुख बैठा है। मेंढक के मुख में मक्खी, मेंढक साँप के मुख में, और व्याध के तीर में साँप। यही precarious (विपद्जनक) अवस्था है। निर्जन में जाने पर यह बात याद आती है। संग-संग मनुष्य-जीवन का उद्देश्य, भगवान्-दर्शन, यह महामन्त्र भी हृदय में जाग्रत होता है।

ठाकुर कहते थे, पुकुर का जल काही (जल-पौधे) से ढका हुआ है। एक ढेला मारा, उससे तनिक-सा जल दिखाई दिया। और फिर नाचते-नाचते काही ने आकर सब ढक लिया। वैसे ही हमारा मन, आँखों के सामने अविद्या का परदा पड़ा है, इस कारण देखने नहीं देता। इसे कभी अल्प हटा लेने पर कुछ दिखाई देता है, तनिक उद्दीपन होता है, और फिर ढक जाता है। सर्वदा साधुसंग करने से ऐसा नहीं होता। जभी तो साधुसंग है बड़ा दरकार। साधुसंग से सर्वदा उद्दीपन होता है।

और एक बार नरेन पश्चिम के किसी स्टेशन पर (राजस्थान में) लेटा हुआ था, सिर तक चादर ओढ़े। आहार आदि कुछ भी नहीं हुआ था। एक हलवाई पूरी, दमआलू आदि आहार लेकर उपस्थित हुआ। और संग ही सुराही में ठण्डा जल और चिलम बनाकर ले आया। नरेन को खाने के लिए कहा, किन्तु उसने लेना नहीं चाहा। हलवाई तब बोला, श्रीरामचन्द्र जी ने मुझे साधु के लिए यह सब कुछ लेकर जाने के लिए स्वप्न में कहा है। वह हलवाई खा-पीकर दुकान में विश्राम कर रहा था। श्रीरामचन्द्र जी ने स्वप्न

में कई बार कहा, साधु भूखा स्टेशन पर लेटा हुआ है। तुम ये सब चीजें ले जाकर उसे खिलाओ। यह सुनकर नरेन ने ग्रहण किया।

साधुओं के शरीर की खूब यत्न से रक्षा करनी चाहिए। मिट्टी का सांचा सुनार अति यत्न से रखते हैं, जब तक कि उसमें सोने की ढलाई न हो। सोने की ढलाई हो जाने पर फिर और उसका प्रयोजन नहीं; तब फैंक देते हैं। वैसे ही साधु का शरीर। जब तक इस शरीर में भगवान्-दर्शन नहीं होता, तब तक अति यत्न से रक्षा करनी चाहिए। जभी इतने सावधान!

साधुओं की सेवा करना उचित सामर्थ्य अनुसार; असुख के समय ही हो या फिर स्वस्थ रहते ही हो। भाग्य में हो, पूर्व जन्म में पुण्य किया हुआ हो तभी उनकी सेवा की जाती है। नचेत् उस ओर मन ही नहीं जाएगा। साधुसेवा करने का अर्थ ही है भगवान् की सेवा। नारायण-ज्ञान में सेवा करना। इसका फल मोक्षलाभ है। यही है सेवा का श्रेष्ठ फल। दया से सेवा करना, अर्थलाभ किंवा सुनाम के लिए करना अथवा स्नेह से आत्मीय स्वजन की सेवा करना— विभिन्न भाव से सेवा का विभिन्न फल होता है। आर्त्त, निराश्रयों में भी उनका विशेष प्रकाश है। भगवत्-बुद्धि से इनकी सेवा से भी उत्तम फल होता है। जब तक उन्होंने द्वैतभाव में रखा है, अपनी देह के भले-मन्दे का बोध है, तब तक नारायण-ज्ञान में सेवा करनी चाहिए।

— 11.10.1922

अभ्यास करते-करते होता है। एक दिन में ही क्या मन स्थिर हो सकता है? वासनाएँ सर्वदा बुलाती रहती हैं। तब भी यदि कोई मन को स्थिर करना चाहता है तो उसका उपाय है। भगवान् ने जो बोला है, वह पालन करना चाहिए, अन्ततः चेष्टा करनी चाहिए। अभ्यास और वैराग्य द्वारा होता है। गीता में है— "अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते।" (गीता 6:35) अभ्यास करने से पहले चाहिए दृढ़ संकल्प— resolution, 'मैं करूँगा ही', इस प्रकार की प्रतिज्ञा। तब फिर सवेरे, दोपहर और शाम को बैठना चाहिए, ठीक समय पर। आज इस समय, कल उस समय करने से नहीं होगा। एक आदर्श स्थिर करके उसमें बिखरे हुए मन को धैर्य से समेट कर लगाना चाहिए। मन है चञ्चल, बालकवत्

भागना चाहता है। खूब यत्न के साथ बार-बार चेष्टा करके बिठाना चाहिए। इसे ही 'अभ्यास' कहते हैं। और वैराग्य माने सत्-असत् विचार। ईश्वर सत्य और सब अनित्य। देह जो इतनी प्रिय है, यह भी अनित्य— यह विचार करना चाहिये। कब देह चली जाएगी, यह निश्चय नहीं है।

बेटे ने माँ को पकड़ लिया। पतंग खरीदने के लिए पैसे दो। खाता नहीं, रोता है और अछाड़-पछाड़ खाता है। माँ आती है, किन्तु पैसे देने का नाम तक भी नहीं लेती। उल्टा धम-धम करके पीठ पर कई मुक्के धर देती है। क्यों? माँ जानती है कि ना, इससे पुत्र का अनिष्ट होगा। घर की छत टूटी हुई है। पतंग उड़ाने जाएगा तो गिरेगा और हाथ पाँव टूटेंगे।

जिससे हमारा मंगल होगा, ईश्वर वही करते हैं। उनके कार्यों की criticism (समालोचना) करना उचित नहीं। वैसा करना है एकदम foolishness (मूर्खता)। वेद कहता है, ईश्वर सर्वमंगलमय।

बाह्याडम्बर की आवश्यकता क्या? शरीर-रक्षा करके धर्म करना चाहिये। जितना सहे, उतना करे। उद्देश्य है कैसे उनमें मन रहे, कैसे भक्ति-लाभ हो। 'मध्यपन्था' लेना। गृहियों को शास्त्रविधि मानकर चलना उचित है। अवतार आकर सीधा पथ दिखा देते हैं, नूतन पथ, जो कालोपयोगी होता है। वे हैं शास्त्रविधि के पार। अवतार का आचरण और उनके महावाक्य, ये सब ही शास्त्र होते हैं। ये सब पुरातन शास्त्र के नूतन भाष्य हैं। वे न आएँ तो शास्त्र का मर्म आवृत्त रहता है। भक्तों के ऊपर कोई भी जबरदस्ती नहीं थी ठाकुर की। बोलते, 'रये शये करो,'— जितना सहन हो, उतना करो, किन्तु लगातार। सब कामों का ही उद्देश्य है, ज्ञान-भक्ति लाभ करना, उनमें मन रखना। यह जिसके द्वारा हो, वही करना।

— 21.10.1922

जगत् के कल्याण-जन्य योगी, ऋषि, महापुरुष गण— ये सब बातें अति स्पष्ट करके कह गए हैं। .... उपाय बता दिया मुक्त होने का— निष्काम होकर करो। निष्काम कर्म द्वारा प्रवृत्ति भी क्षय होगी अथच कर्मफल से बद्ध नहीं होगा। अर्जुन को श्रीकृष्ण ने यही संकेत दिया था। निष्काम कर्म करने से मिथ्या अहंकार का नाश हो जाता है। फिर चित्त

शुद्ध होता है। शुद्ध चित्त में उनकी छाप पड़ती है। यह होने पर ही मुक्ति है— फिर और जन्म-मरण के दु:ख में पडऩा नहीं पड़ता।

कर्म प्रकृति में हो तो छोडऩे का उपाय कहाँ? हम ही क्या छोड़ सके हैं? वैसी अवस्था तो खूब अच्छी। वह (सर्वत्याग की अवस्था) होती ही कहाँ है? तो भी उनकी कृपा होने पर होती है। (बड़े अमूल्य के प्रति) शास्त्र पढ़ोगे, उसे interpret (व्याख्या) करेगा कौन? असार भाग छोड़कर केवल गुरु ही सार-सार बोल सकते हैं। गुरु माने ईश्वर, अवतार। सब तो ठीक नहीं होता, रिपोर्ट करते समय भूल हो जाती है, और फिर interpolation (प्रक्षिप्त) भी है। जभी गुरुवाक्य-विश्वास है एकमात्र पथ।

— 15.9.1923

भगवान की दृष्टि समान। शत्रु-मित्र भेद नहीं इसमें। सूर्य सर्वत्र ही है, किन्तु किरण प्राप्ति के लिए घर के बाहर आना पड़ता है। वैसे ही ईश्वर की कृपा सब के ऊपर समान है। उसकी उपलब्धि करनी हो तो अल्प चेष्टा का प्रयोजन है। यह चेष्टा जो जन करते हैं, उन्हें ही भक्त कहते हैं, साधक कहते हैं। उनकी कृपा-लाभ होने पर ही शान्तिलाभ होता है। इससे ही सुख, इससे ही अनाविल [अखण्ड] आनन्द, सर्वशेषे अमृतत्व लाभ होता है।

आजकल तो उस प्रकार कोई भी वानप्रस्थ के लिए नहीं जाता। नाम सुनते ही भय होता है। पुत्र, कन्या, गृहस्थ के मोह में ज़डित हुए पड़े हैं। सुनते हैं, पहले बहुत लोग वानप्रस्थ के लिए जाते थे। (शुकलाल के प्रति) और फिर यह भी है— 'यदहरेव विरजेत् तदहरेव प्रव्रजेत्।' वैराग्य होते ही वन में चले जाना।

दीर्घकाल गृहस्थ में काजल की कोठरी में रहने के कारण मन में जो-जो दाग लग जाते हैं, उन सबको छुड़ाने की चेष्टा करता है इस आश्रम में। तत्पश्चात् मलमुक्त मन होते ही संन्यास ग्रहण करना। तब सर्वदा ईश्वर-चिन्तन में निमग्न रहेगा।

लोग जिसे सुख कहते हैं, वह है worldly (जागतिक) सुख, विषय-सुख। यह आता है, जाता है। ज्ञानी लोग इसे भी दु:ख कहते हैं। इसी दु:ख-सुख के पार और एक सुख है। यह बदलता नहीं, सर्वदा ही सुख, अविराम सुख। वह तो भगवान के पास है— उसका नाम ब्रह्मानन्द है। यही तो है मनुष्य का चरम लभ्य।

— 17.9.1923

ठाकुर साधुसंग करने के लिए कहा करते। बोलते, साधुगण हैं आग का कुण्ड और संसारी भीगी काठ। आग के निकट जाने से जल क्रमश: सूख जाता है। साधुसंग करने से मन की विषय-वासनाएँ सूख जाती हैं। भीगी काठ अथवा विषय वासना द्वारा कलुषित मन।

— 23.9.1923

अनेकों की प्रकृति कर्म की होती है। वे लोग altruistic work (परोपकार) करना पसन्द करते हैं। Flood relief (बाढ़ पीड़ितों की सेवा), हस्पताल, डिस्पैन्सरी आदि वे करते हैं। इसलिए क्या सर्वदा ही करेंगे? करते-करते ज्योंहि आशा मिट गई, त्योंहि दौड़।

भगवान-लाभ जीवन का आदर्श है, यह जिनका ठीक हो गया है, उनका सब कुछ अन्य प्रकार का होता है। वे minimum (कम से कम) भोग लेंगे। और maximum (अधिक से अधिक) समय, शक्ति और अर्थ आदर्श-लाभ पर व्यय करेंगे।

— 29.9.1923

मठ कैसा है? जैसे मरुभूमि में oasis (मरूद्यान)। मरुभूमि में रेत के ढेर धू-धू करते हैं, कहीं भी कुछ नहीं। पथिक प्यास और भूख से मृतप्राय। झट से उसे देखकर वहाँ पर गया। आहा! कैसा सुन्दर जल और चारों ओर सब्ज वृक्षसमूह! और फिर उस पर मीठे फल। जाकर तृप्त हुआ, प्राण बचा। मठ भी गृहस्थमरु के ज्वलन्त अग्निकुण्ड में 'ओएसिस' (मरूद्यान) की न्याईं है।

वासना, जैसे बर्तन में घी लुका रहता है। एक जन का घी का भाण्डा था। घी समाप्त हो गया। उसके किसी मित्र को थोड़ा घी चाहिए था। उसने घी माँगा। दूसरे ने कहा, नहीं है। पहले ने कहा, भाण्डा धूप में रख दो। झट कल-कल करके एक पाव घी बाहर आ गया। ऐसे ही है वासना, सूखकर छिपी रहती है। धूप लगने पर अर्थात् विषय के संग संयोग होने पर फिर बाहर आ जाती है। फिर भी तपस्या कर लेने से ज्ञानाग्नि उत्पन्न हो जाती है, उसमें सब भस्म हो जाता है।

गुरुवाक्य सुनना चाहिए। यही जो भवसमुद्र, इससे पार होना क्या स्वयंसाध्य है! उसके लिए ही गुरु (अवतार-ठाकुर)। गुरु ने पथ बोल दिया है। निज बुद्धि काफी नहीं।

सब ही गुरु की इच्छा से होता है— यह बात बोलना बहुत दूर की बात है। मन में अपनी इच्छा, और मुख से बोलना गुरु की इच्छा— इससे नहीं होता। जब तक मन-मुख एक नहीं होता— तब तक गुरु वाक्य पर विश्वास करके उसका पालन करने की चेष्टा करना उचित और प्रार्थना : प्रभो, मुझे गुरुवाक्य पालन करने की शक्ति दो।

जब वे स्वयं आते हैं तब इतना शास्त्र पढने की आवश्यकता नहीं होती। उनकी वाणी ही शास्त्र है। और वे आकर शास्त्र की व्याख्या करते हैं। युगोपयोगी नूतन light (आलोक) देते हैं। सिद्धान्त तो सब चिरकाल से एक ही है, किन्तु पथ का सन्धान बोल देते हैं— नूतन सहज पथ की सृष्टि करते हैं, समय के उपयोगी बनाकर। कुछ लोग उनकी सहज, सरल बातों पर विश्वास करके चलते हैं। उनकी मुक्ति हो जाती है। अपर जन भी इनको देखकर काफी आगे बढ़ जाते हैं।

— 4.10.1923

क्रोध वश में करना हो तो क्या करना, जानते हो? जप करना चाहिए क्रोध आने पर। और क्रोधी व्यक्ति को वश में करना हो तो गुप्त रूप से उसकी सेवा करनी चाहिए। उसका काम करके रख देना चाहिए।

— 12.10.1923

(प्रश्न) हुआ था कि क्या काम करूँ? ठाकुर सुनकर बोले, 'काम का तो अन्त नहीं। काम करना चित्त शुद्धि के लिए।' चित्तशुद्धि सामान्य काज से भी हो सकती है। तो फिर क्या प्रयोजन अधिक करने का? गुरु जो काज करने को कहें, वह करने से ही बन्धनमुक्त हो जाता है। काज का तो अन्त नहीं, एक के बाद और एक आ जाता है।

ऋषि जो कह गए हैं— ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ्य, वानप्रस्थ और संन्यास— ये सब क्या मिथ्या हो गए? वानप्रस्थ कैसा सुन्दर है! सब छोड़कर केवल वही काम करता है कि जिससे उनका लाभ हो। ऋषियों के वाक्य सब सत्य।

दक्षिणेश्वर का प्रति धूलिकण है पवित्र तथा जाग्रत और जीवन्त, श्री भगवान के चरण-स्पर्श से। यहाँ के वृक्ष, लता ही देव, ऋषि और भक्तगण हैं— जो श्री भगवान का लीलामृत दर्शन और उपभोग करने के लिए खड़े हैं। ये सब अवतार-लीला के साक्षी हैं।" जभी क्या श्री म यहाँ के वृक्षों को आलिंगन और प्रणाम करते हैं सर्वदा?

— 18.10.1923

तपस्या में भी सावधान, अहंकार न हो। नारायण ऋषि को अहंकार हुआ था तपस्या करके। उससे उर्वशी की सृष्टि की। खूब सावधान होकर तपस्या आदि करनी होती है। काम, क्रोध, अहंकार तपस्या के महाशत्रु हैं। पतन हो जाता है इनसे।

नीचे के मन की गति सर्वदा ही नीचे की ओर— विषय में रहती है, उसको ऊपर उठाना होगा। यह होता है उनकी कृपा से; और चेष्टा करनी चाहिए। एक दिन सबको ही ईश्वर के पास जाना होगा। वही जो है सबका घर, वही है मन का 'निज निकेतन'।

ठाकुर सर्वदा उसी भाव में रहते। कभी समाधि, कभी गान, कभी नृत्य, कभी कथावार्त्ता— सर्वदा माँ के संग में युक्त! एक मिनट के लिए भी उनसे अलग नहीं हुए। निशिदिन 'उसी' में मन।

उनके दो डिपार्टमैंट हैं, विद्या और अविद्या। विद्या जैसे जप, तप, साधुसंग, तीर्थ; ये सब। विद्या भी माया है, किन्तु उससे मनुष्य मुक्त होता

है। अविद्या से बन्धन होता है। संसारी व्यक्ति क्या फिर उसे पहचान पाते हैं?

हम अनेक लैक्चर सुनते थे केशव सेन प्रभृति के, ठाकुर के पास जाने के पूर्व। मन में होता, सुन्दर बोलते हैं। किन्तु उनके (ठाकुर के) पास जाकर देखा, ऐसी बातें तो कभी भी सुनीं नहीं— प्राणों में जैसे गुंथ जाती हैं! ऐसी आशा, ऐसा भरोसा उनकी बातों में। उनकी कथामृत स्निग्ध, शीतल और 'तप्तजीवन' ही है, निश्चय।

ठाकुर कहते, गोपी-प्रेम की एक बून्द भी कोई पा ले तो उथल-पुथल मच जाती है। आहा, कैसा प्यार भगवान के लिए! पति, पुत्र, गृह, पिता-माता, परिजन सर्वस्व त्याग कर दिया। ऐसी प्रिय जो निज देह, उसकी भी होश नहीं— स्त्री या पुरुष। मन उनमें मग्न। उनमें प्रेम होने से सब आप छूट जाता है, त्याग हो जाता है— जैसे झड़ पड़ते हैं पत्र, पुष्प। जोर करके त्याग नहीं, सहज, स्वाभाविक त्याग। प्रेमा भक्ति की मुकुटमणि है रास लीला।

— 22.11.1923

संसार विषयानन्द को लेकर ही है। इसका त्याग होने पर तब ईश्वर का आनन्द— ब्रह्मानन्द मिलता है। संसार के लोग जिसमें आनन्द पाते हैं वे ही सब वस्तुएँ नचिकेता को यम ने देनी चाहीं— स्त्री, पुत्र, राज्य, आयु। उन्होंने वे ली नहीं। वे मूल को अर्थात् सकल आनन्द की खान को माँगते हैं। खण्ड आनन्द नहीं लेंगे। अखण्ड सच्चिदानन्द चाहिए।

देह, मन, प्राण सब उनके चरणों में डाल देने पर तब होगा। अन्य सब देने पर भी नहीं होगा, मन सम्पूर्ण बिना दिए। बाहर से त्याग दरकार। किन्तु मन में त्याग बिना हुए उनकी प्राप्ति नहीं होती।

ठाकुर कहते सोना न गल जाने तक इस (शरीर) के लिए यत्न करना चाहिए। इसमें ही सोना गलाना होता है कि ना, इसी शरीर में।' सोना गलाना' माने भगवान-दर्शन। उसके लिए देह का यत्न करना। सोने के गल जाने पर स्वर्णकार मिट्टी का साँचा फेंक देते हैं। तब फिर प्रयोजन नहीं। भगवान दर्शन होता है केवल मनुष्य-शरीर में।

यदि पूछो, भगवान को पुकारने पर भी क्यों दु:ख-कष्ट होता है? उसका उत्तर है, ये (दु:ख) सब लोगों को चैतन्य कर देते हैं। तब आन्तरिक पुकारता है। ब्राह्म समाज में भी आज सुनकर आया हूँ, ये सब (दु:ख) मनुष्य को होशियार करते हैं। तो फिर इन सबको कैसे खराब कहा जाए?

— 25.1.1924

जिस बुद्धि से गाड़ी-घोड़ा, धन-दौलत, मान-सम्भ्रम लाभ होता है, उसे कहते हैं 'चिड़ा भेजा बुद्धि' अर्थात् विषय बुद्धि। उसके द्वारा संसार का लाभ हो सकता है, किन्तु भगवान-लाभ अति दूर। जिस बुद्धि से भगवान की ओर मन जाता है, उनका दर्शन होता है, वही बुद्धि 'खासा बुद्धि' है।

भक्त क्या कम? यदि world (जगत्) में real (सत्य) कुछ है, तो भक्त ही है। भक्त ही है अन्य रूप में भगवान! They are leading a real life. भक्तगण ही ठीक-ठीक जीवन यापन करते हैं।

— 2.2.1924

ठाकुर की इच्छा थी ईस्ट-वैस्ट का मिलन हो। वैस्ट इस देश की spirituality (आत्मविद्या) लेगा; और यह देश वैस्ट की साइन्स आदि, उस ओर की वह सब लेगा— आदान-प्रदान होगा। इस देश से ईश्वर में श्रद्धा, भक्ति, विश्वास उस देश में जाएगा और उनका जड़-विज्ञान इस देश में आएगा। उससे दोनों का ही मंगल है।

विरिंचि के देहत्याग पर उनकी भागिनी के शोक की बातें हो रही हैं। श्री म बोले, "इसी स्नेह द्वारा जगत् बाँध रखा है। उसका अभाव होने से ही शोक। शोक क्या कम?— जैसे दावानल। जलाकर मार डालता है जीव को। उनकी कृपा से इसी स्नेह को यदि कोई ईश्वर पर दे दे, तब तो बच गया। विष का फल अमृत होता है। किन्तु उनकी कृपा बिना तो होने वाला जो नहीं। कृपा कैसे होती है; ठाकुर बताते— क्रन्दन से, 'एक घटि' क्रन्दन से।

देह धारण करने पर मेघ उठेगा ही। दु:ख-कष्ट— ये तो रहेंगे ही। अवतारगण वही दिखा गए हैं। यदुवंश ध्वंस हो गया आँखों के सामने—

श्री कृष्ण खड़े हुए देख रहे हैं। पहले से ही जानते थे यह परिणाम, तभी ready (प्रस्तुत) थे।

"अपनी बात भी जानते हैं। अश्वत्थ वृक्ष तले बैठे हैं, पाँव झूल रहा है। हरिण के भ्रम में हठात् व्याध के तीर से पाँव बिद्ध हो गया। उससे ही देह गई।

— 10.2.1924

ऐसा खाद्य खाना जिससे शरीर की पुष्टि हो, स्वास्थ्य अच्छा रहे। और इसी शरीर से श्री भगवान का भजन करना। किन्तु मनुष्य क्या वह करता है? उद्देश्य भूल जाता है। पकाना-खाना ही उद्देश्य हो जाता है।

माया की definition (परिभाषा) ही यही— जो real (सत्य) को unreal (असत्य) बोध करवा देती है, और unreal (असत्य) को real (सत्य) बोध करवा देती है। 'अतस्मिन् तद् बुद्धि :।' (ब्रह्मसूत्र 1:1 शाङ्कर भाष्य)। माया का और एक नाम है sense-world (जगत्)। हम तो सब माया के खेल के भीतर पड़े हुए हैं। गुरु-कृपा तथा गुरु के ऊपर विश्वास रहने से और कुछ करना नहीं पड़ता।

जितनी करने की शक्ति है उतनी स्वयं करे, बाकी के लिए उनके शरणापन्न होना, यही तो ठीक लगता है। हमें तो यही consistent proposition (युक्तिसंगत सिद्धान्त) प्रतीत होता है। वैसा आलस्य से भी हो सकता है। देह के लिए यत्न न करना अलसता है। ईश्वर-चिन्तन करके देह भूल होना, ठाकुर का ही देखा है। बड़ा ही कठिन है। शरीर के लिए करना उचित। नहीं तो भोगना पड़ेगा। वैराग्य टिकेगा नहीं आखिर तक।

'गुरु, गंगा, गीता, गायत्री।' 'देव लीला, जगत् लीला, ईश्वर लीला, नर लीला।' 'गुरु कृष्ण, वैष्णव।' 'ब्रह्म शक्ति, शक्ति ब्रह्म।' 'ईश्वर, माया, जीव, जगत्।' 'यतो मत ततो पथ।' 'भक्त-भागवत-भगवान।' 'सच्चिदानन्द ब्रह्म, सच्चिदानन्द शिव, सच्चिदानन्द कृष्ण।' 'सच्चिदानन्द, सच्चिदानन्द, सच्चिदानन्द' ये सब ही ठाकुर के महामन्त्र हैं।

बड़े घर के जो हैं, ऊँची श्रेणी जिनकी है, उनको कुछ दिन असंग (निर्जन में, अकेले) रहना उचित। उस प्रकार रहकर, 'निज' को जानकर फिर आकर गृहस्थ करने में दोष नहीं है। जैसे त्रैलंग स्वामी। उन्हें कोट, पैण्ट पहना देने पर भी त्रैलंग स्वामी ही हैं। ये ऑफिस के बाबू हैं, यह बात कोई भी नहीं कहेगा। जो लोग कुछ दिन नि:संग अवस्था में रहते हैं, समझना होगा इनका घर ऊँचा है।

अनेक दिन जिसका स्मरण किया जाए, जिसके संग रहा जाए, उसके संग प्यार पैदा हो जाता है।

....ईश्वर के ऊपर प्रेम भी इसी प्रकार होता है। अनेक दिन तक उनका चिन्तन कर-कर के उनकी सेवा कर के तब यह प्यार होता है। इस शरीर में ही होता है, इसी एक ही भाव में होता है— ईश्वर को प्रेम करना ही मनुष्य-जीवन का उद्देश्य है।

— 15.2.1924

संकलन : डॉ० नौबतराम भारद्वाज

स्वामी नित्यात्मानन्द

(1893-1975)

- जन्म का नाम : जगबन्धु राय।
- जन्म : गंगा दशहरा, सन् 1893 (मामा श्री भैरवराय और श्री गोबिन्दराय के घर)
- स्थान : पूर्वी बंगाल (बंगला देश) के मैमनसिंह जिले का कोठियादि नाम का कस्बा
- शिक्षा : लॉ तक। लॉ करते-करते श्री म के पास जाने लगे। श्री म कथित ठाकुर की बातें डायरी में लिखने लगे।
- दीक्षा : स्वामी शिवानन्द (महापुरुष महाराज) जी से दीक्षित।
- ऋषिकेश-वास : सन् 1938 से ऋषिकेश में वास और 'श्री म दर्शन महाग्रन्थ- माला का लेखन और प्रैस कॉपी की तैयारी।
- सन् 1958 में श्रीमती ईश्वर देवी गुप्ता से भेंट। शेष जीवन प्राय: उन्हीं के वास स्थान को निज आश्रम बनाए रखा। उनकी-सेवा सहायता से श्री म दर्शन का मुद्रण-प्रकाशन आरम्भ।रोहतक में सन् 1967 में श्री म ट्रस्ट की स्थापना।
- महासमाधि : 12 जुलाई, सन् 1975 को # 579/18-बी, चण्डीगढ़ में।

●

Letters of Swami Nityatmananda

1. To Smt. Ishwar Devi Gupta[1]

[यह श्री म ट्रस्ट के संस्थापक प्रैज़ीडेण्ट स्वामी नित्यात्मानन्द द्वारा श्रद्धेय माता जी ईश्वरदेवी गुप्ता को लिखा पत्र है जिन्हें स्वामी जी बच्चों की देखा-देखी 'मम्मी' कह कर सम्बोधित करते थे। सन् 1958 में वे प्रथम बार स्वामी जी से मिलीं। स्वामी जी से मिलने के पूर्व एक 'modern lady' रहीं श्रीमती गुप्ता का किस प्रकार 'real bhakta', 'earnest sevika', ठाकुर जी की बालिका, संन्यासी गृहस्थ के रूप में रूपान्तरण हुआ तथा वे अन्ततः ठाकुर जी की उक्ति— 'आगे ईश्वर, परे सब' का अक्षरशः पालन करते हुए आजीवन ठाकुर-वाणी के पवित्र प्रचार-प्रसार-कार्य में रत रहीं और इस प्रकार श्री म के अन्तरंग शिष्य स्वामी नित्यात्मानन्द के सान्निध्य में रहते हुए उनका जीवन धन्य हुआ, इन्हीं बातों को उजागर करता यह पत्र सभी साधक/भक्तों के लिए प्रेरणा-स्रोत है, निश्चय।

इस पत्र में आए पात्र— अभय बाबू, श्रीविभूति, निर्मल बाबू, नौबत जी, श्री वेद, अर्धेन्दु जी, प्रवेश बजाज आदि स्वामी जी के अन्तरंग भक्त हैं। मम्मी मन्नो, दीदीजी— ये माताजी ईश्वरदेवी गुप्ता के अन्य सम्बोधन हैं। गुप्ता जी श्रीमती गुप्ता के पति थे और गुड्डी उनकी सबसे छोटी बेटी थी, कमल उनका बेटा है।]

Sri Sri Ramakrishna Sharanam

Swami Nityatmananda,
Sri Ma Trust Camp Ashrama,
2/94, Near Khalifa Lodge Solan (Himachal),
12.6.70; 4.20 p.m.

My dear Mummy,

---

[1] ईश्वरदेवी गुप्ता 1975 में स्वामी जी के देह-त्याग के बाद ट्रस्ट की प्रधान बनीं और अपने जीवन के अन्त सन् 2002 तक ट्रस्ट की प्रधान रहीं।

Thakur bless you always. He is with you always, be He with you always— here and hereafter. Yesterday we received your big dispatch— letter Gupta ji wrote to you yesterday. Just now Bibhuti's letter says: on 14.6.70 is my birthday— Ganga Dashahara. Rama has sent a present parcel which may come tomorrow (13.6.70). On 11.6.70 Bibhuti sent a draft letter to Swargashram for correction. Today Abhay Babu and Guptaji have corrected it with my suggestions. Tomorrow it will go to him. Now he will type it and send to Hanuman Poddar, President of Swargashram Trust. Indra requested him to send a letter to H. Poddar.

Today again rain has come. We 3 are fasting in the noon. We two have taken breakfast. But Abhay Baboo has not taken that. At night we will take our usual light dinner. All this for health reason. We feel lighter and inspired. Weekly once we will follow it.

On 09.06.70 we 3 went to the place again where you and Guptaji sat on Simla Road, below your University residence. We saw the railcar which gives little Kamal great joy. Again I analysed your life sitting on the chakkar and said this—

In 1948 you were a modern lady. In 1958 you underwent a change at Tanda. And in 1968-70 you a completely changed lady, a bhakta real, a sevika earnest, a very dear child of Avatar Thakur, a saint in the household life – a firm and unshakable believer in the dictum of Thakur – आगे ईश्वर परे सब, a true translator of this godly dictum, a dear and loving child of Thakur, a woman completely turned into a man, a *pracharak* of Thakur, an holy instrument of Thakur's works, a possessor of mighty power of Thakur for his *Lila-prachar*, an idol of *Grihasthasramis*, an holy *Dasi* in her own home, a sacred inspiration to an arrogant man, and yet you are so humble to God-Thakur. Blessed you are now, blessed you will be always and also blessed hereafter.

No more birth and death. All joy, all peace and all happiness, here and hereafter.

Seeing this change in course of 22 years, how can we doubt that Thakur is with us always. He is always with his Bhaktas. We forget our divine origin. But He does not. He opens up before one's mind our divine ancestry in proper time. Then a man becomes a Godman, a *Dukhi* becomes a *chirasukhi*; we forget Him, but he does not. He knows we are weaklings, His grace, *kripadriśti* make us strong, a Mahavir.

This change in 22 years also proves that we had previous lives, that He is our beloved Father-Mother, that he opens up the egg which is blind and makes us अमृतस्य पुत्राः।

If it is so then why should we be worried over our present and future. We can be safe under His care. We can simply sing His glory and dance in joy unconcerned about our present and future. This is *Amritatva* on earth. This is *Jiwanmukti*. This is salvation. This is victory on earth. This is the conquest over birth and death, over all sorrows. This is the blossoming of *padma-fūl* (lotus) in the mud of human life. You are blessed by Thakur with this rare gift, dear Manno Mummyji.

Physical troubles and mental worries will be there so far as we are encased in body. When He places our mind on His blissful feet, these troubles and tribulations cannot do any harm to us. But they are then our friends. Let come what may, but our prayer supreme be – Do not delude us Mother by your world-enchanting Maya.

Dear Bibhuti is repentant that he could not write to you for some time. He visited a spot under a tree 25 miles from Nainital, in Almora district – in his Shalas car, the owner of the Maya Press of Allahabad – visited the spot where the

mighty Narendra Nath went into supreme meditation. He gratefully remembers you all the while and sends humble Pranams. He writes Gopi and Gour will remain at Lucknow. Their Company will wind up shortly. They may go to Calcutta afterwards.

Writes Nirmal Babu on 5.6.70 – I am flying to Calcutta on Sunday, 7.6.70. There I have got a job, seven or eight thousand a month. Bless me so that I may be successful in my new assignment. Then he continues, "We are very happy that by going over to Solan, your health is better. This is all for Didiji. For all these services of Didiji, she has become an object of adoration and affectionate salutation for now and for all times to come. Verily we all are infinitely grateful to her…."

Mummyji dear, all these are for you. Thakur is making a loving home at Calcutta. You desire so much to visit the holy Dakshineshwar and other *Tirthas*. Now by staying in our own home, you can visit the holy places by Thakur's grace.

This speculation we do as a man. But He knows what He will do for us. He does all for our good even if we are placed in unfavourable circumstances apparently.

Today as we were returning from morning walk, myself and Abhay Baboo were caught in the rains. The sky is overcast with thick dark clouds. It appears, the rainy season has started.

Shyam sunder will be shortly going to Uramar Hoshiarpur on transfer.

Dandi is not available here. But a friend told me he will arrange for your coming to the house in an armchair carried by 4 coolies.

For Guddi's coming here Guptaji says as follows: As soon as Naubat returns, he will be detained at Chandigarh to

help you. And Guddi will come alone. The date and time of her coming here will have to be informed previously.

Preferably she may come by the Deluxe at 7.25 a.m. and reach here at 9.45 a.m. If however, her coming by Deluxe canno be intimated before hand, she may come by the next bus (ordinary) which leaves at 8 a.m.

Anyway date must be fixed beforehand and intimated to us – that very day she must come. Guptaji will attend both Deluxe and the ordinary bus. After a short stay here Guddi will be escorted back to Chandigarh by Guptaji. Then Naubat may come.

This is for Guddi. For you a fresh programme will be made. Someone will escort you.

1. You may acknowledge the receipt of Ved's M.O.
2. I have written to Ardhendu acknowledging the receipt of 15 forms.
3. My watch fell down from the lower pocket of Pravesh's Kamiz. At once it stopped functioning. I may send it to *Gour* at Lucknow for repairs.
4. Excuse. I could not inform you in time the date of my birth day on 14.6.70. You may offer anyday some fruits to Thakur in my name. That will do.
5. Padma may sell her land at Phagwara.

With love and blessings from me to you, Guddi, Kamal, Naubat, Buaji, Bajajs and Bidani and all other Bhaktas and friends.

Affectionately,

Swamiji

2. To a bhakta Mr. Kailalsh

[स्वामी नित्यात्मानन्द (जगबन्धु महाराज) ने उत्तरी भारत के कुछेक प्रमुख नगरों में साप्ताहिक सत्संग सभाओं की स्थापना की थी। ये सभाएँ सप्ताह में एक बार स्थानीय भक्तों के साथ मिलकर शास्त्र–पाठ तथा श्रीरामकृष्ण, माँ सारदा, मास्टर महाशय, स्वामी विवेकानन्द आदि पार्षदों के जन्मोत्सवों का आयोजन भी करतीं थीं। ऐसा ही श्री 'म' ट्रस्ट का एक सब-सेन्टर 4, सर्कुलर रोड, अमृतसर में श्री डी०एन० वधवा जी के निवास-स्थान पर कार्यरत था। उनके निधन पर उनके पुत्र श्री कैलाश वधवा जी को पूज्य जगबन्धु महाराज ने यह पत्र लिखा था।]

Swami Nityatmananda,
'Sri Ma Trust' 579, Sector 18-B,
Chandigarh. 14.5.70

My dear Kailash,

Thakur bless you all. On the 22nd February last you, Kishi and Arati saw me at the Tulsi Math, Rishikesh. You promised then, that you would write to me about your family welfare news from time to time like your great departed and revered father. After long waiting I am writing to you. Please write to me by the return of post.

I came here on May 2, in a car direct from Rishikesh. We left Rishikesh at 3 A.M. and reached here before 9 A.M. We had a very comfortable journey.

Dear Kailash, even now I cannot contain in my mind, the idea that your revered father is no more. Whenever I look at your house in my mind, I still hear the call 'Ram, Ram' until Ram came and undressed your father.

I still see him with his smiling face sitting in the lawn or sitting in my room, or going out to the office well-dressed.

He was the life and light of your house. He is still so before my eyes.

Will you kindly write, how is dear Bibijee—both in body and mind? How you are all, his loving children, Nirmal and your children whom he loved so much?

I believe there is no adverse effect on your business at his great departure.

Kailash, your father was a great *yogi* in disguise, a *Rajarshi* in his conduct. His great departure on the bank of Ganga, at Dakshineswar at the feet of Thakur, with *Ram Nam* on his lips – has inspired in me and many sadhus of Rishikesh a holy envy. For such a great go we have been praying to God.

Do you come this side? If so, please see me. To Bibiji my sincere love and blessings, to you, Nirmal and children too. To dear Kishi and family too.

1. Kailash, I left 30 books— 15 English 'M. the Apostle and the Evangelist' and 15 Sri Ma Darshan in Hindi in the Almirah in my room. Also the proceedings book of Sri Ramakrishna Sri Ma Prakashan Samiti whose you are the President and Kishi, the Secrtary. Kishi saw the books at the time of my going to Rishikesh. Please send the books if anybody comes here in a car. And retain the proceedings book with you. If anybody asks for the books in my home, please give him.
2. You told me your friends had promised donations from 3 to 5 hundred rupees. You also told me that there donations could be taken as released money. Will you please send these sums of donations by post. The accounts of Sri Ma Trust are going to be audited shortly.

Mrs. I.D. Gupta conveys her pranams to Bibijee and love and best wishes to you, Nirmal and children, also to Kishi and his family. She has been ailing from her chronic disease of Ulcerative colitis.

God bless you all, dear Kailash!

Affectionately yours,
Swami Nityatmananda

●

कैम्पाश्रम में जगबन्धु महाराज

[26 नवम्बर, 1883 को श्री श्री ठाकुर ब्राह्म भक्तों से कह रहे हैं :

"निर्लिप्त होकर गृहस्थ करना बड़ा कठिन है। ... फिर भी क्या गृहस्थियों के लिए उपाय नहीं है? हाँ, अवश्य है। कुछ दिन निर्जन में साधना करनी चाहिए। ...

"यदि पूछो कितने दिन गृहस्थ छोड़कर निर्जन में रहूँगा? वह तो यदि कोई इस प्रकार एक दिन रहे, वह भी अच्छा है, तीन दिन रहे तो और भी भला है, अथवा बारह दिन, एक मास, तीन मास, एक वर्ष जो जितना कर सके। "[1]

युगावतार भगवान श्रीरामकृष्ण के उपर्युक्त कथन को उनके अन्यतम अन्तरंग पार्षद श्री 'म' (मास्टर महाशय) ने आजीवन जीया। सोलह भागों में उपलब्ध उनकी वाणी 'श्री म दर्शन' का आरम्भ ही 'मिहिजाम में श्री म' से होता है जहाँ वे सभी सांसारिक चिन्ताओं से निर्मुक्त हुए जंगल में सिंह के समान एक आनन्दमय भावराज्य में विचरण कर रहे हैं और प्राचीनकाल के ऋषियों की तरह साधु-ब्रह्मचारियों का जीवन-गठन भी कर रहे हैं।

स्वामी नित्यात्मानन्द जी (जगबन्धु महाराज) ने उक्त परम्परा का निर्वहन करते हुए ही सोलन (हिमाचल प्रदेश) में वर्ष 1970, 1971, 1972 तथा 1973 में ग्रीष्म ऋतु में चार आध्यात्मिक कैम्पों का आयोजन किया। ये कैम्प वर्ष के मई मास से जुलाई मास के अन्त तक तीन मास की अवधि के लिए लगाए जाते थे। इन कैम्पों में साधक-भक्तों को आध्यात्मिक जीवन के व्यावहारिक पक्ष का अनुष्ठान करने का अवसर मिला और वे पू० महाराज के कठोर अनुशासन में निर्जनवास करने हेतु का सौभाग्य प्राप्त किया करते और श्री श्री ठाकुर

---

[1] 'श्री श्रीरामकृष्ण कथामृत' (हिन्दी) प्रथम भाग, तृतीय संस्करण, पृष्ठ 160, 161

के उक्त निर्देश का पालन किया करते।[1] प्रस्तुत है वर्ष 1972 में आयोजित उक्त कैम्प की एक रिपोर्ट :]

यह कैम्प 16 मई, 1972 से 31 जुलाई 1972 तक आयोजित हुआ। कल 15 मई, 1972 को चण्डीगढ़ में ट्रस्ट ऑफिस के पीछे पू० महाराज के निमित्त बनाए गए नूतन आवासगृह में श्री श्री ठाकुर स्थापना हुई थी। पू० महाराज ने स्वयं प्रात: छ: बजे पञ्चद्रव्य से ठाकुर-पूजा की थी और हृदयस्पर्शी कण्ठस्वर से प्रार्थना की थी— 'ठाकुर-माँ! आओ, अपने पार्षदों सहित यहाँ प्रतिष्ठित होकर वास करो।' प्रात: सवा सात बजे श्रीमती प्रवेश बजाज, श्री धनराज बजाज, उनकी पुत्री रञ्जना व दामाद राजेश आए। पू० महाराज ने उनसे भी दूर्वा, विल्वपत्र पुष्पादि मन्त्रोच्चारण के साथ अर्पण करवाए। प्रात: नौ बजे पूजा सम्पन्न हुई और सूजी के बने पायस का प्रसाद वितरण हुआ। तभी रामकृष्ण मिशन आश्रम, चण्डीगढ़ से स्वामी तत्त्वज्ञानन्द जी भी आ गए और उन्होंने भी विधिवत् पूजा में योगदान किया। पू० महाराज का क्या ही तेजोमय जाज्वल्यमान मुखमण्डल था! श्री श्री ठाकुर-माँ-स्वामीजी-श्री म से उनका एकात्मभाव उनके दिव्य आभायुक्त मुखमण्डल पर स्पष्ट लक्षित हो रहा था। स्वामी तत्त्वज्ञानन्द जी अनेक कथोपकथन के उपरान्त चले गए थे दोपहर सवा बारह बजे। पू० महाराज ने सारा दिन वहीं सद्य-स्थापित श्री श्री ठाकुर की प्रतिमाओं के पदतले ही विश्राम किया। इसी आयोजन की अपेक्षा में कैम्पाश्रम के शुभारम्भ में प्राय: दो सप्ताह का विलम्ब हो गया। स्मरणीय है कि पूज्य महाराज ने अपने जीवन के शेष वर्ष अधिकांशत: यहीं व्यतीत किए और इसी पुण्य स्थल पर[2] अपनी पाञ्चभौतिक देह का त्याग किया।

अगले दिन 16 मई, 1972 को सुबह पौने सात बजे टैक्सी आ गई और सात बजे पू० महाराज, 'पापा', एक भक्त, ड्राइवर और एक नूतनजन सहित पाँच व्यक्ति सोलन के लिए रवाना हो गए। अन्तिम जन रास्ते में नांग्ला बस स्टॉप पर उतर गया और हम चारों सवा नौ बजे सोलन पहुँचे।

---

[1] नूपुर, 1998, पृष्ठ 63 तथा नूपुर, 1999, पृष्ठ 65 द्रष्टव्य

[2] 15 जुलाई, 1975 के दिन

तत्कालीन सिविल हस्पताल, सोलन में सेवारत डॉ० शिशिर रञ्जन घोष के निवास के सामने रुके, पू० महाराज के पहुँचने की सूचना दी और कैम्प आश्रम परिसर पहुँचे। एकजन भक्त तथा 'पापा' चार दिन पहले 12 मई, 1972 को सोलन आकर एक एस.डी.ओ. (पी.डब्ल्यू.डी) का यह घर एडवान्स मनी देकर अगले तीन मास के लिए सुनिश्चित कर गए थे। पिछले दो कैम्पाश्रमों के आयोजनों से परिचित डॉ० घोष ने यह घर दिलवाने में मदद की थी।

उक्त परिसर में प्रवेश करते ही पू० महाराज को विजातीय वातावरण का आभास हुआ। वे कहने लगे, 'कि जानि किछू भालो लागछे ना।' (क्या जानूँ कुछ भला, अच्छा-सा नहीं लग रहा।) बाद में जाना गया कि इस मकान का मालिक मुन्शीगिरि करता है और मिथ्या कथा से अर्थोपार्जन करता है। पू० महाराज ने चक्षु मुद्रित करके खड़े-खड़े ही अनेक क्षण प्रार्थना की। एक भक्त ने ड्राइवर की सहायता से सामान कमरे में रख दिया।

पिछले वर्ष के कैम्प आश्रम से परिचित एक भक्त— बाबूराम के यहाँ से पूज्य महाराज के प्रयोग के लिए एक तख्त लाया गया। उस पर बैठते ही पू० महाराज ने श्री श्री ठाकुर-माँ से यहाँ आकर निवास करने की आग्रह-प्रार्थना की। इसके बाद पू० महाराज के साथ ही पापा और एक भक्त ने भी इस परिसर की परिक्रमा की।

बिस्तरबन्द खोलकर पू० महाराज के लेटने-बैठने की व्यवस्था की गई तथा अन्य सामान भी खोल-खोल कर यथास्थान रख दिया गया। खाली हुए पैकिंग बॉक्स पर ठाकुर-माँ-स्वामीजी-श्री म की छवियाँ स्थापित की गईं। सबने पू० महाराज के साथ ठाकुर-माँ से प्रार्थना की कि वे आएँ और यहाँ निवास करें। मम्मी के बनाए परौंठे प्रसाद रूप में ग्रहण किए गए। पू० महाराज ने कुछ समय विश्राम किया। एक भक्त ने पाकशाला की व्यवस्था देखी।

सन्ध्यारती के पश्चात् भविष्य का दैनिक कार्यक्रम निर्धारित कर दिया गया और सभी आश्रमवासियों के कर्त्तव्य भी। प्रातः चार बजे से सात बजे

तक प्रात:कृत्य, प्रणाम, जप, ध्यानादि होंगे। पूर्वाह्न, अपराह्न तथा सायं को गीता, उपनिषद्, कथामृत, श्री म दर्शन का नित्य पाठ होगा। सन्ध्यारती व पाठ का समय रहेगा सायं सात बजे से साढ़े आठ बजे तक।

एक कमरा पूजा-घर तथा महाराज-कक्ष रहेगा, दूसरा भक्तों आगन्तुक साधकों के लिए होगा। तीसरे कमरे में पूर्ववर्त्ती किराएदार एस.डी.ओ. श्री चौहान का कुछ सामान पड़ा हुआ है। उनके वह खाली कर देने पर परसों से वह भी हमें मिल जाएगा।

रात्रि दस बजे सभी शयनार्थ चले गए। पू० महाराज की सेवा-सुश्रूषा के बाद एक भक्त उनके कक्ष के साथ लगते बरामदे में टाट-दरी-कम्बल धरती पर बिछाकर सो गए।

अगले दिन बुधवार, 17 मई। पू० महाराज के कक्ष से 'ए बार आमि भालो भेबेछि' बंगला गान सुनाई दिया। कण्ठस्थ पूरा गान ही गाया।[1] भक्त धन्य हुए। पू० महाराज नाश्ता करके घूमने चले गए पापा के साथ। वापिस आए तो सिविल हस्पताल, सोलन के डॉ० डे भी उनके साथ थे। उनकी अनुपस्थिति में घोष साहब भी कुछ देर महाराज की प्रतीक्षा करके चले गए। अखबार 'टाइम्स ऑफ इण्डिया' आज से लगा लिया गया; अखबार वाला बाबूराम के यहाँ डाल जाया करेगा और वे उसे यहाँ पहुँचा दिया करेंगे।

अगले दिन है बृहस्पतिवार। प्रात: सवा सात बजे पू० महाराज अपने कक्ष के बाहर बरामदे में ध्यानमग्न हैं। उनके ध्यान से उठने पर भक्त ने प्रणाम किया तो बोले, "जप-ध्यान में कितना समय लगाया?"

भक्त बोले, "जी, बीस मिनट।"

महाराज बोले, "यहाँ रहना हो तो चार से पूर्व उठकर ध्यान-जप करना होगा। नहीं तो यहाँ से चले जाओ। मैं सब मैनेज कर लूँगा। महापुरुषगण हमें लाइन में बैठाकर ध्यान करवाते थे। बाबूराम महाराज

---

[1] अर्थ सहित सम्पूर्ण गाना श्री म दर्शन, द्वितीय भाग (द्वितीय संस्करण) के पृष्ठ 220 पर है।

को राखाल महाराज ने कहा था— पूजा-टूजा को गंगा में फैंक दो। ध्यान-जप नहीं हुआ तो कुछ भी होगा नहीं। ध्यान-जप पहले, कर्म परे। ब्रह्मचारियों के पक्ष में तो यह है और भी आवश्यक। दीक्षा ली है तो बरामदे में पूर्वमुखी होकर ब्राह्ममुहूर्त्त में ध्यान-जप करोगे। Self-imposed imprisonment (स्वत: आरोपित निधिध्यसन की चर्या) लेनी होगी, तभी तो दिव्यानन्द अन्दर में उतरेगा। अखबार शखबार में ध्यान होगा तो असली काज, ध्यान का क्या होगा? साधु होने के लिए तो कम से कम 75 प्रतिशत मन तो ईश्वर को देना ही होगा। जब आँख देखेगी नहीं, किंवा कान सुनेगा नहीं तो अपने भीतर ईश्वर को, ठाकुर को ही लिए रहना होगा। इसका निरन्तर अभ्यास इसी उठन्त यौवन से बनाए रखना होगा। अब यदि अभ्यास नहीं होगा तो परे गृहस्थी होगा क्या?"

भक्त निरुत्तर नतमस्तक खड़े रहे।

बाबूलाल को बुलवाकर तीसरे कमरे से मि० चौहान का सामान बाहर किया गया और उस कमरे को भी धो-धाकर साफ़ कर लिया गया। पू० महाराज आज सैर के लिए नहीं गए। एक भक्त से पुन: बोले, "अनेक काज करते देखकर बाहर के लोग खूब शाबासी देंगे, खूब सेवा करता है, कहकर वाहवाही देंगे। लेकिन असली काज का क्या हुआ, ध्यान-जप का, जिसके बिना शान्ति होगी नहीं?"

भक्त के हाथ एक बंगाली भक्त 'मित्र साहब' के यहाँ चण्डीगढ़ के प्रसादी आम भेजे गए। उन्होंने भी कलकत्तिया पान के पत्ते भेजे पू० महाराज के लिए। वापिसी में बाज़ार से आश्रम-संचालन के निमित्त अनेक वस्तुएँ लाईं गईं।

इलाके के पोस्टमैन गीता राम ने आवाज़ दी। पापा दो पत्र ले आए; एक मम्मी[1] का तथा दूसरा 'मीरा'[1] का।

---

[1] मम्मी = श्रीमती ईश्वर देवी गुप्ता, तब श्री म ट्रस्ट की संस्थापक सचिव तथा 12 जुलाई, 1975 को पूज्य महाराज के देहावसान के बाद से श्री म ट्रस्ट की आजीवन प्रैजिडैण्ट। भक्तों द्वारा उन्हें मम्मी, माँ, दीदी आदि सम्बोधनों से व्यवहृत किया जाता था।

एक भक्त बाबूलाल को जाते समय प्रसाद देना भूल गए। पू० महाराज बोले, "प्रसाद का माहात्म्य जानता नहीं। ठाकुर ने नरेन को जब प्रसाद-ग्रहण के प्रति संकोची और संशयापन्न देखा, तो जगन्नाथ का टाटका प्रसाद देकर कहा था— द्रव्य गुण तो मानता है कि ना! त्रिफला खाने से दस्त होता है और अफीम खाने से कब्ज़। यह प्रसाद खाने से भक्ति बढ़ती है। इस प्रसाद के साथ तो 'मम्मी' की कल्याण-कामना भी जुड़ी हुई थी। निज तो बड़ा गप्-गप् करके खा लिया था।"

"अब बाबूलाल, घोष साहब और डे साहब के घर आम्र प्रसाद लेकर जाना और हाथ जोड़कर कहना— मैं एक भूल के लिए क्षमा याचना करने आया हूँ। गुप्ता जी[2] की निष्काम सेवा का प्रसादी फल आपको देना भूल गया था। यह ग्रहण कीजिए और मुझे क्षमा कीजिए।"

सन्ध्यारती से पूर्व ही भक्त त्रुटि-मार्जन कर आए।

अगले दिन शुक्रवार। पू० महाराज 'पापा' के संग राजगढ़ रोड पर घूमने गए। डॉ० डे के परामर्शानुसार पू० महाराज के सिर पर 'जवाकुसुम तेल' की मालिश की गई। 'पापा' ने महाराज के निर्देशानुसार 'मीरा' और श्रीमती विजया प्रभाकर को शिमला पत्र लिखे और अंग्रेज़ी के प्रूफ देखे। मीरा तेरह तारीख को श्री वी०पी० प्रभाकर जी के पुत्र पवन के साथ शिमला गई थी। उसका वहाँ मन लग गया है।

एक भक्त ने बंगला श्री म दर्शन के नवम भाग की भूमिका का पाठ किया— 'काचेर घरे श्री म'।

'पापा' की पीठ में व्यथा है, वैसलीन मालिश की गई।

सन्ध्यारती में पू० महाराज ने कहा— "संशयात्मा माने गुरु वाक्य पर पदे, पदे अविश्वास। हरि प्रसन्न चक्रवर्ती अपने काशी-निवास के समय ऐसे ही थे। तब विज्ञान महाराज उनसे कहने लगे, दीक्षा लेनी होगी। उसके

---

[1] मीरा = श्रीमती ईश्वर देवी जी की सबसे छोटी कन्या, नाम से रेणु। पू० महाराज ने उन्हें ब्रह्मचारिणी 'मीरा' नाम दिया था। वे 31 वर्ष की आयु में दिवंगत हुईं।

[2] गुप्ता जी = प्रो. धर्मपाल गुप्ता, श्री म ट्रस्ट के भूतपूर्व सचिव।

बाद सब स्थिर हो जाएगा और सब ठीक हो जाएगा। हरि को दीक्षा के समय भी ठाकुर पर सन्देह-सा हुआ। विज्ञान महाराज ने उनके मन की बात जानकर तुरन्त धमक दी— अब जब सब आयोजन हो गया है, अब भी संशय? कालान्तर में उन्हें दृढ़ विश्वास हो गया था।"

रात्रि सवा ग्यारह पर निद्रासमाधि।

पर दिन शनिवार। ध्यान-जप-प्रणामादि के उपरान्त पू० महाराज 'पापा' के साथ प्रात: छ: से साढ़े सात पर्यन्त राजगढ़ रोड पर सरकारी कॉलिज तक सैर को गए। एक भक्त कोटला नाला से जल लाए और रास्ते से दूध भी। नाश्ता आदि हो चुकने पर पू० महाराज ने एक भक्त को 'मम्मी' और विभूति बाबू को पत्र लिखवाए और तुरन्त लैटरबॉक्स में डाल आने के लिए भेज दिया। श्री म दर्शन नवम भाग के पाठ करते समय महाराज बोले, "अपने लिए यह अच्छी तरह से समझ लो 'तपो ब्रह्म।' तपस्या स्वयं करनी होती है। लोग कहते हैं, आशीर्वाद करो। भाई, वह तो ठाकुर कर ही गए हैं। अब तो तपस्या ही है दरकार।"

सन्ध्यारती के समय स्थूलदृष्टि, प्रवर्त्तक, साधक, सिद्ध और सिद्धों के सिद्ध आदि के विषय में चर्चा हुई। "साधक भी फिर दो प्रकार के होते हैं—सकाम और निष्काम। सकाम भी फिर क्रमश: निष्काम हो जाता है। गम्भीर कथा होने पर पद्मा (दिल्ली की एक महिला भक्त) सो जाती है। योग शास्त्र में निद्रा को भी एक बाधा (अन्तराय) बताया गया है।"

सन्ध्याहार के बाद पद्मा जी की बात फिर उठी— "गुरु-निर्णय नहीं है। मन कई ओर है— छेलेपूले (सन्तान) में, पैसे में। यहाँ शान्ति के लिए आती है। संस्कार हैं, तभी तो यहाँ स्नेह है। प्रवेश (चण्डीगढ़ की महिला भक्त) उससे अनेक आगे है। "

आज 21 मई, 1972 ईसवी, रविवार।

ब्राह्म मुहूर्त्त के ध्यान, जप आदि के पश्चात् पू० महाराज 'पापा' के साथ 'दि मॉल' की तरफ़ सैर करने गए, मिट्टी के तेल के डिपो से तेल मिलने की बात पूछी। पता लगा जो ट्रक यहाँ आना था, उसे आपात्

स्थिति के कारण कश्मीर भेज दिया गया है। अगला ट्रक कल आने की सम्भावना है।

घोष साहब प्रात: दस बजे जब आए, तो महाराज नाश्ता कर चुके थे। उनसे महाराज कहने लगे, "स्वामीजी ने कहा था— प्राय: अर्धेक शताब्दी के पश्चात् भारत ऐसा ऊपर उठने लगेगा, जैसा कि पहले प्राचीन काल में था। पतन जितना गहरा हुआ, उत्थान भी उसी अनुपात में होगा। भारत आजाद तो कर सकता हूँ पर रखूँ किसके कन्धों पर? अलौकिक भावे आजाद होगा यह।"

पंजाब नैशनल बैंक के सहायक लेखाकार श्री यशपाल जी आ गए। वे और घोष साहब बारह बजे चले गए। मध्याह्न आहार आदि के पश्चात् एक भक्त ने बंगला श्री म दर्शन के नवम भाग का पाठ किया।

सन्ध्यारती में श्रीमति तथा श्री डे साहब और श्रीमति तथा श्री मित्र बाबू आए। श्री श्रीरामकृष्ण वचनामृत पाठ के समय पू० महाराज प्रसङ्गत: कहने लगे, "मुकुल महाराज, स्वामी आत्मानन्द स्वप्नसिद्ध थे। वे अनेक समय से भृकुटि के मध्य में एक ज्योति देख रहे थे। उनके आचरण-व्यवहार से समझा जा सकता था कि जाग्रत अवस्था में भी उन्हें वह स्मृति बनी रहती थी। एक बार बंगलौर आश्रम में वे तीर्थ-भ्रमण के लिए अनेक व्याकुल हुए। तभी उन्मत्त हुए से ठाकुर घर की परिक्रमा करने लगे और शान्त हो गए। मिलिट्री मैन थे कि ना, अनेक टैस्ट हुए, जैसे गर्म-ठण्डे रेत पर चलाना आदि। जब कोई प्रतिक्रिया नहीं देखी गई तो अफसरों ने 'एबनोर्मल' करार देकर आर्मी के लिए अनफिट बता दिया। छूटते ही पैदल-पैदल बेलूड़ मठ जा हाजिर। परम्परा जान लेने से परवर्त्ती भक्तों में विश्वास, निर्भयता आएगी।"

माया प्रैस, इलाहाबाद को पत्र लिखा गया। वहाँ से श्री म दर्शन (हिन्दी) का द्वितीय भाग छपा है।

पर दिन सोमवार। एक भक्त को 'ललित' तथा 'खोका' को बंगला में पत्र लिखवाए। श्री 'म' दर्शन नवम भाग का पाठ हुआ। विजय बाबू आए।

सन्ध्यारती में वचानामृत तृतीय भाग के पृष्ठ 21 का पाठ हुआ। प्रसङ्गत: महाराज कहने लगे, "ये देखो, गिरीश नशे में मत्त होकर बुड़बुड़ाने लगे। ठाकुर को यन्त्रणा हुई। माँ से उसे शान्त करने को कहा। ठाकुर को कष्ट, माने जगदम्बा को कष्ट! तभी गिरीश की जीभ अकड़ गई। वह तो कुछ कहना चाहता है, किन्तु कह पाया नहीं।"

"ये देखो, ठाकुर कुछ भी क्रेडिट लेंगे नहीं। केवल इतना कहा, 'माँ सब जानती हैं।' यही क्रेडिटलैसनैस श्री म के जीवन में भी पूर्ण रूपेण प्रतिभात हुई है। कभी एक बार भी नहीं बोले कि वहाँ के 90 प्रतिशत साधु उनसे तैयार हुए हैं। यहाँ तक भी किसी के बारे में नहीं बोले कि अमुक् यहाँ आया करता था और अब साधु हो गया है।"

"श्री म दर्शन प्रथम भाग में लिखी श्री म की जीवनी कालान्तर में एक वृहद् ग्रन्थ बनेगी।"

"उनके पार्षद हैं सभी नित्य सिद्ध। नहीं तो अवतार के संग रह पाते कैसे? अवतार भी उनके बिना रह पाए नहीं। नहीं तो लीला होती कैसे? श्री म के पाँच सप्ताह तक न जाने पर केशव को नालिश करने लगे— इतने दिन वह आया नहीं, मन छटपट कर रहा है। उसे आने को कहना।"

नैश आहार के बाद सेवा-सुश्रूषा। डे साहब के देवघर और सेठी साहब को लिखे पत्रों को पापा ने महाराज को पढ़कर सुनाया। डे साहब पू० महाराज से डिक्टेशन लेकर भक्तों को उनके पत्र लिख दिया करते थे।

साढ़े दस बजे बाबूलाल जी आए। एकभक्त ने प्रमाद के लिए उनसे क्षमा माँगी। तभी नाहन के दर्शन लाल जी तथा बहन कान्ता जी आए। बाबूलाल ने मम्मी के स्नेहाशीष की बात उठाई। महाराज कहने लगे, "मम्मी कोई साधारण मानुष नहीं रे। देवरक्षिता हैं। मृत्युशय्या पर ठाकुर ने उन्हें रिक्रूट किया है। बालगोपाल रूप में उनको दर्शन दिया है। वक्ष पर खिलारियाँ की हैं। इतने बड़े एरीस्टोक्रेटिक घर की कन्या, जिसने इतनी सब हीरा-सन्तानों को जन्म दिया, उसने अब बुलडॉग की तरह ठाकुर को पकड़ लिया है। ठाकुर ने भी उन्हें स्वीकार किया है।

"गुप्ता जी ने मुझे ऋषिकेश में कहा था— हमने एक नौका में जीवन आरम्भ किया। कुछ समय नाव में एक संग चले। तब फिर उनकी नाव तो दूसरी दिशा में अग्रसर हो गई और मेरी वहीं रह गई स्टैगनैण्ट (स्थिर)। मैंने कहा, उनके संस्कार थे, तभी तो। "

बाबूलाल आदि से पू० महाराज कहने लगे, "ठाकुर इस काज के पीछे हैं। मैंने उनसे प्रार्थना की थी, प्रकाशक तुम अपना लाओगे। तेईस साल बाद उन्होंने मम्मी को दिया— अर्धमृता, अर्ध जीविता और वह भी नारी। इतने-इतने मूछोंवाले प्रिंसिपल-व्रिसिंपल आए-गए। काम की बात, प्रकाशन की बात कहने पर पुं-पुं करके 'पूंदेर कापड़' छोड़कर भाग गए।"

श्री दर्शन लाल जी जन्म-जन्मान्तर की चर्चा करने लगे— मृत्यु के समय जिन संस्कारों का पलड़ा भारी होता है, उसी के अनुसार तो अगला जन्म होता है। पार्थिव मृत शरीर के मुखमण्डल को देखकर वह कुछ-कुछ जाना जा सकता है। फिर मानव प्राणियों की संख्या बढ़ रही है, क्यों? ऐसी ही बातें होने लगीं।

सभा भंग हुई रात्रि सवा ग्यारह।

पर दिन मंगलवार।

पू० महाराज 'पापा' के साथ जवाहर पार्क की ओर सैर के लिए गए। दूध वाले को कह आए कि अभी तो प्रतिदिन एक किलो दे और मम्मी के आने पर प्रतिदिन दो किलो दूध दे।

पूर्वाह्न पाठ में 'मौन के महत्त्व' पर चर्चा हुई। सन्ध्यापूर्व पापा ने पू० महाराज को मम्मी की 19 मई, 1972 की लिखी चिट्ठी सुनाई। पत्र सुनकर बोले, "Everything she sees saturated with Godliness.. (वे प्रत्येक पदार्थ को ईश्वर-भाव से मण्डित देखती हैं।) यह दृष्टि करने के लिए अनेक साधन चाहिए। जिनकी यह दृष्टि हो गई है, दु:ख क्या उनको स्पर्श कर सकता है?"

एक भक्त ने श्री 'म' दर्शन के नवम भाग का पाठ किया।

सन्ध्यारती में पाठ के समय रघुनाथ बाबा जी की दो घटनाएँ बताईं।

बुधवार से दूधिए श्याम सिंह ने एक किलो दूध देना शुरू कर दिया। एक भक्त से पू० महाराज बोले, "ओइ बोका, देखना होगा एक मार्च, 1926 की डायरी कौन-से पार्ट में गई है। और 1926 में जब मैं महापुरुष महाराज के साथ पुरी में था, उस समय की महापुरुष महाराज के साथ हुईं महत्त्वपूर्ण वार्त्ताएँ भी किस पार्ट में गई हैं।"

भक्त भूलने के डर से तुरन्त ढूँढने लगे। सप्तम भाग यहाँ नहीं था। दूसरे से छठे तथा अष्टम और नवम भागों में उक्त प्रसङ्ग खोजने पर नहीं मिला।

नैश आहार के बाद पापा ने मम्मी का 22 मई, 1972 का पत्र पढ़ा।

आज बृहस्पतिवार। पू० महाराज ने कहा, "जब श्री म दर्शन प्रथम भाग का पुनर्मुद्रण होगा तो 'श्रीरामकृष्ण की कई उज्ज्वल मणियाँ लुप्त हुईं' वाक्य के साथ जोड़ना होगा— प्रथम गईं श्री श्री ठाकुर की प्रेमघनमूर्त्ति स्वामी प्रेमानन्द, जिनकी हड्डी पर्यन्त प्रेम में विशुद्ध थीं। ये पहले श्री म के छात्र थे, और फिर परम स्नेह के पात्र गुरु-भ्राता हुए।"

प्रातराश के बाद भक्त के लिए अप्रमत्त और सतर्क जीवन की चर्चा हुई। प्रसङ्गतः यह बात भी हुई कि भक्तों को इस प्रकार चौकन्ने होकर जीवन यापन करना होगा जैसे उनकी पीठ में भी दो आँखें हैं।

पू० महाराज के निर्देशानुसार महाराज के हस्तलिखित रजिस्टरों में पन्द्रहवें भाग के लिए अध्यायों एवं अनुभागों के विभाजन का कार्य किया गया। पन्द्रहवें भाग की अतीव संक्षिप्त रूपरेखा अलग-से एक कागज़ पर लिख ली गई। इसलिए श्री म दर्शन नवम भाग का पाठ उतना नहीं हो पाया। केवल नियम रक्षा ही हुई।

पू० महाराज ने पद्मा, मम्मी और माया को पत्र लिखवाए। बाबूलाल से छत पर जाने के लिए जीने का काम शुरु करने का निवेदन किया पापा ने। वह कल से ही आरम्भ करने का आश्वासन दे गया। पहली जून से बाबूलाल की बाड़ी में शिफ्ट करने का निश्चय हुआ। वर्तमान स्थान सड़क

के बिल्कुल साथ होने के कारण आश्रम के अनुकूल शान्त वातावरण नहीं दे पाता है, इसलिए पू० महाराज ने स्थान परिवर्तन का निर्णय लिया।

पापा दोपहर एक बजे बस स्टैण्ड जाकर मीरा को ले आए। वे शिमला से आई हैं।

मम्मी को चण्डीगढ़ व विजया जी को शिमला पत्र लिखे गए।

स्वामी प्रेमेशानन्द जी के सुझाव के अनुसार प्रथम अध्याय के आरम्भ में श्री म के वाङ्मय की एक छवि देने का निश्चय हुआ। कान्ता जी तथा बाबूलाल जी ने नैश प्रसाद यहीं आश्रम में ही पाया।

आज 27 मई है। पूज्य महाराज का सिर भारी है। कहने लगे, "आश्रम का सब देखने के कारण शायद ऐसा है। सभी कार्यकलापों पर एक सूक्ष्म दृष्टि रखनी होती है ना। एक स्थिरमति ही वह सब देख सकता है। मम्मी कर सकती हैं।"

पापा ने सब देखभाल करने का दायित्व लेने के लिए स्वयं को प्रस्तुत किया।

अपराह्न सत्संग में सरस्वती भवन, टैंक रोड, सोलन के श्री जी०एम० कौल आए। पू० महाराज डेढ़ घण्टा पर्यन्त उनसे चर्चा करते रहे। वे सोलन को एक आध्यात्मिक केन्द्र बिन्दु बनाने का अनुरोध करते रहे। महाराज कहने लगे, "पिछले साल तो इस दिशा में कुछ विचार किया था, इच्छा भी थी। अब शक्ति नहीं है।"

आज रविवार। एक भक्त को रन्धनशाला में निरर्थक काम बढ़ा लेने के लिए अनेक बकूनि-प्रसाद मिला— "इतना बनाने की दरकार क्या? जितना होने से चल ना पाए, उतना ही करना। अधिकांश समय खाना-पीना ही लेकर चलेंगे तो साधारण गृहस्थों से अन्तर ही क्या रह जाएगा? यहाँ आना हुआ है अधिक से अधिक उनको पुकारने के लिए और 'तपो ब्रह्म' की साधना के लिए।"

एक भक्त ने श्री म दर्शन का नवम भाग पाठ किया। स्वामी जी और मीरा सैर के लिए गए साढ़े छः बजे। पापा और एक भक्त ने सात बजे

सन्ध्यारती आरम्भ की। फिर साढ़े सात बजे स्वामी जी और मीरा भी आ बैठे पाठ के समय। तभी विजय भी एक फूल का पौधा लगाने के लिए लेकर आ उपस्थित हुआ। आहार-प्रसाद पाकर उसने विदा ली। 'मीरा' ने भजन गाया, तेरे फूलों से भी प्यार, तेरे काटों से भी प्यार।

सेवा सुश्रूषा के उपरान्त निद्रा-समाधि।

आज 29 मई। एक भक्त को किसी एक दिन सूर्योदय से सूर्यास्त पर्यन्त एकान्त वास के लिए दूर जाकर रहने को कहा।

बाड़ी परिवर्तन की बात चल रही है।

डाक आने पर भक्तों के पत्र-पाठ हुए और पू० महाराज के निर्देशानुसार मम्मी, विभूति बाबू, धीरेन, कृष्णबन्धु और दिलीप बाबू को पत्र लिखे गए। पानी स्टोर करने के लिए ड्रम में पानी समाप्त हो जाने पर एक भक्त को फटकार लगाई— "ड्रम जिस उद्देश्य के लिए है, वह उद्देश्य ही पानी पूरा न रखने से डिफीट हो गया। ऐसी irresponsible mentality (दायित्वहीन मनोवृत्ति)से संसार करने जाओगे तो लोग तुम्हारे कपड़े फाड़कर पीट-पीट कर मार डालेंगे। "

बाबूलाल के घर से पाँच बाल्टी पानी लाया गया।

एक भक्त नवम भाग पाठ कर रहे हैं।

पूज्य महाराज मित्र साहब और मीरा के साथ घूमने गए। पापा और एक भक्त ने आरती आरम्भ की सात बजे। पाठ के समय पू० महाराज भी आ गए। बोले, "हरि महाराज स्वामीजी से कहने लगे, मठ क्यों करना? क्या दरकार? स्वामीजी बोले, हमारे-तुम्हारे लिए मठ की दरकार नहीं है। मैं देख रहा हूँ, परे हज़ार-हज़ार लोग आएँगे। वे हमारी तरह तपस्या लेकर रह पाएँगे नहीं। उनके लिए मठ है दरकार।"

अगले दिन पू० महाराज बाबूलाल से कह रहे हैं, "तुम्हारा बस यही दोष है कि तुम बात नहीं रख सकते। If you go to please everybody, you will be able to please none. (यदि तुम हर किसी को खुश करने चलोगे तो किसी को भी नहीं कर पाओगे।) तुमने

एस.डी.ओ. चौहान से घर खाली करवा लेने का कहा था। अब तक तो हुआ नहीं। हम तो कल शिफ्ट करने की सोच रहे थे।"

आज वाटर वर्क्स का पानी आया ही नहीं। इसलिए केवल पू० महाराज का ही स्नान हुआ। कल तो घर बदल ही लेना है। पापा बाबूलाल की दुकान से एक सेवक लेकर आए और पहले किराएदार चौहान का सामान निकलवा दिया और फिर उस घर को अच्छी तरह धोकर साफ़ कर लिया गया।

नैश आहार के पश्चात् एस.डी.ओ. वर्मा जी आए। पू० महाराज उनके साथ बांग्लादेश में हुए अत्याचारों पर चर्चा करते रहे। फिर प्रभाकर साहब की प्रोमोशन रुक जाने के कारण की बात हुई। वे श्री म ट्रस्ट के एक ट्रस्टी हैं। वर्मा जी ग्यारह बजे चले गए।

अगले दिन नूतन बाड़ी में सब सामान स्थानान्तरित किया गया। शाम पौने छः बजे पू० महाराज करबद्ध प्रार्थना कर रहे हैं, "चलो ठाकुर, उस घर। " क्या ही देदीप्यमान तेजस्वी मुखमण्डल! एक भक्त के साथ ही पू० महाराज नूतन बाड़ी आ गए। "मीरा" और पापा वहाँ पहले से ही थे। प्रवेश करते ही महाराज बोल उठे, "वाह, खूब उन्मुक्त स्थान। वहाँ तो नीचे जेल जैसा था। दिगन्तव्यापी आकाश! मनुष्य की क्षुद्रता का सद्य बोध हो जाता है यहाँ; और माँ-ठाकुर की सर्वव्यापकता का आभास सतत होता है यहाँ। जय गुरु देव, जय माँ, जय ठाकुर!"

आज है पहली जून। ध्यान-जप के बाद पू० महाराज तथा पापा घूमने गए। टाइम्स ऑफ इण्डिया के स्थान पर आज से दि ट्रिब्यून के लिए पापा ने कह दिया। पूर्वाह्न में श्री म दर्शन नवम भाग का पाठ हुआ। आज बाबूलाल जी के यहाँ उनके अनेक सम्बन्धी जन आए हुए थे। उनमें से अनेक ही पू० महाराज को एक-एक करके प्रणाम करने आए। सन्ध्यारती में विजय बाबू भी सम्मिलित हुए।

पर दिन। पू० महाराज बहुत गर्मी महसूस कर रहे हैं। दोपहर में कहने लगे, "दमघोटा गर्मी है आज। " जवाकुसुम तेल उनके सिर में मला गया। एक भक्त आहार के बाद लेट गए और सो गए। पू० महाराज को

पान देना नहीं हुआ। इस पर वे बोले, "इस मनोदशा से साधु हुआ जाएगा कैसे? जिस काज का भार तुम पर है, उसे मरणपण से भी पूरा करोगे। ना कर सको तो अन्य को सौंप दो। तुम्हारी पर्सनैलिटी में यह एक भारी डिफैक्ट है कि अन्य कोई नूतन काज उपस्थित होने पर नित्यकार कर्त्तव्य भूल जाते हो।"

मम्मी को पत्र लिखने के बाद श्री म दर्शन नवम भाग का पाठ हुआ। कोटला नाला से दो बाल्टी जल लाया गया।

सन्ध्यारती में बाबूलाल ने प्रश्न किया, सीता तो चुराई रावण ने; तो भगवान ने सारे कुल को ही क्यों नष्ट कर दिया। केवल रावण-रावण का वध करना चाहिए था। महाराज बोले, "जो अधर्म का पक्ष ले, वे सभी वध्य। द्रोणाचार्य, आचार्य, भीष्म सभी ने अधर्म का पक्ष लिया। इसलिए वे भी वध्य।"

अगले दिन एक भक्त का सम्पूर्ण दिन निर्जनवास। पापा ने मम्मी को पत्र लिखा कि वे मीरा को साथ लेकर पाँच तारीख को चण्डीगढ़ आएँगे। जंगल में आग लगने के कारण दूधवाला दूध देने नहीं आया। पू० महाराज, पापा, मीरा डॉ० डे की कन्या के जन्मदिन के उपलक्ष्य में उनके निवास पर गए। एक भक्त ने अकेले ही संध्यारती की।

पाँच जून को पापा, मीरा प्रात: आठ की बस से चण्डीगढ़ चले गए। पू० महाराज और एकजन भक्त भी उन्हें सोलन के बस स्टैण्ड छोड़ने गए। वापसी में बाज़ार से कुछ खरीददारी की गई। अपराह्न में रवि नाम के एक कलाकार पत्नी सहित आए। मन में भारी विक्षोभ और अशान्ति। आँख की दृक्शक्ति क्षीण। पू० महाराज से अनेक परामर्श आदिग्रहण करके वे प्रफुल्ल चित्त होकर चले गए।

अब नवम भाग का पाठ हो रहा है। तत्पश्चात हुआ पत्र-पाठ। आरती में विजय बाबू आए। पू० महाराज बोले, "गृहस्थ में श्री म को आदर्श करना ही होगा। अपने किसी सगे सम्बन्धी के प्रति उन्होंने लौकिक प्रेम दर्शाया नहीं। पौत्र का विवाह मॉर्टन स्कूल में ही हुआ। वे गए नहीं।

छत पर भक्तों को लिए कथामृत चर्चा करते रहे और अभ्यागत भक्तों को ठाकुरवाणी सुनाते रहे।"

नैश आहार के बाद सेवा-समय में बोले, "मम्मी में हैं तीन गुण— (1) मनमुख एक है (2) परोपकार के लिए सदा प्रस्तुत हैं (3) अवतार में अटूट विश्वास है। ये सब अन्तिम जन्म में होता है। साधुओं की तपस्या भी मन-मुख एक करने के निमित्त ही होती है। उन्हें वह जन्म से ही प्राप्त थी, गतजन्म की बहु तपस्या के फल से।"

अगले दिन पू० महाराज प्रात: के ध्यान-जप के बाद अकेले ही राजगढ़ रोड पर सैर करने गए। साढ़े आठ बजे लौटकर प्रात: आहार के बाद कुछ विश्राम किया। तत्पर मम्मी को एक पत्र डिक्टेट करवाया, बीच-बीच में बारिश होती रही।

डाकिया जो डाक बरामदे में डाल गया था, वह गीली हो गई। एक भक्त से कहने लगे, "डाकिये के समय का ध्यान रखना चाहिए था। यत्न से डाक पहले ही उठा लेते। चारों तरफ दृष्टि रखनी होगी। जा, ब्लाटिंग पेपर से सुखा कर थोड़े गर्म तवे पर रख दे और पलटता रह। जब सूख जाए तो देखते हैं कि कुछ पढ़ा जाता है कि नहीं।"

सन्ध्यारती के पश्चात् बाबूलाल जी आए। अपने मन का अशान्त भाव साधु के सामने अकपट भाव से रखकर उन्हें काफी रिलीफ मिला है। उन्होंने अपने साले रोशन लाल की बात भी की। महाराज ने उन्हें कुछ कठोर होकर सांसारिक व्यवहार के लिए परामर्श दिया। उसके बाद मम्मी के तीन जून, 1972 के चण्डीगढ़ से आए पत्र का पाठ हुआ। बाबू लाल रात्रि ग्यारह बजे चले गए।

अगले दिन पूर्वाह्न में श्री म दर्शन के नवम भाग के पाठ के साथ-साथ बड़े अमूल्य के पत्र का भी पाठ हुआ। बड़े अमूल्य श्री म दर्शन में उल्लिखित एकजन भक्त हैं। सन्ध्यारती के परे बाबूलाल जी आए। महाराज उनसे कहने लगे, "साधुसङ्ग है नितान्त आवश्यक। नित्य साधुसङ्ग से असीम बल, साहस आएगा। संसारी धूर्त्तों से बड़े कौशल और दृढ़ता से बचाव करना होगा। दरकार होने पर फुंकार भी करोगे।" श्री बाबूलाल जी

के एक अतीव निकट आत्मीय सम्बन्धी महास्वार्थ-पर हैं; पू० महाराज उन्हीं सावधान रहने के लिए कह रहे हैं। बाबूलाल जी पौने ग्यारह बजे प्रशान्न एवं प्रसन्नचित्त होकर चले गए।

रात्रि सेवा-समय में 'मीरा' के भविष्य-जीवन की चर्चा हुई। "ठाकुर ने समग्र परिवार में प्रवेश किया है। वे ही सम्बल हैं। मीरा को अभी-अभी शिमला में आया स्वप्न उसे भरोसा दे रहा है। काशी राम की बाड़ी भली थी नहीं। ठाकुर कहाँ से बाबूलाल को ले आए और इस खुली जगह का प्रबन्ध हो गया।"

पर दिन पू० महाराज के ट्रांजिस्टर के तीनों सैल बदले गए। आज एक भक्त ने पूरे मन से परिष्कारादि सम्भवत: नहीं किया। ठाकुरों की छवियों के सम्मुख फूल भी एलोमेलो से रखे हुए थे। महाराज कहने लगे, "इस मन से कैसे उनको एकाग्रता से पुकारोगे? दैनिक कार्यों में यदि ऐसा चित्त चाञ्चल्य होगा तो ध्यान-जप में निरन्तर एकाग्रता होगी कैसे?"

अपराह्न में पू० महाराज ने मम्मी के लिए एक पत्र डिक्टेट करवाया। उसके बाद श्री म दर्शन के पञ्चदश भाग की पाण्डुलिपि में अध्यायों के सैक्शन बनाए गए। नवम भाग के पाठ में पार्वती मित्र के यहाँ साधु नाग महाशय के जन्मोत्सव का प्रसङ्ग पढ़ा गया। आरती में बाबूलाल जी के यहाँ से आया विवेक नाम का बालक सवा घण्टे स्थिर होकर बैठा रहा, देखकर सभी आश्चर्यान्वित हुए। वैसे यह बालक अन्य समय अनेक शरारतें करता है। बाबूलाल जी के आने पर महाराज ने उनसे मम्मी के लिए एक पलंग की व्यवस्था करने को कहा। उन्होंने उत्तर दिया, "उनके लिए तो नया तख्तपोश दूँगा।"

आज है दस जून, शनिवार। ध्यान-जप के उपरान्त प्रात: भ्रमण से लौटते हुए महाराज नेहरू पार्क से अनेक पद्मकरवी पुष्प ले आए। ठाकुरों को अर्पण किए गए। अब रेडियो पर समाचार सुन रहे हैं और प्रातराश ले रहे हैं। एक भक्त को विजया प्रभाकर के लिए पत्र लिखवाया। अपराह्न में 'मुञ्जादिव इषिकां' का अर्थ समझाया— "मुञ्ज-पुष्प जैसे खिंचते ही समूल उखड़ आता है, वैसे ही गुरुजन इस देह से आत्मा को अलग करके आनन्द

सागर में छोड़ देते हैं।" बाबूलाल के साथ एक नीलाक्ष नाम का दस वर्षीय बालक आया, पू० महाराज उसके साथ फष्टि-नष्टि (हँसी-मज़ाक) कर रहे हैं।

अगले दिन रविवार को पू० महाराज ने लखनऊ के निर्मल भैया तथा प्रीति को चिट्ठी लिखवाई और उसकी प्रति रख ली गई। पूर्वाह्न में सिर पर जवाकुसुम तेल लगवा कर पू० महाराज ने पन्द्रहवें भाग की पाण्डुलिपि में अध्यायों के नामों को अन्तिम रूप दिया तथा अध्यायों को सैक्शन्ज़ में विभक्त कर दिया।

रात्रि-सेवा के समय पू० महाराज ने अभय बाबू की अनुशोचना की चर्चा की। "अब वह पश्चाताप की अग्नि में जल रहा है। "

पर दिन सोमवार। महाराज को जवाकुसुम तेल की मालिश की गई। आज भीषण गरम है। पू० महाराज ने विभूति बाबू और मम्मी को पत्र लिखवाए। अखबार वाला प्रमादवश हिन्दुस्तान टाइम्स डाल गया।

पू० महाराज प्लमकुञ्ज में बैठे पन्द्रहवें भाग का अध्याय विभाजन देख रहे हैं। आहार का समय उपस्थित होने पर भी उन्हें एकाग्रचित्त होकर किसी अन्य ही लोक में सानन्दे विचरण करते देखकर एक भक्त की हिम्मत नहीं हुई कि उन्हें आहार के लिए कहें। वे मूक खड़े रहे। पू० महाराज का जब उधर ध्यान गया तो बोले, "आहार का समय हो गया था तो कहा क्यों नहीं? नइले एकटू बकूनि खेले भालोइ होतो (ज्यादा से ज्यादा कुछ डाँट ही पड़ती; सो भी भला ही होता)।"

श्री म दर्शन के नवम भाग का पाठ हुआ। आरती में विजय जी तो आए ही, उनके साथ बाबूलाल भी अपने वृहत् परिवार सहित सम्मिलित हुए। पू० महाराज कह रहे हैं, "ठाकुर के शरणागत होने पर ही अभय। अवतार लीला में विश्वास अन्तिम जन्म में होता है। मम्मी का वह हुआ है।"

अगले दिन मंगलवार को विभूति बाबू का इन्श्योर्ड पार्सल आया जिसमें पू० महाराज के लिए एक जोड़ा धोती, एक तौलिया, एक जोड़ी जुराब, जरदा, झामा आदि प्राप्त हुए। आरती में नीलाक्ष, पिंकि, बाबूलाल

और उनका छोटा बालक आए। विजय को दस रुपए ठाकुर महाप्रसाद के लिए दिए गए। मम्मी शुक्रवार को आ रही हैं।

पू० महाराज के वस्त्र प्रक्षालन के बाद गेरुआ रंग दिया गया। उन्हें हल्का गेरुआ ही अच्छा लगता है। गेरुआ प्रगाढ हो जाए तो उस वस्त्र को कोसे साफ पानी में से एक-दो बार निकाल कर रंग हल्का करना होता है।

पू० महाराज पञ्चदश भाग के अध्यायों के सैक्शन्ज़ का विभाजन कर रहे हैं। तभी कान्ता जी कुछेक महिला भक्तों को लेकर आ उपस्थित हुईं। पू० महाराज ने उन्हें श्री म के जीवन चरित के कियदंश सुनाए। तत्पर उन्हें मम्मी के 'आगे ईश्वर परे सब' सम्बन्धी प्रयासों से अवगत कराया। फिर नवम भाग पाठ हुआ। आरती में विजय जी भी सम्मिलित हुए।

आज 16 जून, शुक्रवार। आज से दूध प्रतिदिन दो किलो आएगा। भक्त प्रात: साढ़े सात बजे बस स्टैण्ड, सोलन पहुँच गए। मम्मी आ रही हैं। बस पौने आठ बजे आनी थी। नौ तक नहीं आई। एक भक्त लौटने के लिए कहने लगे। तुरन्त धमक दी— heartless creature (हृदयहीन प्राणी)! एक ड्यूटी लेकर दो घण्टे रुक नहीं सकते। मिलिट्री डिसीप्लिन की तरह बिना रहे धर्म-जीवन होगा कैसे? यह देहसुख लेकर आगे क्या होगा?

बस नौ बजकर चालीस मिनट पर आ गई। मम्मी के साथ 'मीरा' भी हैं। सवा दस बजे सभी आश्रम पहुँचे। आहारादि हुआ। विजय जी की पत्नी मंजू आज भी ठाकुर-प्रसाद देने आईं हैं। उन्हें भी चण्डीगढ़ आश्रम का आम्र प्रसाद दिया गया।

बाबूलाल जी आए। पू० महाराज और मम्मी को देखते ही 'हाऊ हाऊ' करके सुबकने लगे। उनका पूर्ववर्त्ती किराएदार एस.डी.ओ. वर्मा से कोई कलह हुआ था। पू० महाराज उसे धीरज बँधा रहे हैं और बाल गोपालों के साथ आनन्द मनाने को कह रहे हैं। उनके चले जाने पर मम्मी से कहा— "उसके लिए रात ठाकुर से प्रार्थना की थी कल्याण जन्य, जैसे ठाकुर ने की थी माथुर जन्य।"

अगले दिन एक भक्त को गीता देकर दिन भर के लिए एकान्त सेवन के लिए भेज दिया और बीच बीच में गीता पाठ के लिए कह दिया। भक्त सन्ध्यारती से पूर्व लौट आए। पू० महाराज तथा मम्मी खूब क्लान्त हैं। मीरा ने भजन गाया— तेरे फूलों से भी प्यार, तेरे कांटों से भी प्यार। पू० महाराज को दस्त लगे हैं। मैक्साफॉम की दो गोलियाँ तथा ईसबगोल, दही, केला दिया गया।

अगले दिन सुबह दस बजे डॉ० डे को सूचना देकर बुलवाया गया। वे कोई सल्फा ड्रग लेने को कह गए। एक गोली लेने से ही पू० महाराज को गले में भी भीषण जलन होने लगी। उन्होंने और गोली नहीं ली। अधिक जल सेवन के कारण अनेक बार वाशरूम जाना पड़ा। वे अधिकांश समय लेटे ही रहे। एक भक्त ने अकेले ही सन्ध्यारती की। रात्रि-सेवा के समय भजन गाए गए।

अगले दिन सोमवार। बाबूलाल का यह घर अगले पाँच साल के लिए अनुबन्ध पर किराए पर लेने की बात उठी। अनेक चर्चा के बाद प्रस्ताव स्थगित कर दिया गया।

आज 20 जून। पू० महाराज कुछ स्वस्तिबोध कर रहे हैं। डाक आने पर अभय भट्टाचार्य, पापा, प्रमोद दीक्षित के आए पत्र मम्मी ने पू० महाराज को पढ़कर सुनाए। तत्पश्चात् उन्होंने प्रबुद्ध भारत से ब्र. भूमा चैतन्य का लिखा 'स्वामी अद्भुतानन्द' लेख पढ़ा। अभय की चिट्ठी पढ़े जाते समय पू० महाराज ने अपने बारे में बताया, "मेरे माता-पिता ने मुझे श्री जगन्नाथ से अनेक प्रार्थनाओं के उपरान्त पाया था। मेरी दादी जी ने मेरा नाम रखा 'जगत्बन्धु'। माँ कहने लगीं, 'अनुकूल' नाम उचित है। पिताजी ने भी उसका अनुमोदन किया। स्कूल में प्रवेश लेते समय मुझसे नाम पूछा गया तो मैंने कहा, 'जगबन्धु'। तब से जगबन्धु ही है।"

पर दिन बुधवार। पू० महाराज के दस्तों में आराम नहीं आया। कल भी दस-बारह बार जाना हुआ। आम्र-भोजन सम्भवत: इसका कारण रहा।

पूर्वाह्न में बाबूलाल जी आए। उन्होंने अभी-अभी एक सांसारिक संकट झेला है। पू० महाराज उसे स्मरण दिलवाते हुए कह रहे हैं, "देख

लिया और जान लिया कि असली बन्धु कौन है। तुम्हारे संकट के समय कौन तुम्हारा अपना हुआ और सहायता के लिए कौन काम आया! वही ईश्वर ही है हमारा अनन्तकाल का बन्धु। उसी ने हमें इस विपद् से निस्तार दिलवाया है। मम्मी भी इस खोखले सांसारिक जीवन से उसी अनन्तकाल के बन्धु का सहारा लेकर मुक्त होती जा रही हैं। तुम भी उसी तरह आनन्द का सदा उपभोग कर सकते हो। "

पू० महाराज ने आज प्रातराश लिया नहीं। मम्मी ने जिद करके चार थ्रैष्टिन बिस्किट और केला दे दिया। अचानक तख्त पर लेटे-लेटे मम्मी से कहने लगे, "तुम मेरा मृत्यूत्सव करो। साधुजन देहत्याग से पूर्व ही निज भण्डारा कर लेते हैं। आज मेरा आनन्दे मृत्यु दिवस मनाना उचित।" भक्त को अचानक स्मरण हुआ, आज है गंगा दशहरा, पू० महाराज की जन्मतिथि।

डे साहब का कम्पाउण्डर पू० महाराज को एक इन्जैक्शन लगा गया। सप्ताह में दो लगेंगे।

प्रथम मम्मी द्वारा कथामृत पाठ किया गया, तत्पर एक भक्त द्वारा श्री म दर्शन, नवम भाग। मम्मी भी अस्वस्थ हैं।

अगले दिन है बृहस्पतिवार। आज महाराज चार दिन बाद प्रात: भ्रमण के लिए गए जवाहर पार्क की ओर। लौटते हुए जवाकुसुम पुष्प लाए ठाकुरों के निमित्त। रेलवे विभाग में कार्यरत डॉ० सत्येन मजूमदार आए। तीन दिन रहेंगे। बिना पूर्वसूचना के आने पर उन्हें डाँट-प्रसाद मिला।

अगले दिन डॉ० सत्येन के होने के कारण एकजन भक्त का सम्पूर्ण निर्जनवास हुआ। वे सुबह जाकर शाम को सात बजे लौटे। डॉ० सत्येन ने आश्रम-संचालन का सब भार ले लिया था। अगले दिन भी भक्त का सम्पूर्ण निर्जनवास प्रात: आठ से रात्रि आठ बजे पर्यन्त हुआ। लौटकर भक्त ने अपना एक अज्ञात भय बताया। महाराज कहने लगे, "साधुसंग से क्रमश: निर्भय हो जाता है।"

कल रविवार से मम्मी प्रात: साढ़े नौ से दस बजे तक नियमित रूप से श्री म दर्शन दशम भाग पाठ किया करेंगी। कल और आज में भूमिका तथा प्रथम अध्याय का पाठ हो चुका है।

आज है रविवार, सोलन मेला, 25 जून। प्रात: भ्रमण से लौट कर महाराज कहने लगे, "आश्रम में दो वेला आहारादि होता है। रान्ना-टान्ना (खाने-वाने) के लिए दो घण्टे से अधिक समय नहीं लगना चाहिए। शेष समय जप-ध्यान-पाठ-स्वाध्याय। "

डॉ० सत्येन शिमला जाएँगे और वहाँ से चण्डीगढ़ जाकर दो-तीन दिन वहीं रुकेंगे। उन्होंने विदा ली नौ बजे।

आज टोडो ग्राऊण्ड में लोके लोकारण्य। मम्मी ने दशम भाग का और एक जन भक्त ने नवम भाग का यथासमय पाठ किया।

आज सोमवार। पेट खराब होने के कारण पू० महाराज ने केवल खिचड़ी और दही ही ली। एक भक्त विजय घोड़इ के घर ठाकुर-प्रसाद बनाना सीख आए। श्री म दर्शन नवम-दशम भाग का पाठ किया गया। सन्ध्या-सैर के समय मम्मी ने कमज़ोरी महसूस की तो रास्ते से लौट आए और आकर विश्राम किया।

मंगलवार को रात्रि से वर्षा होती रही। घर टपक रहा है। महाराज सैर को नहीं गए और न ही स्नान किया, केवल हस्तमुख-प्रक्षालन। मीरा कोटला नाला से पानी लाई। एक भक्त महाराज के लिए सरकारी हस्पताल से कारमिनेटिव मिक्सचर लाए। दौलतराम नाम का कम्पाउण्डर महाराज को ट्राई-एनर्जी का और मम्मी को ड्यूराबोलिन का इन्जैक्शन लगा गया शाम छ: बजे। मम्मी ने छ: बजे से सात बजे तक श्री म दर्शन दशम भाग पाठ किया, एक भक्त ने किया नवम भाग। शयन पूर्व महाराज ने एक पाचक दवा 'डिलाइजन' ली और गरारे किए। रात्रि-सेवा सवा दस बजे सम्पन्न होने पर सभी जन शयनार्थ चले गए।

बुधवार को 'मीरा' जी प्रात: 7.20 की बस से चण्डीगढ़ चली गईं। सोलन आश्रम के खर्च के विषय में चर्चा हुई। एक भक्त आज भी विजय के घर ठाकुर-प्रसाद बनाना सीख आए और उन्हें 35 रुपए में

श्री श्रीरामकृष्ण कथामृत (बंगला) के पाँचों भाग भी दे आए। आकाश स्वच्छ, रात्रि में पू० महाराज ने सप्तर्षि और ध्रुव दर्शन करवाया।

आज बृहस्पतिवार। समाचारों में सुना गया कि भुट्टो-इन्दिरा वार्त्ता आरम्भ हुई है। अगले दिन पू० महाराज को तीसरा इन्जैक्शन लगा। शनिवार को प्लमकुञ्ज में पत्र पाठ हुआ। पू० मम्मी के सबसे छोटे दामाद सतिन्द्र भैया अस्वस्थ हैं। पू० महाराज के वस्त्र प्रक्षालित किए गए। सन्ध्या वेला में मम्मी ने दशम तथा एक भक्त ने नवम भाग श्री म दर्शन पाठ किया। तभी श्रीमती डे तथा श्यामली जी पू० महाराज से मिलने आए। हमें गम्भीरभावे व्यस्त देखकर वे बिना मिले बाहर से ही चले गए।

आज दो जुलाई। प्रात:कालीन प्रणाम, जप, ध्यानादि के उपरान्त वर्षा थमने पर पू० महाराज साढ़े छ: बजे जवाहर पार्क की ओर सैर करने गए। बाबूलाल आज अनेक खिन्न हैं। मम्मी ने उन्हें रविवार को चण्डीगढ़ जाकर एकान्तवास करने को कहा। बाबूलाल जी ने कहा कि वह हमारे जाने के बाद यह स्थान किसी और को किराए पर नहीं देगा।

सन्ध्यारती के समय सिस्टर निवेदिता की चर्चा हुई। कैसे उन्होंने गोपाल माँ की गोद में सिर रखकर देह-त्याग किया।

तीन जुलाई को पू० महाराज के शेष सभी वस्त्र प्रक्षालित किए गए। आङ्गन में ही घूमते-घूमते मम्मी से बोले, "सोचता हूँ कि सभी ट्रस्टीज को तथा शुभचिन्तकों को एक प्रपत्र द्वारा सूचित कर दूँ कि विशेषज्ञों के परामर्श से यह निर्णय लिया है कि 'M. Memorial Trust' की रूपरेखा सम्पूर्णरूपेण बदल कर एक जन 'दीदी जी' के हाथों सौंप रहा हूँ। आजकल बेताला विजातीय लोक देखकर मैं अन्य ही प्रकार का हो जाता हूँ और छटपट करने लगता हूँ। "

बाबूलाल की दु:खपूर्ण वर्तमान अवस्था से निजात के लिए उसके परम कल्याणजन्य प्रार्थना की गई। आरती में हिन्दी श्री म दर्शन द्वितीय भाग का भी पाठ हुआ, माया प्रैस इलाहाबाद से छपा है। पाठ में आया, अवतार को देखने से ईश्वर को ही देखना हो जाता है। मम्मी बोलीं, "और

अवतार के बालक को देखने से ईश्वर के बालक को ही देखना हो जाता है।"

अगले दिन मंगलवार को महाराज को चौथा इन्जैक्शन लगा और मम्मी को दूसरा। दौलत राम लगा गया सुबह पौने सात बजे।

पूर्वाह्न में पाठ के समय पू० महाराज बोले, "श्री म पैदल-पैदल दक्षिणेश्वर जाया करते। उसे स्मरण करके अब की बार मैं भी ऋषिकेश में श्री म की तपस्या कुटीर में पैदल गया। सोचा था टैक्सी करके या शेयर की घोड़ागाड़ी में शिवानन्द घाट तक चला जाऊँगा। गाड़ी या टैक्सी तो मिली नहीं, सो पैदल ही गया। गंगा के किनारे-किनारे जाना हुआ। कुछ-कुछ टिपाटिपी, बून्दाबान्दी हो रही थी, तभी कहीं रुका नहीं। आशंका थी कि वृष्टि आने पर फिर कहीं जाना ही न हो। रास्ते में गिर गया। गर्म जामा उलझ कर फट गया। गिरा ऐसे कि चोट नहीं आई। तब फिर उठा और लम्बे रास्ते से वापिस आया। एक घण्टा भीषण वर्षा हुई, घाट पर ही बैठा रहा। फिर नाव से गङ्गा पार हुआ। बारिश होने से सवारी फिर नहीं मिली, सो आना भी पैदल ही हुआ। केष्ट बन्धु महाराज मुझे अपने स्थान पर न पाकर मेरी प्रतीक्षा में बाहर ही टहल रहे थे।"

एक भक्त अपने शोध कार्य के उपलक्ष्य में 6 जून को चण्डीगढ़ गए और 9 जून को शाम पाँच बजे लौटे। अगले दिन इलाहाबाद से हिन्दी श्री म दर्शन द्वितीय भाग का बिल आया :

हिन्दी श्री म दर्शन भाग दो	...	5909.00
अंग्रेज़ी श्री म दर्शन भाग एक तथा रिपोर्ट	...	6243.70
		12152.70
लैस (–)	...	4000.00
		8152.70

आज 11 जून श्री जगन्नाथ-आलिंगन दिवस। प्रातः प्रणाम, ध्यान, जपादि के बाद पू० महाराज राजगढ़ रोड बाज़ार की ओर सैर को गए और

जेबों में खूब फूल लाए, बालक जैसे बेर तोड़कर जेब भर लेता है। कहने लगे, "ठाकुर को फूल न दिए हों तो मुझे बड़ा वैसा-वैसा लगता है।"

मम्मी सैर करते-करते राजगढ़ रोड पर श्री जे०एल० सहगल की बेटी सुशीला कपूर के घर चली गईं। वर्षा आ जाने के कारण एक घण्टा वहीं रुकना पड़ा। आज मंगलवार को वहाँ कीर्त्तन है कोटला नाला मन्दिर में। शुक्रवार को इनके घर शाम 3 से 5 कीर्त्तन होगा। मम्मी ने श्री म दर्शन पब्लिकेशन के इतिहास की बात की। दोपहर लगभग डेढ़ बजे आश्रम आ गईं। मध्याह्न आहार हुआ। टपक रही छत से बीच-बीच में पानी के टपकने की टपक-टपक ध्वनि को सुनकर मम्मी कहने लगीं, "देखो, देखो, अमृतवर्षा। रात-दिन 'अमरनाथ' के संग हैं— सोलन आश्रम-अमरनाथ धाम।"

अपराह्न में मम्मी ने लगभग एक घण्टा श्री म दर्शन के दसवें भाग का पाठ किया— 30 नवम्बर, 1924 ईसवी। आरती में 23 जुलाई, 1885 का श्री श्रीरामकृष्ण वचनामृत का पाठ तथा श्री म दर्शन हिन्दी के द्वितीय भाग का 'सबसे बड़ा दान— प्रेम दान' का पाठ हुआ।

आज 12 जुलाई, बुधवार। आज है रथ यात्रा (सोजा रथ)। पू० महाराज का मुण्डन किया गया कैंची से। गत कल तीसरा इन्जैक्शन मम्मी को और छठा पू० महाराज को लगा था।

मम्मी ने दसवें भाग का अन्तिम अध्याय पाठ किया। कल से 11वें और 12वें भाग के छप कर आए फर्मों को पढ़ा जाएगा।

अगले दिन श्री म ट्रस्ट की मीटिंग 3 सितम्बर को रखने का निश्चय हुआ। प्रवेश जी को अपनी कन्या के लिए उपयुक्त वर मिल गया है— कैसे क्या-क्या करना होगा, उसी की चिन्ता रहती है।

मम्मी कल यहाँ सुशीला कपूर के निवास पर शाम को लगभग साढ़े तीन बजे जाएँगी, साप्ताहिक सत्संग के निमित्त।

संध्यारती में 'ठाकुर को अपना बनाना होगा' पर महाराज दो-तीन मिनट बोले। बाबूलाल जी आए। गत वर्ष इन्हें वचनामृत प्रथम भाग

तथा श्री 'म' दर्शन का प्रथम भाग पढने के लिए दिए गए थे। पढ़ने के बाद आज वे एक-दो जिज्ञासाएँ लेकर आए हैं।

शुक्रवार। पू० महाराज ने स्वामी धर्मेशानन्द जी और अभीष्टानन्द (केष्टोबन्धु) जी को बंगला में दो पत्र एक भक्त को डिक्टेट करवाए। उधर मम्मी ने भी पाँच पत्र— इन्द्र भैया, सुरेश भैया, 'पापा', अभय भैया और पद्मा जी को लिखे। डॉ० सत्येन और खोका महाराज को बाद में लिखेंगी। एक भक्त से महाराज के दोनों पत्रों की नकल करने को कहा। भक्त दूसरे पत्र की नकल करने में कुछ अनिच्छुक दिखाई दिया तो बोलीं, "इसमें आश्रम की हिस्ट्री है— प्रथम साक्ष्य है— नकल करके रख लो। और देखो, आलस्य से ठाकुर दूर रहते हैं।"

पू० महाराज की स्वीकृति लेकर अपराह्न में मम्मी सुशीला कपूर के यहाँ सत्संग में गईं। छः बजे लौटकर उन्होंने पू० महाराज को रिपोर्ट दी— "22 जन स्त्रियाँ और दो बच्चे थे। रामायण पाठ हुआ, सत्य पालन पर चर्चा हुई। गीत, भजन हुए। श्री म-जीवन, ठाकुर, स्वामी विवेकानन्द के बारे में बताया। भक्त की धेवती दृष्टिहीन थी, इसलिए दुःखी थी। तभी 'नैराश्यं परमं सुखम्' पर ही कथावार्त्ता हुई। अर्जुन विषादग्रस्त नहीं होता तो विश्व को गीता जैसा अनुपम ग्रन्थ कैसे मिलता?"

पन्द्रह जुलाई को पू० महाराज को सातवाँ तथा मम्मी को चौथा इन्जैक्शन लगा। तपोवन के आलूबुखारे के पेड़ की शाखा कल टूटकर गिर गई थी। उसमें लगभग 20 बड़े बड़े आलुबुखारे लगे थे; वे तोड़ लिए गए और उनकी चटनी बना ली गई। एक भक्त ने गीता का सप्तम और अष्टम अध्याय पाठ किए— 20 मिनट। पू० महाराज ने शिबू की माँ और अमूल्य बाबू को दो पत्र एक जन भक्त से बंगला में लिखवाए और मम्मी ने वीणा जैन, राज मेहता, सुषमा, माया बहन जी, प्रवेश, विजया, विमला सागर, सरस्वती, प्रेम जीजी, ऊर्मि जीजी को स्वतंत्र रूप से कुल दस पत्र लिखे। विजय घोड़ई जलतोरी का ठाकुर-प्रसाद दे गए। पू० महाराज रेडियो से अपनी पॉकिट घड़ी का समय मिला रहे हैं।

शाम 4 से 6 तक मम्मी महिला सत्संग सभा के लिए सनातन धर्म मन्दिर में गईं। वे अपने साथ ठाकुर-चित्र, श्री म दर्शन हिन्दी के प्रथम तथा द्वितीय भाग और आरतियाँ ले गईं। लौटकर उन्होंने बताया कि वहाँ उन्होंने 'अवतार हुए श्रीरामकृष्ण' का गायन किया और श्री म का जीवन-चरित तथा उनकी साढ़े तीन बातें बताईं।

आज श्रावणी प्रथमा है, श्री म जन्म-पक्ष का प्रथम दिवस, 16 जुलाई। प्रात:कालीन ध्यान-नाम जप हुआ। एक भक्त ने गीता के नवम तथा दशम अध्याय पाठ किए। पू० महाराज रेडियो पर मानव धर्म की वार्त्ता सुन रहे हैं। मम्मी ने बताया कि कविता अधिकारी बेलुड़ मठ में अचानक ब्र० कल्याण चैतन्य (स्वामी पुण्यव्रतानन्द) जी से मिली हैं। श्री म दर्शन लिखने के समय ये तुलसी मठ, ऋषिकेश में थे। पू० महाराज को काली कम्बली वाले अन्नक्षेत्र से लाई गई भिक्षा की रोटियों पर घी लगा कर खाने को देते थे। अपने ही भाव में रहते थे। महाराज जब ऋषिकेश से बाहर होते थे तो कमरे के दोनों तख्त जोड़ लेते थे और बड़ी मसहरी लगाकर उसके अन्दर सारा-सारा दिन ध्यान-जप करते रहते थे।

श्री म जन्म-पक्ष का आज है दूसरा दिन, सोमवार। पू० महाराज आज सारा दिन किसी और ही जगत् में हैं— प्राय: मौन, अन्तर्मुखी, मुख जाज्वल्यमान! मम्मी श्री 'म' दर्शन के पन्द्रहवें भाग की भूमिका लिखवाने के लिए चिन्तित हैं।

अगले दिन पू० महाराज ने प्रात: साढ़े नौ बजे ही मम्मी को कहा, "दोनों खाते ले आओ।" डायरियाँ समझा रहे हैं। पन्द्रहवें भाग के दो अध्यायों की रूपरेखा बताई। "महापुरुष महाराज की बातें इस तरह देनी हैं कि जैसे श्री म को सुनाई जा रही हैं। कभी डायरी साथ ले जाता था, कभी जबानी कहता था। तुमने समझा हुआ होगा तो कर लोगी। समझ लो। महापुरुष की बातें वैसे ही श्री म को सुनानी होंगी जैसे स्वामी अभेदानन्द जी की मैंने सुनाई हैं। इन-इन डेढ़ पर मैं श्री म के पास गया हूँ।" यह कहकर पू० महाराज मम्मी से पढ़वा रहे हैं।

पू० महाराज थकावट महसूस कर रहे हैं। मम्मी कहने लगीं, "अब आराम करो।" 'हाँ' तो कहा, लेकिन आगे बताने लगे, "ये जो पैंसिल से लिखे हैं, ये नहीं लिखे गए हैं। पैन की लिखी डेङ्ग पहले पार्टस् में आ गई हैं। ठाकुर-अवतार की वाणी, अवतार ही आएँ तो लिखी जाती हैं।" मम्मी पैंसिल की लिखी डेङ्ग काट रही हैं। डेढ़ बज गया।

अपराह्न में चार बजे मम्मी कोटला नाला के शिव-मन्दिर में मंगलवार के कीर्त्तन के निमित्त चली गईं। 'ठाकुर सद्य अवतार' विषय पर उन्होंने प्राय: 40 मिनट प्रवचन दिया और 'सब का भला करो भगवान' तथा 'गुरुदेव दया कर दीन जने' गाकर कीर्त्तन की इतिश्री की।

दो आलूबुखारे के पेड़ों के बीच के लगभग तीन गज के स्थान को पू० महाराज के कथानानुसार तपोवन कहा जाता है। अधिकांश समय पाठादि यहीं होता है। अब श्री 'म' दर्शन का द्वादश भाग पढ़ा जा रहा है; अध्याय का शीर्षक है : पुरुषकार बड़ा दरकार।

आज श्री म जन्मोत्सव-पक्ष का चतुर्थ दिवस है; बुधवार, 19 जुलाई, 1972 ईसवी। पू० महाराज ने प्रत्येक आश्रमवासी से पूछा, ध्यान-जप में कितना समय बैठे। पू० महाराज को पन्द्रहवाँ भाग लिखवाने की चिन्ता है। आज लगभग डेढ़ वर्ष के अन्तराल के बाद 15वें भाग की पाण्डुलिपि प्रात: से तैयार करवानी शुरु होगी। महाराज प्रातराश के बाद विटामिन बी काम्पलैक्स, Detigon, कारमेनेटिव मिक्सचर आदि औषधियाँ लेकर सो गए।

ग्यारह बजे एक भक्त को पुकारा, "आय, एकटू लेखो।" मम्मी और एक भक्त प्रस्तुत थे ही। मम्मी पू० महाराज के सिराहने के पास एक पैकिंग बॉक्स के मूढ़े-से पर बैठ गईं और एक भक्त ठाकुर-आसन और खाट के मध्यस्थल पर भूमि पर लिखने के लिए प्रस्तुत हुए पू० महाराज के मुँह की तरफ़ देखने लगे। पहले पू० महाराज ने लेटे-लेटे ही ठाकुरों को करबद्ध स्मरण-प्रणाम किया और फिर रजिस्टर नम्बर सात मस्तक से स्पर्श करके प्रणाम किया। तत्पर वे लेटे-लेटे जो बोलते गए, एक पेटी पर रखे कागजों पर एक भक्त लिखते गए। प्राय: दो घण्टे बाद बोले, "एखन एकटि बाधा

भाँगलो। कार्य आरम्भ होलो। (इतने समय की एक रुकावट अब दूर हुई। काम शुरु तो हुआ।)"

मम्मी धन्यवाद मुद्रा में तुरन्त बोलीं, "अधिक थक गए हैं।" पू० महाराज प्रसन्नतापूर्वक कह रहे हैं, "ना, ना। पत्र लिखवाने में जितना होता है, उतना ही तो। भालोई लेगेछे (और फिर भला ही तो लगा है)।"

तत्पश्चात् आहार हुआ— खिचड़ी, फुलका, घीया तरकारी, आडू की चटनी और विजया जी के यहाँ से मीरा के हाथ आई चुकन्दर की सब्जी। अपराह्न में मम्मी और एक भक्त ने सुरेश बाबू, वेणी माधव सारन, एस०एन० सेन तथा सविता सेनगुप्त को पत्र लिखे।

सायं साढ़े पाँच बजे श्री म दर्शन के बारहवें भाग से पाठ हुआ— 'क्राइस्ट अस्तबले, ठाकुर ढेकी शाले।' सन्ध्यारती में पाठ हुआ वचनामृत तृतीय भाग का और हिन्दी श्री म दर्शन द्वितीय भाग का— 'इसी मुख से वे बातें करते हैं'।

रात्रि-सेवा के पश्चात् शयन।

आज श्री म जन्मोत्सव-पक्ष का पञ्चम दिन है। "एकटू-एकटू सामने आया, भक्त— सशस्त्र सैनिक-युद्धक्षेत्रे, सतर्क ओ संत्रस्त।" पू० महाराज सुबह से ध्यान-जप करते हुए यही बड़बड़ा रहे हैं। सैर के लिए प्रस्तुत हो रहे हैं; जूता पहनाए जाते समय कह रहे हैं, "अश्रद्धा से अकल्याण होता है। देखो ना, यतीन, रमणी, बड़े अमूल्य, केष्टो सरकार, शशि ब्रह्मचारी।"

पू० महाराज सैर को चले गए। एक भक्त से मम्मी कहने लगीं, "समझ लिया, कैसे अश्रद्धा से भक्त का अकल्याण होता है।"

पू० महाराज सैर से लौटे, दोनों जेबें फूलों से भरी हुईं। बालकवत् सभी आचरण हो रहा है। प्रातराश लिया प्रसन्नवदने, दवाएँ लीं प्रशान्त भावे; विश्राम करने के विचार से अग्रसर होने लगे। मम्मी से कहने लगे, "शरीर थक गया है। परे तुम नौबत से लिखवा लेना। कर लोगी। तुम बोलना। नौबत लिखेगा। सब कुछ रजिस्टर-डायरी में है। श्री म से सबने

कहा था, जैसी हैं, छपवा दो। उनकी डायरी वर्डस् में भी थीं। यह तो लिख रखी है। उनकी तो शोर्टहैण्ड में थी।"

अचानक प्राय: साढ़े ग्यारह बजे लिखवाने लगे। एक बज गया। पूर्णविकसित पद्मवत् प्रफुल्लवदने पूछते हैं, "क्यों माँ, कैसा हुआ?"

"जी, बहुत सुन्दर, उद्दीपक।" मम्मी ने तुरन्त कहा। पू० महाराज अतीव प्रसन्न हैं, मानो खोया धन मिल गया। आहार करते समय मन तो किसी और ही जगत् में है। मशीन की तरह आहार ग्रहण कर रहे हैं।

अपराह्न में मम्मी चार बजे पूज्य महाराज को मेहता बूट वालों के घर वीरवार के सत्सङ्ग के लिए गईं। प्राय: छ: बजे लौटीं तो पूज्य महाराज को बताया कि वहाँ 15-16 जन थे। एक जन ने ठाकुर-माँ की फोटो बड़े चाव से ली।

अब सन्ध्यारती हो रही है। श्री म दर्शन के बारहवें भाग का पाठ हुआ और वचनामृत के तृतीय भाग का, 18 अक्तूबर, 1885 का।

आज श्री म जन्म-पक्ष का छठा दिन है। पू० महाराज ने पूछा, नाम-जपादि कब से कब तक, कितना समय हुआ। तभी पहाड़ी छोटी ट्रेन के दर्शन हुए। आश्चर्य है हिमालय में नित्य शिव-दर्शन! सैर के लिए जूता पहनाया, साढ़े छ: बजे गए। जूते को कह रहे हैं, "कुछ दिन और चल जा।" पू० महाराज के सभी आचरण शिशुवत् हो गए हैं। मम्मी पत्र लिखते-लिखते बीच में ही उठीं और बोलीं, "जी, स्टिकिंग प्लास्टर लगा देती हूँ। महाराज गीता के 'प्रहसन्निव' की हँसी हँसे। "यहाँ पहाड़ में क्या चलेगा?" मुस्कुरा रहे हैं।

तभी वृद्धा ब्राह्मणी महेश्वरी आ गईं। महाराज को प्रणाम किया चरण स्पर्श करके। कुर्सी पर नहीं बैठीं। ये चारों धाम का चरणामृत, प्रसाद और भोज पत्र लाई हैं। ताम्र पत्र देना चाहा, महाराज ने वह लिया नहीं। ब्राह्मणी का पुत्र विश्वेश्वर एक पुजारी है।

तपोवन में साढ़े ग्यारह से एक बजे तक लेखन-कार्य हुआ। आहारान्ते विश्राम करते हुए पू० महाराज मम्मी से कह रहे हैं, "जीवन में

सब जन्म से पहले ही आयोजित है। विश्वास करना। सैर करते हुए सोचा था— ले क्यों नहीं जाते वे अब? सब उनकी इच्छा। काम पूरा होने पर ही तो ले जाएँगे।" पत्र लिखवाने की बात कही और पुरानी विल कैंसल करने की।

अपराह्न में मम्मी कीर्त्तन में गईं सुशीला जी के घर। साढ़े छ: बजे लौटकर बताया— लगभग 35 जन थे। 'ईश्वर को न जानना ही सबसे बड़ा दु:ख' विषय पर वहाँ चर्चा हुई।

अब सन्ध्यारती हो रही है।

आज श्री म जन्मोत्सव पक्ष का सातवाँ दिन है। दैव दुर्योग के कारण सैर को जाना नहीं हुआ। पू० महाराज आंगन में ही टहल रहे हैं। कह रहे हैं, "तपस्या क्यों? इसीलिए ना कि हर अवस्था में ही सन्तोष होगा कि ठाकुर संग हैं। शिव, शिव, हरि: ॐ, जय रामकृष्ण, जय रामकृष्ण।" थोड़ा टहलकर फिर कहते हैं, "शरीर अब सहता नहीं। जो सुना है, जो देखा है, पढ़ा है, वही लेकर रहो। "

आज लेखन-कार्य का चौथा दिन है। मम्मी और एकजन भक्त प्रस्तुत हैं। मन रम गया और पू० महाराज लिखवाते ही गए। मम्मी ने प्रथम 12:45 पर टोका। फिर कहा— सवा बज गया। दो बार कहने पर भी रुके नहीं। नर्वस (nerves) तो सहन कर पाती नहीं। दो बजे तक मन चढ़ा ही रहा। बिल्कुल थक कर सामर्थ्यहीन से होने लगे। एक भक्त जवाकुसुम तेल सिर में मलने लगे। कह रहे हैं, "सब ही तो काम करते-करते गए। कथामृत का अन्तिम अंश पूरा करते ही श्री म चले गए।"

आज डाक से 12वें भाग का छपा हुआ छठा फर्मा आया। पाँच पहले आ चुके थे। छठे फर्मे को भी पहले पाँचों के साथ एक जिल्द से सीकर मम्मी ने उसी के पृष्ठ 72 से 86 तक पाठ किए। पाठ किए जाते समय कह रहे हैं, "श्री म कहते, जब सामने मार्ग दिखाई न दे तो अपना जीवन जहाँ तक याद आए, पीछे देखो। उनका हाथ पीछे देखोगे। भरोसा मिलेगा। सैर में आज यही हुआ— 'उनकी इच्छा।' जो सुना था, श्रद्धा से लिखा था— अब सामने देख रहा हूँ।"

श्री म जन्मोत्सव-पक्ष का आज आठवाँ दिन है। सम्भवत: अर्धरात्रि से ही ध्यान-जप चल रहा है। बीच-बीच में 'जय रामकृष्ण, जय माँ' जोर-जोर से उच्चारण कर रहे हैं— 'जे राम जे कृष्ण इदानीं रामकृष्ण भी यदा कदा तारस्वर में बोल रहे हैं।' प्रात: लगभग छ: बजे पेड़ पर लगे आलूबुखारे देखकर कह रहे हैं— सद्व्यय में लगे हैं।

सैर के लिए कॉलिज की ओर जाने को प्रस्तुत हुए। मम्मी कह रही हैं, "दूर न जाना। " सैर से लौटकर प्रात: आठ बजे के समाचार सुन रहे हैं। भारत के मित्र भूटान के 53 वर्षीय राजा दोर्जी वाङ्चुक का नैरोबी में देहान्त हुआ है। दूर आकाश में दृष्टि निबद्ध है। क्या भाव रहे हैं?

प्रातराश। मम्मी को अपने आम से दो बार गूदा-गूदा प्रसाद दिया। दवा ली। विश्राम किया। मम्मी बाबूराम के यहाँ होकर आ गईं।

सवा ग्यारह से सवा बजे तक पन्द्रहवाँ भाग लेखन हुआ— दूसरे अध्याय का चौथा सैक्शन।

मध्याह्न आहार के समय मम्मी को कह रहे हैं, "अमृतसर वाले स्वामी विश्वप्रेमानन्द ने श्री म दर्शन सुना। कहा, दस हजार जमा करके दूँगा। इतिमध्ये शरीर ही चला गया। देख रहा हूँ ग्रुप के ग्रुप आए-गए। जिनसे काम लेना है, वे ही करेंगे। जब मन में यह आ जाए मेरा जन्म इसी सेवा कार्य के लिए हुआ है, तत्क्षण ही जीवन्मुक्ति। ईश्वर में भक्ति हुए बिना इधर आया नहीं जाता।"

पू० महाराज की पीठ में दर्द है। सिर में जवाकुसुम तेल मलवाया। दवाएँ लीं। शाम सवा छ: बजे डॉ० के०के० कपिलेश और रोशन लाल जी आए। दोनों से पू० महाराज और मम्मी कुछ परामर्श करते रहे। फिर क्रमश: सन्ध्यारती, आहार, सेवा, शयन आदि नित्य कार्य यथासमय सम्पन्न हुए।

श्री म जन्मोत्सव-पक्ष का आज नौवाँ दिन है। रात्रि एक बजे से पू० महाराज को निद्रा नहीं हुई। "माँ ब्रह्ममयी, माँ ब्रह्ममयी" उच्चकण्ठे बोल रहे हैं, लेटे हुए हैं, बाएँ हाथ में सुमरनी है। प्रात: छ: बजे, चेहरा उतरा हुआ है, बहुत ही थके-थके से हैं। मम्मी बोलीं, "दबवा दूँ?" बोले,

"कि होबे?" (क्या होगा?) रात्रि में अनेक बार वाश-रूम गए हैं। अचानक बोले, "बेड़ाते जाबो।"

जूता पहनाते समय पाँव उठाने में दिक्कत महसूस कर रहे हैं। छतरी ली, जाने को प्रस्तुत हुए। कॉलिज रोड की ओर उन्हें जाते हुए देखकर मम्मी एक भक्त से कह रही हैं, "देख देख। मन का जोर लिए चला जा रहा है। हमारा मन तो ऊपर उठता ही नहीं। यही सीखना है।" अब लौटने की राह देख रही हैं। आठ बजने में 5 मिनट थे, आए। हाँफ गए हैं। मम्मी ने छतरी पकड़ी और एक भक्त जूता खोलने लगे। कुर्सी का सहारा लेकर लेटते हुए बोले, "अब शरीर में शक्ति नहीं।" रेडियो लगा दिया गया। एक भक्त से बोले, "आज लिखवाने की छुट्टी।"

भीतर मेज पर प्रातराश लिया। नौ बजे बाहर आकर बैठे। मम्मी दवाएँ देने की तैयारी में हैं। तभी देखा मीरा थैला लिए आ रही है। तभी बोले, "अरे, गुड्डी आई मम्मी।" प्रवेश जी, उनकी बेटी रञ्जना तथा पति देव श्री धनराज बजाज भी आ रहे हैं। ये चारों चण्डीगढ़ से आए हैं। कल्याणीया रञ्जना जी सद्यविवाहिता हैं।

प्रवेश जी ने कहा, आज महाराज ठीक नहीं लग रहे। पसीना आ रहा है, दुर्बल हैं। महाराज अब निद्राविष्ट हो गए। मम्मी प्रवेश जी को कुछ घर दिखाने ले गईं। आज आए चारों भक्त आहारादि के पश्चात् चण्डीगढ़ लौट गए साढ़े तीन बजे।

आज श्री म जन्मोत्सव का दसवाँ दिन है। सुबह लगभग दो बजे एक भक्त ने अपने नाम की पुकार सुनी। वह समझा कि उठने में शायद विलम्ब हो जाने के कारण ध्यान-जप के लिए मम्मी आवाज दे रही हैं। भक्त तुरन्त हड़बड़ा कर उठा और हाथ मुँह धोने के लिए चल दिया। तुरन्त जल्दी आने की पुनः पुकार सुनी। भाग कर आया और देखा पू० महाराज गिरे हुए हैं जमीन पर। सीधा किया, लिटाया। संलग्न ही अपने घर में रह रहे मकान मालिक बाबूलाल जी को आवाज दी। उनकी श्रीमती कान्ता जी बोलीं, "वे नहीं हैं, मैं आ रही हूँ।"

मम्मी ने पू० महाराज की तरफ देखते हुए कहा, डॉ० डे को बुला लें? महाराज बोले, "हाँ, बुला लो। सुनो, कहना, स्वामी जी इज़ सिन्किंग।" मम्मी हाथ-पाँव मल रही हैं और एक भक्त डॉ० डे को बुला लाए। अब समय साढ़े तीन। डॉ० डे ने तुरन्त आधी इक्विनिल पीसकर बताशे में गर्म पानी से दे दी, कोरोमीन का इन्जैक्शन लगा दिया। पू० महाराज ने पाँव हिलाया, कुछ उठाया। शायद देख रहे हैं, प्राण कहाँ है।

पू० महाराज, "माँ ब्रह्ममयी, गुरुदेव, गुरुदेव, स्वामीजी, नानक, मुहम्मद, ईसा, रामकृष्ण" बोल रहे हैं। डॉ० डे से बोले, "डॉक्टर, मुझे पूरा ज्ञान है।" मम्मी से कह रहे हैं, "मम्मी, घबराओ नहीं। हरि ॐ रामकृष्ण कहती रहना। यह भक्त यदि चाहे तो एक कोरा कपड़ा (धोती) रंग कर, उसका आधा फाड़ कर आधे में से दो कौपीन फाड़कर दे देना और शेष चादर— पीछे कोई और चाहे तो इसी तरह करना— शिक्षा, दीक्षा, संन्यास, गुरु मैं ही होऊँगा— कहना, मुझे अनुमति दे गए हैं। घबराओ नहीं। ठाकुर-माँ मेरे संग हैं, तुम्हारे संग भी हैं, सर्वदा रहेंगे। वे करवा लेंगे जो करवाना होगा।" मम्मी ने भक्त के लिए उनका भावी संन्यास नाम भी पूछ लिया। वे बोले, "अमृतानन्द।"

एक भक्त डॉ० डे के संग सरकारी हस्पताल में स्थित उनके निवास स्थान पर गए और दवाइयाँ लेकर लौटे। दो गोलियाँ महाराज को तुरन्त दी गईं। अब प्रात: साढ़े चार। महाराज सो गए। सुबह सवा सात बजे डॉ० डे आए। ब्लड प्रैशर देखा, 180/100 मिला। यूरीन की रिपोर्ट ठीक आई है। डॉ० डे ने कम्पन की दवा भी लिख दी। एक गोली Neurofine-Forte हर रोज़ दी जाएगी। उन्होंने मम्मी से पूछा— "महाराज, ईसा, मुहम्मद, नानक, दक्षिणेश्वर आदि क्यों पुकार रहे थे?" मम्मी ने बताया— "ठाकुर ये सब हैं ना— सब सामने थे। एक ही ईश्वर था तब। आनन्दे, निश्चिन्ते प्रसन्न थे। हमें भी शान्त रखा।" डॉ० डे दो घण्टे बैठे रहे।

आहार मेज पर लिया। मम्मी के पूछने पर रात्रि बारह बजे लगभग बताया— ठीक हूँ। दुर्बलता बहुत है। गोली से कम्पन में आराम है।

श्री म जन्मोत्सव-पक्ष का आज ग्यारहवाँ दिन— 26 जुलाई, गुरु पूर्णिमा। एक भक्त के लिए यह अतीव महत्त्वपूर्ण दिन है। प्रात: 5 बजे पू० महाराज को मिल्क मिक्स्चर और चार थ्रेप्टिन बिस्कुट दिए गए। मम्मी की तबियत भी ठीक नहीं है। पू० महाराज ने उन्हें भी लेटे रहने को कहा और बोले, "ठाकुर हैं। सुनते हैं, देखते हैं, पुकारने पर सामने आते हैं और करणीय का निर्देश भी देते हैं।"

मम्मी सुशीला जी के घर कीर्त्तन के लिए चली गईं। वे आज प्रात: से ही गा रही हैं, "जोत से जोत जगाते चलो, प्रेम की गंगा बहाते चलो।" श्रीमती विजया प्रभाकर आ गईं। विजय घोड़इ की माता जी भी आईं। शाम साढ़े पाँच बजे डॉ० डे आए। कुछ बाद ही आए श्री एच०डी० घोष। पायस, नकुल दाना प्रसाद पाया गया। पापा के पत्र से पता लगा कि अंग्रेज़ी श्री म दर्शन प्रथम भाग का द्वितीय संस्करण का सारा स्टाक चण्डीगढ़ आ गया है।

श्री म जन्मोत्सव पक्ष का आज बारहवाँ दिन है। अति प्रत्यूषे ही पू० महाराज उच्च स्वर से 'जय गुरुदेव, जय गुरुदेव, जय गुरुदेव, जय स्वामीजी' कह रहे हैं और स्वयं एक-एक कण गंगाजल मुख में डाल रहे हैं। तबियत अच्छी लग रही है। सभी आश्रमवासी ध्यान कर रहे हैं— एक भक्त बाहर आङ्गन में, विजया जी रसोई की तरफ ग्लेज़ड वराण्डे में और मम्मी स्नानागार की दीवार के साथ कोने में ठाकुर घर की ओर मुख करके।

लक्कड़ बाज़ार से श्री प्रह्लाद चन्द बत्रा, श्रीमती लीला बत्रा और श्री मनोज बत्रा आए। ततपश्चात् क्रमश: सन्ध्यारती, नैश आहार, सेवा, शयन।

श्री म जन्मोत्सव के तेरहवें दिन, 28 जुलाई को 'सब सुन्दर, सब आनन्दमय' का भाव रहा। मम्मी मल्होत्रा बिल्डिंग में सत्सङ्ग-कीर्त्तन के लिए गईं। डॉ० घोष साहब पू० महाराज को देखने आए।

अगले दिन प्रत्यावर्तन के निमित्त पैकिंग का काम शुरु हो गया। पू० महाराज का 'मधुराधिपते सकलं मधुरम्' का भाव चल रहा है। प्रातराश के बाद कह रहे हैं— "अब सब कुछ मधुर लगता है। यह है

उनकी ही लीला। क्रिटिसिज़म सब समाप्त कर रहे हैं। सब वे ही हैं— मधुर। ठाकुर कहते थे कि ना, माँ ही सब होकर रह रही हैं।" एक भक्त ने पान बनाकर दिया। पू० महाराज की कुशलक्षेम पूछने, जानने अनेक ही भक्त आए-गए।

आज श्री म जन्मोत्सव पक्ष का पन्द्रहवाँ दिन, 30 जुलाई, रविवार। समस्त आश्रम को फूलों-फलों से सजाया गया। नौ बजे से प्रात: दस बजे तक पूजा हुई। पू० महाराज, मम्मी, विजय घोड़इ, एक भक्त, बाबूलाल, कान्ता जी, प्रतीक, विवेक, मंजु आदि सभी ने बैठकर प्रसाद पाया।

डॉ० डे से पू० महाराज को दी जाने वाली दवाइयों का विवरण उनसे ही लिखवा लिया गया और समझ लिया गया।

पूर्वाह्न में दस बजे शर्मा आर्ट स्टूडियो से फोटोग्राफर सरदारी लाल जी आए और उन्होंने विजय, माँ कुलवाला, मंजु, उसकी बेटी उमा और एकजन भक्त की पू० महाराज के साथ फोटो खींची। पू० महाराज ने विजय की कन्या को दस रुपए दिए। शक्ति माँ जगदम्बा को प्रणामी अर्पण करके उसका अपरूप दिव्य दर्शन कर रहे हैं!

अगले दिन एक अगस्त, 1972 को सोलन से टैक्सी द्वारा प्रात: 9:30 बजे चलकर पू० महाराज, मम्मी और एकजन भक्त पौने बारह बजे चण्डीगढ़ आश्रम पहुँचे 18 सैक्टर। पापा और मीरा पू० महाराज को देख अतीव गद्गद् हो रहे थे और सौम्यदर्शन पापा का चेहरा तो एक हृदयस्पर्शी अहोभाव से ब्लश कर रहा था।

— डॉ० नौबतराम भारद्वाज

योगी-चक्षु

श्री रामकृष्ण (मणि के प्रति)— योगी का मन सर्वदा ही ईश्वर में रहता है, सर्वदा ही आत्मस्थ।चक्ष् अर्धनिमीलित, देखते ही पता चल जाता है ।जैसे पक्षी अण्डे सेता है— सारे का सारा मन उसी अण्डे की ओर ।ऊपर नाममात्र को देख रहा है ।

-'श्री श्री रामकृष्ण कथामृत' तीसरा भाग, दूसरा खण्ड, पहला परिच्छेद ।

24 अगस्त 1882

स्वामी विवेकानन्द

(1893-1902)

- घर का नाम : नरेन्द्रनाथ दत्त।
- जन्म : 12 जनवरी, सन् 1863 ईसवी।
- स्थान : सिमला मुहल्ला, कोलकता।
- माता-पिता : श्रीमती भुवनेश्वरी देवी और विश्वनाथ दत्त।
- शिक्षा : बी०ए० दर्शनशास्त्र में विशेष रुचि।
- गुरु : श्रीरामकृष्ण परमहंस।
- बेलूड़ मठ की स्थापना : फरवरी, 1898 ईसवी।
- महासमाधि : 4 जुलाई, 1902 ईसवी।

•

स्वामी विवेकानन्द और सेवा

[स्वामी ब्रह्मेशानन्द 10 वर्ष (सन् 2002-2012) तक श्रीरामकृष्ण मिशन आश्रम, चण्डीगढ़ के सचिव रहे। श्रीरामकृष्ण मठ, नागपुर द्वारा प्रकाशित अपनी पुस्तक 'स्वामी विवेकानन्द— स्वरूप और सन्देश' में उन्होंने सद्यावतार ठाकुर श्रीरामकृष्ण के श्रेष्ठतम शिष्य उनकी वाणी के, उनके विचारों के विशेष सन्देश वाहक विश्वात्मा स्वामी विवेकानन्द के चरित्र, कर्तृत्त्व व उनके व्यक्तित्व के विभिन्न आयामों का वर्णन किया है।

प्रस्तुत अध्याय 'स्वामी विवेकानन्द और सेवा' में उन्होंने स्वामीजी के त्याग, दु:खी-पीड़ित जनों के प्रति उनकी सहानुभूति, उनके लोकल्याणार्थ किए कार्यों पर प्रकाश डाला है। इस सबकी प्रेरणा उन्हें अपने महान् गुरु श्रीरामकृष्ण से मिली जिन्होंने स्वामीजी को जीवसेवा नहीं, शिवज्ञान से जीवसेवा का पाठ पढ़ाया। श्रीरामकृष्ण ने उन्हें बताया कि जीवमात्र में ईश्वर का वास हे, अत: जीव की सेवा ईश्वर की ही सेवा है। श्रीरामकृष्ण ने स्वयं अपने जीवन में इसका पालन भी किया।

वर्तमान समय में कोविड-19 के महासंकट के समय हम स्वामीजी के जीवन से प्रेरणा लेकर ऊँच-नीच, धर्म, जाति आदि को छोड़ दु:खी एवं सन्तप्त मानव के प्रति सहायता आदि के कार्य करते हुए अपने जीवन को धन्य बना सकते हैं। इसी उद्देश्य को समक्ष रखते हुए श्रीरामकृष्ण मठ, नागपुर की अनुमति से प्रस्तुत लेख यहाँ साभार पुन: प्रकाशित किया जा रहा है :]

शिवज्ञान से जीवसेवा

यह उस समय की बात है जब स्वामी विवेकानन्द कालेज के विद्यार्थी थे तथा धर्मोपदेश के लिए श्रीरामकृष्ण परमहंस के पास यातायात किया करते थे। तब उनका नाम था नरेन्द्रनाथ दत्त।

एक दिन श्रीरामकृष्ण दक्षिणेश्वर के अपने कमरे में भक्तों से घिरे बैठे थे। वैष्णव धर्म की बात चल रही थी। उस मत के बारे में श्रीरामकृष्ण कहने लगे : "तीन बातों का पालन करने के लिए सदा प्रयत्नशील रहने का उपदेश उस मत में है— भगवन्नाम में रुचि, जीव के प्रति दया और वैष्णव पूजन। ... कृष्ण का ही यह जगत्-संसार है, ऐसी धारण हृदय में रखकर सब जीवों पर दया" (प्रकाश करनी चाहिए)। "सब जीवों पर दया' कहते ही श्रीरामकृष्ण समाधिस्थ हो गये, कुछ क्षणों के अनन्तर अर्धबाह्य दशा में अवस्थित होकर कहने लगे "जीव पर दया, जीव पर दया? धत् तेरी, कीटाणु-कीट होकर तू जीव पर दया करेगा? दया करने वाला तू कौन है? नहीं नहीं, जीव पर दया नहीं, शिवज्ञान से जीवसेवा।'

भावाविष्ट श्रीरामकृष्ण की ये बातें सभी ने सुनी किन्तु उसका गूढ़ मर्म उस समय नरेन्द्रनाथ ही समझ पाये थे। उस दिन, बाद में उन्होंने कहा था : "आज ठाकुर (श्रीरामकृष्ण) की बात से कैसा अद्भुत प्रकाश दिखाई पड़ा। जिस वेदान्त-ज्ञान को लोग शुष्क, कठोर और ममतारहित समझते हैं, उसे भक्ति के साथ सम्मिलित करके कैसे सहज, सरल और मधुर प्रकाश का उन्होंने प्रदर्शन किया है।... आज ठाकुर ने भावावेश में जैसा बताया उससे जाना गया कि वन के वेदान्त को घर में लाया जा सकता है; संसार के सभी कार्यों में उसका प्रयोग किया जा सकता है। मनुष्य जो काम करते हैं करें, उसमें हानि नहीं; केवल हृदय से यह बात सबसे पहले समझ लेना चाहिए कि ईश्वर ही जीव व जगत् के रूप में अपने सामने प्रकट होकर विराजमान हैं। इस रीति से सभी को शिव समझकर जीवों की सेवा करने से चित्त शुद्ध होकर थोड़े समय में व्यक्ति अपने को चिदानन्दमय ईश्वर का अंश और शुद्ध-बुद्ध -मुक्त-स्वभाव समझ सकेगा। ... भगवान ने यदि अवसर दिया तो आज जो सुना, इस अद्भुत सत्य का, संसार में सर्वत्र प्रचार करूँगा— पण्डित, मूर्ख, धनी, निर्धन, ब्राह्मण, चाण्डाल सभी को सुनाकर मुग्ध करूँगा।"

स्वामीजी की योजना

किन्तु स्वामीजी के इस संकल्प को कार्य में परिणत होने में समय लगा। श्रीरामकृष्ण के देहत्याग के बाद स्वामीजी ने परिव्राजक के रूप में

दीर्घ पाँच वर्षों तक सारे भारत का भ्रमण किया। वे भारत के धनी-निर्धन, राजाओं-दीवानों, किसान-मजदूरों, ब्राह्मण-शूद्र, वकील-डॉक्टर-शिक्षक— सभी वर्गों के लोगों से मिले। उन्होंने देखा भारत के निर्धन व अज्ञान के अन्धकार में पड़े असंख्य नर-नारियों को, और वे व्यथित हो उठे। कन्याकुमारी में समुद्र के बीच एक शिलाखण्ड पर बैठकर उन्होंने एक योजना बनायी। उन्हीं के शब्दों में.... "भाई, यह सब देखकर— खासकर देश का दारिद्रय और अज्ञता देखकर मुझे नींद नहीं आती। कन्याकुमारी में माता-कुमारी के मन्दिर में बैठकर, भारत की अन्तिम शिला पर बैठकर, मैंने एक योजना सोच निकाली।... यदि कुछ नि:स्वार्थ परोपकारी संन्यासी गाँव-गाँव घूमकर विद्यादान करें और विभिन्न उपायों से मौखिक शिक्षा, मानचित्रों, नक्शों, कैमरों, भू-गोलकों की सहायता से चाण्डाल तक सबकी उन्नति के लिए प्रयत्न करें तो क्या समय पर इससे मंगल नहीं होगा?... इसे करने के लिए पहले लोग चाहिए, फिर धन। गुरु की कृपा से मुझे हर शहर से दस-पन्द्रह आदमी मिल जाएँगे। मैं धन की चेष्टा में घूमा पर भारत के लोग क्या धन देंगे!!.. इसलिए मैं अमेरिका आया हूँ, स्वयं धन कमाऊँगा और तब देश लौटकर अपने जीवन के इस एकमात्र ध्येय की सिद्धि के लिए अपना शेष जीवन न्योच्छावर कर दूँगा।"

"आत्मनो-मोक्षार्थं-जगद्धिताय च"

अमेरिका से लौटकर स्वामीजी ने रामकृष्ण मिशन की स्थापना की। "आत्मनो-मोक्षार्थं-जगद्धिताय च" अर्थात् आत्मा की मुक्ति के लिए और जगत् के हित के लिए यह निर्धारित किया उसका ध्येय। मोक्ष को हिन्दू धर्म में परम-पुरुषार्थ कहा गया है तथा प्रत्येक हिन्दू के जीवन का यही चरम-लक्ष्य है। भक्ति द्वारा हो या ज्ञान द्वारा, कर्मयोग की सहायता से हो या योगाभ्यास के माध्यम से, क्रिया-अनुष्ठान के सहारे हो यो भजन-कीर्तन के उपाय से, सभी उसी एक लक्ष्य की प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील हैं। मुक्ति-रूपी इस चरम लक्ष्य की खोज में सदियों से लगा भारत मानो यह भूल ही गया है कि जगत् का भी अस्तित्व है, और उसमें जरा, रोग, दारिद्र्य से पीड़ित प्राणी भी रहते हैं। नि:श्रेयस् की साधना में अभ्युदय पीछे छूट गया, उपेक्षित हो गया। परिणाम हुआ दरिद्रता, अज्ञान और भारत का भौतिक पतन। इसे दूर करने के लिए स्वामीजी ने "जगद्धिताय च" का

आदर्श भी प्रस्तुत किया। जगत् के कल्याण को भी मोक्ष का एक साधन क्यों न बना लिया जाय! इससे अभ्युदय व निःश्रेयस् दोनों ही सध जाएँगे।

दान, दया व सेवा सदा ही हिन्दू धर्म के महत्वपूर्ण अंग रहे हैं। उपनिषदों में कहा गया है : "एतत् त्रयं शिक्षेत् दमं दानं दयामिति।" अर्थात् दम, दान व दया सीखो। गीता में भगवान कहते हैं : "यज्ञो दानं तपश्चैव पावनानि मणीषिणाम्" यज्ञ, दान और तप" बुद्धिमानों को भी पवित्र करते हैं और पुराणों में कहा गया है "परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम्" – परोपकार ही पुण्य है तथा दूसरों को पीड़ा पहुँचाना ही पाप है। इतना होते हुए भी भारत में दान व दया की भावना सदा व्यक्तिगत स्तर पर ही प्रकट होती थी।

रामकृष्ण मिशन की स्थापना करते हुए स्वामी विवेकानन्द ने सेवा के आदर्श को एक सामाजिक, संघबद्ध व सुव्यवस्थित रूप प्रदान किया। यही नहीं, उन्होंने भारत को एक राष्ट्रीय आदर्श दिया : "त्याग और सेवा भारत के राष्ट्रीय आदर्श हैं। देश को इन्हीं की दिशा में गतिशील होने दो। अन्य बातें अपने-आप ठीक हो जाएँगी।" व्यक्ति के स्तर पर इसी सेवा ने एक विशिष्ट साधन-मार्ग का रूप लिया। व्यक्तिगत, सामाजिक अथवा राष्ट्रीय, चाहे किसी भी स्तर पर क्यों न हो, त्याग एवं निःस्वार्थता के बिना सेवा सम्भव नहीं है। जो सेवा नाम-यश, प्रतिष्ठा अथवा अन्य किसी स्वार्थ की पूर्ति के लिए की गयी हो, उसे सेवा की संज्ञा ही नहीं दी जा सकती। इसलिए स्वामीजी ने त्याग को सेवा का अभिन्न अंग बताया है।

'मित्र के प्रति' शीर्षक कविता में स्वामीजी कहते हैं—

ब्रह्म से कीट परमाणु तक
सब भूतों का है आधार,
एक प्रेममय प्रभु, मित्र! चरणों में
इन सबके, दो तन-मन वार।
बहुरूपों में खड़े सामने
छोड़ इन्हें, कहाँ खोजते ईश।
जीव-प्रेम जो जन करता
वही श्रेष्ठ पूजता जगदीश॥

भारत के नवयुवकों को सम्बोधित करते हुए स्वामीजी ने कहा— मेरे युवकों, गरीबों, विद्याहीनों, पददलितों के लिए सहानुभूति और संघर्ष के लिए मैं तुम्हारा आह्वान करता हूँ। प्रतिदिन, निरन्तर अधोगति की ओर बढ़ते हुए असंख्य नर-नारियों की उन्नति के लिए अपने समस्त जीवन को न्योछावर कर दो... तुमने पढ़ा है, 'मातृदेवो भव, पितृदेवो भव' मैं कहता हूँ 'दरिद्रदेवो भव, मूर्खदेवो भव।' यह जानो कि इनकी सेवा ही सर्वोत्कृष्ट धर्म है। क्या तुम मनुष्य से प्रेम करते हो? भगवान् को तुम कहाँ खोजोगे? क्या निर्धन, दुखी, दुर्बल भगवान् नहीं हैं? उनकी पूजा पहले क्यों नहीं करते? गंगा के किनारे कुआँ खोदने की क्या आवश्यकता है?" "दया से प्रेरित होकर दूसरों का भला करना अच्छा है, पर भगवद्भाव से सभी प्राणियों की सेवा करना इससे भी अच्छा है।" इत्यादि।

सेवा-धर्म व्यावहारिक रूपरेखा

स्वामी विवेकानन्द संसार के सम्मुख 'शिवज्ञान से जीवसेवा' रूपी युगधर्म को प्रस्तुत करके ही शान्त नहीं हुए, बल्कि उन्होंने इसकी व्यावहारिक रूपरेखा भी प्रदान की है। पात्रभेद से सेवा भौतिक, बौद्धिक व आध्यात्मिक— इन तीन प्रकार की हो सकती है। भारत में जहाँ निर्धनता तथा विद्याहीनता बहुत अधिक है, जहाँ प्रतिवर्ष बाढ़ व सूखा आदि प्राकृतिक प्रकोपों लाखों लोग पीड़ित होते हैं, वहाँ अन्नदान, वस्त्रदान, रोगियों को औषधिदान, अशिक्षितों को विद्यादान द्वारा सेवा करना ही परम धर्म हैं। विदेशों में अन्न-वस्त्र की समस्या न होने पर भी आध्यात्मिक दान व धर्म-प्रचार की आवश्यकता है। इसीलिए स्वामीजी ने भारत में सेवाश्रमों, शिक्षण-संस्थाओं तथा समय-समय पर राहत कार्यों का अनुष्ठान किया तथा विदेशों में भी केन्द्र स्थापित किये जिनके माध्यम से वेदान्त-प्रचार हो सके। आज रामकृष्ण मिशन स्वामीजी द्वारा प्रदर्शित इन्हीं सिद्धान्तों के अनुसार कार्य कर रहा है।

श्रीरामकृष्ण त्याग व सेवा के जीवित विग्रह थे। उन्होंने सभी प्राणियों में ईश्वर का प्रत्यक्ष अनुभव किया था और इसीलिए उनके दुःख-कष्ट दूर करने के लिए प्रवृत्त हुए थे। किन्तु उनकी सेवा प्रमुखतः आध्यात्मिक थी। साधनाजनित महान् आध्यात्मिक शक्ति की सहायता से उन्होंने स्वामी

विवेकानन्द आदि अपने प्रमुख शिष्यों में आध्यात्मिक जागरण किया। एक बार काशी-वृन्दावन की तीर्थयात्रा पर जाते हुए देवघर के निकट एक गाँव में निर्धनों की शोचनीय दशा देखकर वे इतने दुखी हुए कि उन्होंने अपने अभिभावक मथुरानाथ विश्वास को आदेश दिया कि वे उन बेचारों को भोजन कराएँ तथा एक-एक वस्त्र सभी को दान दें। माथुर बाबु के आनाकानी करने पर श्रीरामकृष्ण उन्हीं गरीबों के बीच जा बैठे और कहने लगे कि ये ही मेरे नारायण हैं और यही मेरी काशी है। तब बाध्य होकर माथुर बाबू को उन लोगों की सेवा करनी पड़ी। विभिन्न केन्द्रों तथा बृहत् कार्यों को आरम्भ करने के अतिरिक्त स्वामी विवेकानन्द ने स्वयं अपने हाथों से दरिद्र नारायण की सेवा कर सभी के सामने नर-रूपी-नारायण की सेवा का आदर्श प्रस्तुत किया था।

आइए, हम सभी, श्रीरामकृष्ण तथा स्वामी विवेकानन्द द्वारा प्रदर्शित सेवा के आदर्श के अनुसार जीवन-यापन कर अपने जीवन को सार्थक बनाएँ।

●

कर्मपथ पर चित्त की प्रशान्ति

[यह लेख "उद्बोधन", 35 वर्ष 6 संख्या में प्रकाशित हुआ था और स्वामी चेतनानन्द द्वारा उद्बोधन कार्यालय, कलिकाता से 'गल्प-मालिका' नामक बंगला पुस्तिका में सम्पादित और संकलित किया गया। वहाँ से सन्दीप नाँगिया द्वारा हिन्दी भाषा में अनूदित है। यह लेख उद्बोधन कार्यालय की अनुमति से यहाँ साभार पुनः प्रकाशित किया जा रहा है :]

एक सैनिक अपना कार्य समाप्त हो जाने पर स्त्री-पुत्रादि को साथ लिये जलपथ से देश लौट रहा था। रास्ते में भीषण झड़ उठा। झड़ का वेग प्रतिपल ही बढ़ने लगा। धीरे-धीरे उसने प्रचण्ड आकार धारण कर लिया। नौका पर चढ़े लोग सब ही भीषण रोना-पीटना करने लगे। उस सैनिक की स्त्री भी अत्यन्त भयभीत हो कर शोरगुल करने लगी।

वह सैनिक था एक भगवद्भक्त। और उसकी स्त्री थी विपरीत धर्मी। उसने स्त्री से धैर्य धारण करने का अनुरोध किया। बेचारी स्त्री हैरान होकर बोली, "यह क्या, सब लोग भय से शोर कर रहे हैं, और तुम मुझे धमका रहे हो?" यह बोलकर वह खूब ज़ोर से रो उठी।

सैनिक ने तब अपनी तलवार म्यान से निकाल कर स्त्री के मुख के सामने धर दी और बोला, "शीघ्र चुप करो, बोल रहा हूँ, नहीं तो अभी काट डालूँगा।"

पति के हाथ में नंगी तलवार देख कर स्त्री का रोना थम गया। वह कुछ समय के बाद ज़ोर से हँस उठी।

पति अब हैरान हो गया। पूछा, "यह क्या, तुम हँस उठी?"

स्त्री हँस कर बोली, "इस तलवार से तुम जो मुझे मार नहीं पाओगे, वह मैं अच्छे से जानती हूँ।" पति बोला, "तुम क्या जानो— इस तलवार से शत-शत व्यक्तियों को मृत्यु के मुख में भेज चुका हूँ। यह काम इससे पहले अनेक बार किया है, वह काम आज भी क्यों न कर पाऊँगा?"

स्त्री बोली, "स्वामी, आपके हाथ में उठे अस्त्र और आपके क्रोध-

प्रदीप्त मुख से मुझे भय नहीं है। जानते हैं, क्यों? कारण, आपकी यह तलवार तो जड़ पदार्थ है, और इसकी अपनी ऐसी कोई शक्ति नहीं जो मुझे आघात कर सकती है। और जिस हाथ ने इस तलवार को धारण किया हुआ है, वह तो आपका ही हाथ है; और आप तो मुझे प्यार करते हैं। प्रिय, मुझे याद नहीं कि आपके समक्ष मैंने ऐसा कोई अपराध किया है, जिसके लिये आप मुझे मृत्युदण्ड दे सकते हैं। किस अपराध के कारण आप मुझे यह दण्ड देंगे, आपके प्रति मेरे प्रेम और सरलता के लिये? मैं अच्छे से जानती हूँ कि आपके हाथ में उठा अस्त्र मेरी गर्दन पर नहीं पडेगा। और यदि आप मुझे मारने के लिये सचमुच ही संकल्प कर चुके हैं, उस से भी मुझे भय, दुःख क्या है? आपके सुख और सन्तोष का विधान ही जिसके जीवन की चरम कामना है, आपके सुख के लिये, आपके हाथ में जिसका जीवन उत्सर्गीकृत है, वह तो धन्य ही होगा प्रभु! इसलिये आपके समक्ष मुझे किसी अवस्था में भय नहीं है।"

स्त्री की बात से पति चमत्कृत और आनन्दित होकर बोला, "प्रिये, ठीक इसी एक ही कारण से इस दुर्दान्त झड़ के बीच में भी मैं भयभीत नहीं हूँ। यह जो तूफान, वज्रपात इत्यादि यह समस्त ही कर्तृत्वहीन अचेतन वस्तु है और इसके जो प्रेरक हैं, वे हमरे प्रियतम प्रभु हैं। उनकी इच्छा के बिना कुछ भी घटित हो सकता नहीं। इस झड़, बादल को जब तक वे हमारा नाश करने के निमित्त न भेज दें, तब तक ये हमारा कुछ भी कर नहीं पाएँगे, और यदि हमारी मृत्यु के लिये ही उन्होंने इनको भेजा दिया है, तब मैं इनका स्वागत-सम्भाषण कर के कहता हूँ, 'आओ, आओ प्रभु के दूत, मेरे जीवन-प्रदीप को शीघ्र ही बुझा दो— प्रियतम के लिये जीवन-दान से बढ़कर प्रियतर कार्य मेरे लिये और नहीं है।' "

कुछ क्षण बाद झड़ थम गया। फिर सब ही शान्त हो गए। आरोहीगण आनन्दित हो गए; किन्तु उस दिन उन आरोहियों के बीच वह सैनिक और उसकी स्त्री भूमा के आनन्द के अधिकारी हो उठे।

कर्मप्रधान कोलाहलमय दुःख के तूफान से पूर्ण संसार के बीच से जब जीवन की नैया चलानी होती है, तब मनुष्य के चित्त को भय और उद्वेग के हाथ से मुक्त कर शान्त रखने का यही पथ है।

समस्त सुख, दुःख के बीच में सम्पद्-विपद् के आवरण में, उस सर्व-नियन्ता प्रियतम के प्रिय हस्त को देखना, सीखना ही हुआ शान्ति का पथ, यही कर्म के बीच में शान्तिलाभ का गुप्त रहस्य है।

और यदि इस भक्तिमार्ग को तुम नहीं मान पाते हो, यदि कर्मवाद ही श्रेष्ठ है— ऐसा तुम्हारा निश्चय है, तब भी तुम सर्व अवस्थाओं में चित्त को शान्त रख सकते हो। कारण, सुख और दुःख जब तुम्हारा कर्मफल है, तब आज तुम्हारे सामने जो दुःखरूप काँटे आ कर उपस्थित हुए हैं, वो तुम्हारे ही रोपित वृक्ष के काँटे हैं। भविष्य में यदि सुखरूप पुष्प को पाना चाहो तो उसी प्रकार की खेती आबाद कर सकते हो। सुख और दुःख को आत्मकृत कर्मफल के रूप में यदि जाना याए तो सुखदुःख को शान्त चित्त से ग्रहण करना सम्भव है।

और यदि तुम वेदान्तवादी हो, तो सुख और दुःख तो तुम्हारे लिये माया वा असत्य है। "ब्रह्म सत्य और जगत् मिथ्या" इसका यदि विश्वास करो, तो इस स्वप्नरूप दृश्यमान जगत् को छाया-इन्द्रजाल की छवि के समान आँखों के सामने बह जाने दो। यही छवि तुम्हारे अन्तरस्थ पुरुष का कुछ भी विकृत नहीं कर पाएगी। अतएव जगत् के मिथ्या सुख-दुःख तुम्हारे ऊपर से चले जाएँ, तुम निर्विकार चित्त हो कर मिथ्या से अपनी दृष्टि हटाकर सत्यवस्तु में निबद्ध करने की चेष्टा करो।

हमारे दुःख-बोध के मूल में रहती है विश्वास की कमी अथवा प्रकृति के विधान के विरुद्ध जाने की वासना। हम यदि सकल कर्म, सकल अवस्थाओं के पीछे अपने "प्रेमास्पद" की इच्छा को देख पाएँ, तो उनके विरुद्ध वासना हमें विचलित नहीं कर पाती है एवं प्रिय हस्त का दान जानकर सब दुःख ही सुख हो जाते हैं, सकल काँटे फूल हो उठते हैं, विष भी अमृत हो जाता है।

ऐसा करते हुए हमें दुःख पाने का और भय नहीं रहता, हमारा मन अपूर्व सन्तोष से भर उठता है एवं हम चित्त की प्रसन्नता वा शान्ति-लाभ में सक्षम होते हैं।

— स्वामी भोलानाथजी वेदान्तभूषण

हिन्दी अनुवाद : सन्दीप नांगिया

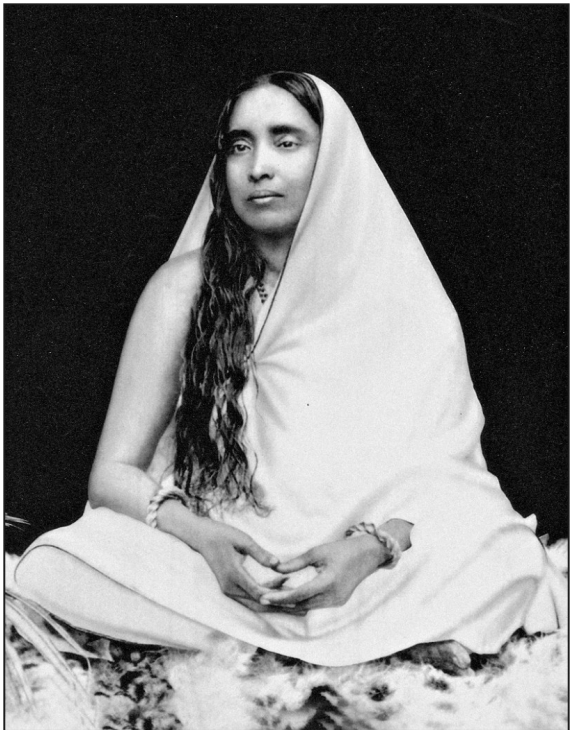

माँ सारदा

(1853 – 1920)

- जन्म : 22 दिसम्बर, सन् 1853 ईसवी।
- स्थान : जयराम बाटी (कामारपुकुर से 4 मील और दक्षिणेश्वर से 60 मील)
- माता-पिता : श्रीमती श्यामा सुन्दरी और श्री रामचन्द्र मुखोपाध्याय।
- भाई-बहन : चार छोटे भाइयों की बहन।
- विवाह : 6-7 वर्ष की अल्पायु में सन् 1859 में 22-23 वर्षीय ठाकुर रामकृष्ण के साथ।
- दक्षिणेश्वर-वास : प्रथम बार सन् 1872 में गंगा-स्नान के लिए जा रहे यात्री-दल के साथ 60 मील पैदल चल कर दक्षिणेश्वर पहुँचीं। बाद में वे आवश्यकतानुसार कभी दक्षिणेश्वर, कभी जयराम बाटी रहती रहीं। ठाकुर के देहावसान के पश्चात् वे प्राय: कोलकता रहा करतीं।
- महासमाधि : कोलकता में 21 जुलाई, सन् 1920 ईसवी को रात्रि डेढ़ बजे।

●

माँ सारदा

[2-3-4 अप्रैल, 2021 को श्रीरामकृष्ण मिशन आश्रम, देहली में वार्षिक उत्सव का आयोजन किया गया था। यह उत्सव देहली के यूट्यूब चैनल पर भी प्रसारित किया गया। मैंने इसे वहीं से सुना। 3 अप्रैल को माँ सारदा-उत्सव था। इस उत्सव में वहाँ उपस्थित स्वामीजीयों— देहली आश्रम के स्वामी शान्तात्मानन्दजी, चण्डीगढ़ आश्रम के स्वामी आत्मज्ञानन्द जी तथा ग्वालियर आश्रम के स्वामी राघवेन्द्रानन्द जी के प्रवचन भी हुए। स्वामी राघवेन्द्रानन्द जी ने अपने प्रवचन में माँ-विषयक एक ऐसा प्रसंग सुनाया जिसे सुनकर विश्वास होता है कि माँ कहीं गई नहीं हैं, वे आज भी वर्तमान हैं। घटना इस प्रकार है :]

महाराष्ट्र में नागपुर के निकट यवतमाल नाम का एक जिला है। उसके समीप ही पूसड नाम का एक छोटा-सा गाँव है। वहाँ की एक महिला को leprosy (कुष्ठ-रोग)-ग्रस्त होने पर उसके घर वालों ने उसे घर से बाहिर निकाल दिया। अब वह अकेली रहती। माँग कर खाना खाती। वहाँ पास में ही एक देवी-मन्दिर में झाड़ू लगाने का काम करती। देवी से प्रार्थना करती— माँ, देखो ना, मुझे क्या रोग हो गया है! मुझे चंगा कर दो। ऐसा कहकर रोती। उसके घर में दो चित्र लगे थे— एक माँ सारदा का, दूसरा स्वामीजी का। माँ सारदा को वह महिला 'मैडम' कहती और स्वामीजी को नरेन स्वामी। ये दोनों कौन हैं, वह जानती न थी।

एक रात उस महिला के सपने में वह 'madam' आईं और कहने लगीं— तुझे ऐसा कुछ ज्यादा रोग नहीं है। तू नागपुर जा। वहाँ मेरा बेटा-बेटी/लड़का-लड़की है। तू वहाँ जा। तू ठीक हो जाएगी।

उसी दिन उसने किसी से पैसे माँगे नागपुर जाने के लिए। उन पैसों से वह बस द्वारा नागपुर आई। नागपुर बस स्टैण्ड पर उतर कर वह हरेक

को दोनों चित्र दिखाती है। पूछती है— नरेन स्वामी और यह मैडम कहाँ रहती हैं, बताओ। किसी पहचानने वाले ने कहा— यहाँ धन्तोली में एक आश्रम है। वहाँ जाओ।

यह महिला वहाँ आ गई। आश्रम में एक अस्पताल है। अभी खुला है दो वर्ष हुए। वह महिला सुबह जल्दी पहुँच वहाँ गई। एक स्त्री वहाँ झाड़ू लगा रही थी। उसने ये दोनों चित्र उसे भी दिखाए। वह कहने लगी— तुम मन्दिर में जाओ उधर आश्रम में। मन्दिर में आकर देखा, उसके पास जो दो चित्र हैं, वही यहाँ भी लगे हैं। फिर किसी से पूछती है— ये दोनों कहाँ हैं? उस व्यक्ति ने पूछा— तुम्हें क्या चाहिए? वह महिला बोली— इन्होंने (मैडम ने) मुझे बताया मेरा लड़का-लड़की नागपुर में हैं। वे तुम्हारी यह leprosy ठीक कर देंगे। इस व्यक्ति ने महिला को दवाखाने में भेज दिया। वहाँ एक लड़की आई। उसने dermatologist (त्वचा विशेषज्ञ)— डॉ० उदय चौरसिया को फोन लगाया। कहा— sir, एक महिला आई है। बोलती है, उसे माँ ने स्वप्न में कुछ बताया है और महिला द्वारा बताई सारी बात उन्हें बता दी। फिर बोली— आज तो आपका day नहीं है। तो क्या इसे आपके प्राइवेट क्लिनिक में भेजूँ? उन्होंने कहा, हाँ, भेज दो। इस महिला को वहाँ पहुँचा दिया गया। वहाँ एक और लड़की थी डॉक्टर की असिस्टेंट। उसने महिला की सारी बात सुनी। फिर डॉक्टर को बताया। डॉक्टर ने 15 दिन की दवा दे दी और कहा— सब ठीक हो जाएगा। अब 15 दिन बाद आना। दवाई देने के बाद असिस्टेंट लड़की ने पूछा— अब तुम कहाँ जाओगी? महिला बोली— गाँव जाऊँगी। 15 दिन में फिर आऊँगी। पूछा— गाँव कैसे जाओगी? बोली— माँग लूँगी किसी से पैसे। नहीं तो यह जो नरेन स्वामी है ना, (फोटो दिखाकर) यह व्यवस्था कर देगा। यह सुनते ही उस असिस्टेंट ने 150 रुपये उसके हाथ पर रख दिए। वह महिला बोली— देखो, इस नरेन स्वामी ने व्यवस्था कर दी ना! ऐसा बोल कर वह गाँव चली गई। इस असिस्टेंट ने डॉक्टर से कहा— यह अगली बार आएगी ना, इसे 2-3 महीने की दवा इकट्ठी दे देना। बार-बार मत बुलाना। बाद में पूछने पर मालूम हुआ उस महिला का रोग दूर हो गया। स्वामी राघवेन्द्रानन्द जी ने

3 अप्रैल, 2021 को यह घटना सुनाई और कहने लगे— पिछले शुक्रवार (27 मार्च) की तो घटना है यह। अर्थात् सात दिन पूर्व की।

तो देखो, माँ आज भी हैं। जो भी प्रामाणिकता से, हृदय से माँ को पुकारेगा, उसे उत्तर मिलेगा। माँ सारदा आदिशक्ति हैं। वे आज भी हैं।

माँ सारदा की जय!

- डॉ० निर्मल मित्तल

श्रीमती ईश्वरदेवी गुप्ता (1915 – 2002)

- माँ सारदा के जन्मोत्सव पर सन् 1958 की प्रथम भेंट से ही स्वामी नित्यात्मानन्द जी की अन्तरंग शिष्या एवं उनके पश्चात् श्री म ट्रस्ट की आजीवन अध्यक्षा।
- स्वामीजी द्वारा रचित बंगला 'श्री म दर्शन' ग्रन्थमाला का प्रकाशन और उसका हिन्दी-अनुवाद तथा प्रकाशन।
- बंगला कथामृत का हिन्दी-अनुवाद तथा प्रकाशन।
- इनके पति प्रोफेसर धर्मपाल गुप्ता द्वारा
  - — हिन्दी 'श्री म दर्शन' का M., 'the Apostle and the Evengelist' नाम से तथा
  - — हिन्दी कथामृत का 'Kathamrita' नाम से ही अंग्रेज़ी-अनुवाद और प्रकाशन।

•

नूपुर तेरे चरणों का

श्रीमती ईश्वर देवी गुप्ता

श्रीमती ईश्वरदेवी गुप्ता अपने गुरु स्वामी नित्यात्मानन्द के संग रहीं लगभग 16 वर्ष तक (सन् 1958 से 1975 तक)। इस सुदीर्घ काल में अपने गुरु के संग रहते-रहते उनकी मन:स्थिति में धीरे-धीरे परिवर्तन आने लगा। महाराज जी से मिलने के लगभग पाँच वर्ष पश्चात् सन् 1963 में तो वे उन्मनी-सी रहने लगीं— हर समय जैसे इस जगत से दूर, कहीं और खोई हुई— भाव में। उन्हीं दिनों उन्होंने अनेक मनोभाव, विचार कविताबद्ध किए। उन द्वारा रचित यह गीत भी उन्हीं दिनों (16 मई, 1964) का है। तब वे बाह्य रूप से थीं उन्मादवत् पर भीतर से आनन्द ही आनन्द। वे यूँ रहतीं जैसे प्रतिपल हों वे माँ के संग, जैसे वे हों माँ के चरणों का नूपुर, दिन-रात 'माँ' के अंग-संग।

नूपुर तेरे चरणों का, मैं यदि बन पाऊँ माँ।
तेरे चरण की हर गति के संग-संग बज पाऊँ माँ॥

तेरे कदम की हर झंकार में, मन मेरा बज जाए माँ।
इसी तरह दिन-रात के संग से, भेद तुम्हारा पाऊँ माँ॥

तुम हो कौन, मैं हूँ कौन, खोज यदि पा जाऊँ माँ।
नूपुर-गति से दूर रहूँ तब, मौन गीत सुन पाऊँ माँ॥

श्रीमती ईश्वरदेवी गुप्ता के गीत में माँ के चरणों का 'नूपुर' बनने की चाह कुछ यूँ अभिव्यक्त हो रही है :

मैं
माँ के चरणों का
ब्रह्ममयी माँ के चरणों का

आनन्दमयी माँ के चरणों का
अमृतमयी माँ के चरणों का
हाँ, मैं उसी माँ के चरणों का नूपुर

पर माँ!
तुम कौन? मैं कौन?
तुम अंशी, मैं अंश
तुम ब्रह्म, मैं जीव
तुम परमानन्द, मैं परमानन्द का अंश
तुम अमृत, मैं अमृत का एक बिन्दु

तुम्हारे चरणों का नूपुर बनकर
तुम्हारा सामीप्य पाकर
तुम्हारा नित्य संग पाकर
मैं अवश्य सुन पाऊँगा
हर क्षण गुंजायमान
तुम्हारे नाद को, अनाहत नाद को
और फिर
उस नाद को सुनते-सुनते
मिट जाएगा
'तुम' और 'मैं' का भेद
तुम माँ और मैं नूपुर—
यह भान न रह जाएगा
फिर 'मैं' हो जाएगा 'तुम'

अमृत का पुत्र हो जाएगा
स्वयं अमृत
परमानन्द का अंश हो जाएगा
स्वयं परमानन्द।

– डॉ० निर्मल मित्तल

(नूपुर 2012 से)

अन्दर से श्री पीठ का मन्दिर

Activities of Sri Ma Trust

Sri Ma Trust was registered on December 12, 1967 at the residence of Principal Dharm Pal Gupta at Rohtak by Swami Nityatmananda ji, a direct disciple of Sri M. It started functioning with effact from December 20, 1967 with the following prayer by Swami ji :

Om Thakur, our beloved Father !
This day we open this centre named Sri Ramakrishna Sri Ma Prakashan Trust (Sri Ma Trust) to propagate your holy name to all people of the world in our humble way for the peace and happiness of all. Yourself, accompanied by the Holy Mother and your beloved disciples like Swami Vivekananda and revered 'M.', do bless us; be always with us; do guide us in the right direction.

By this unselfish work, by this labour of love, may we realize your real nature, God incarnate on earth!

May we have peace and happiness real; may all beings of the universe be peaceful and happy; may the entire universe be the abode of peace and happiness, real and eternal!

I am your humble son and servant,

Swami Nityatmananda
Civil Lines, Rohtak
December 20, 1967

The motto of the Trust is— "God first, world next" (आगे ईश्वर, परे सब). Consequent upon the retirement of Principal D.P. Gupta the office of the Trust was shifted to his permanent residence at H.No. 579, Sector 18-B, Chandigarh and it stands here only till this day.

The Trust was working primarily with the joint efforts of Swami ji, Prof. D.P. Gupta (Papa ji) and Smt. Ishwar Devi Gupta (Mummy ji/Mata ji). Later some devotees were added to the Trust as per requirement. The name of Dr. Naubat Ram Bhardwaj was included in the list of trustees against the vacancy caused by the resignation of Sh. V.P. Prabhakar in 1972.

After the demise of Swami Nityatmananda on July 12, 1975 Smt. Ishwar Devi Gupta became the 2nd President of the Trust and Prof. Dharm Pal Gupta became its Secretary. Both of them remained at their respective posts during their life time[1].

At present, the Board of Trustees comprises of the following persons :

1. Dr. S.V Kesar : President
2. Sh. Nitin Nanda : Vice President
3. Sh. Sandeep Nangia : Secretary
4. Sh. Kamal Gupta, Dr. N.R. Bhardwaj and Dr. (Mrs.) Nirmal Mittal are trustees.

Sub-centre at Rohtak

In the Trust meeting held on 4th July, 2020, it was decided to create a sub-centre of Sri Ma Trust at Rohtak. It is now functional with the efforts of Dr. Naubat Ram Bhardwaj.

The Building of the Trust

A plot No. 248 measuring 2000 Sq. yards was purchased in Sector 19-D, Chandigarh during 1974 for the purpose of Trust Temple, the construction upon which was completed during the year 1978.

---

1 Prof. D.P. Gupta left his body on October 23, 1998 and Smt. Gupta on May 26, 2002.

In the year 2015-16 the building was extended further as per requirement.

Publication Work

Till now the Trust has published the following books :

1. All the five parts of Sri Sri Ramakrishna Kathamrita both in Hindi and English— a word for word translation from the original Bengali text.
2. All the sixteen parts of Sri Ma Darshan in Bengali, in Hindi— a translation from the original Bengali name and in English under the name— "M. the Apostle and the Evangelist".
3. Sri Sri Ramakrishna Kathamrita Centenary Memorial (Out of print. Current version is available online for freee).
4. A Short life of Sri M.
5. Life of M. and Sri Sri Ramakrishna Kathamrita.
6. Noopur (the annual magazine)— It was started in 1994 in the memory of Swami Nityatmananda on his 101st birth anniversary on Ganga Dashahra. It is being published every year till date.
7. लाइयाँ ते तोड़ निभाइयाँ— These were brought on 30th November, 2015 on the 100 birthday of Mataji Smt. Ishwar Devi Gupta.
8. The books of the Trust are also re-printed from time to time.

Website Details

Following the ideals laid by Sri M. : Freely ye receive and freely ye give; Sri Ma Trust has launched a website http://www.kathamrita.org wherein we have placed many of our publications for free download and reading. Readers

around the world can browse this website and partake of the nectarine words of Sri Ramakrishna. Books are also available for sale online.

Educational Aid

A sum of Rs. 10,000/- was provided as financial assistance to Miss Aarti Sharma (Sevika Renuka Sharma's daughter) for the purchase of a laptop to facilitate her attend online classes during ongoing pandemic.

Three scholarships each of the value of Rs. 2500/- per month were given to the kids of our Trust Sevak-Sevika's children— Renuka's daughter Miss Aarti Sharma, Gurudev's daughter Arushi and his son Aviraj Chand.

Sadhu Seva

Rs. 5000/- were donated to Sadhvi Lata ji to help her run her Aashram— Maa Sarada Vidya Mandir during ongoing Covid-19 period.

Corona relief and other charities

A total sum of Rs. 1,81,500/- was donated to Belur Math, Ramakrishna Mission Ashrama, Chandigarh, Kathamrita Bhavan, Kolkata and Society for the Care of the Blind, Chandigarh.

Other Regular Activites of the Trust

Puja, Aarati and Paath

It always remained and now too is a regular activity of the Trust in the evenings. After the aarti, paath from Kathamrita, Sri Ma Darshan, Maa Sarada Vaani and Swami Vivekananda literature is a daily feature. At the end some bhajan is sung by some devotee.

On the celebration days the Secretary Swami ji from the local Ramakrishna Mission Ashrama is invited to grace the occasion and deliver his discourse in the Trust Temple. Prasadm follows at the end.

On the occasion of Shree Raam Navami, Shree Krishna Janmashtmi a path from Ramayana and Shrimadbhagavatam or Shrimad Bhagwadhgita is also arranged.

Celebrations

The Trust regularly celebrates the birth anniversaries of Thakur ji, Holy Mother, Swami ji, Shri M., Swami Nityatmananda and now Smt. Ishwar Devi Gupta too.

But on account of Corona pandemic and consequential lockdowns the Trust celebrated only the following festivities in 2020-21:

1. Kalptaru divas : on 1st January
2. Maa Saarda's birthday : on 5th January
3. Swami Vivekananda birthday : on 4th February
4. Thakurji's birthday : on 15th March

Swami Atmajnananda ji, Secretary of the local Ramakirshna Mission Ashrama could be present on Kalpataru divas only.

Sri M. Festivity

Mata ji Smt. Ishwar Devi Gupta, was keen to propagate Thakur words of based on Sri Sri Ramakrishna Kathamrita written by Sri M. and also its underlying ideology— how a householder can keep his mind on God even while living in the household. With this in her mind she planned to organize inter school/inter collage paper reading or declamation contests on these topics. For this purpose she created on Endowment fund of Rs. one lakh with Ramakrishna Mission Ashrama, Chandigarh in 1997 to arrange Sri M. Mahotsav

in the Mission Ashrama every year with the interest of Rupees one lakh of the endowment fund.

The first Sri M. Mahotsav was organized on 24-25 October, 1998 under the guidance of the then Secretary of the local ashrama, Swami Pitambarananda ji. Since then this festivity is being organized every year in Ramakrishna Mission Ashrama, Chandigarh. But due to the ongoing Covid-19 pandemic this festivity couldn't be possible during the year 2020.

Advertisements

The advertisements of Sri Ma Trust publication often appear in Prabuddha Bharat, Vivek Jyoti, Vedanta Kesri, Udbodhan and on Google Adwords too.

- Dr. Nirmal Mittal

श्री 'म' ट्रस्ट के प्रकाशन

1. **श्री 'म' दर्शन**

बंगला संस्करण— भाग 1 **से** 16**— स्वामी नित्यात्मानन्द**

श्री 'म' दर्शन महाकाव्य में ठाकुर, माँ सारदा, स्वामी विवेकानन्द तथा अन्यान्य संन्यासी एवं गृही भक्तों के विषय में नूतन वार्त्ताएँ हैं। और इसमें है कथामृतकार श्री 'म' द्वारा 'कथामृत' के भाष्य के साथ-साथ उपनिषद्, गीता, चण्डी, पुराण, तन्त्र, बाइबल, कुरान आदि की अभिनव सरल व्याख्या ।

2. **श्री 'म' दर्शन**

हिन्दी संस्करण— भाग 1 **से** 16

श्रीमती ईश्वरदेवी गुप्ता द्वारा बंगला से यथावत् हिन्दी-अनुवाद ।

3. **श्री 'म' दर्शन**

अंग्रेजी संस्करण— ('M.'— **The Apostle and the Evangelist**)

श्री 'म' दर्शन ग्रन्थमाला का अंग्रेजी-अनुवाद प्रोफेसर धर्मपाल गुप्ता ने 'M.'— **The Apostle and the Evangelist** नाम से किया है। ट्रस्ट के पास सभी (1-16) भाग उपलब्ध हैं।

4. **Sri Sri Ramakrishna Kathamrita Centenary Memorial**

प्रोफेसर धर्मपाल गुप्ता और पद्मश्री श्री डी०के० सेनगुप्ता द्वारा अंग्रेजी में सम्पादित बृहद् ग्रन्थ, जिसमें ठाकुर श्रीरामकृष्ण, 'कथामृत', श्री 'म' और 'श्री म दर्शन' पर श्रीरामकृष्ण मिशन के संन्यासियों समेत अनेक गणमान्य विद्वानों के शोधपूर्ण लेख हैं।

5. **A Short Life of Sri 'M.'**

स्वामी नित्यात्मानन्द जी महाराज के मन्त्र-शिष्य और श्री 'म' ट्रस्ट के भूतपूर्व सचिव, प्रोफेसर धर्मपाल गुप्ता द्वारा अंग्रेज़ी में लिखी गई श्री 'म' की संक्षिप्त जीवनी ।

6. Life of M. and Sri Sri Ramakrishna Kathamrita

प्रोफेसर धर्मपाल गुप्ता द्वारा लिखित श्री 'म' के जीवन तथा 'कथामृत' पर शोध प्रबन्ध।

7. श्री श्री रामकृष्ण कथामृत (हिन्दी संस्करण— भाग 1 से 5)

श्री महेन्द्रनाथ गुप्त (श्री म) ने ठाकुर रामकृष्ण परमहंस के श्रीमुख-कथित चरितामृत को अवलम्बन करके ठाकुरबाड़ी (कथामृत भवन), कोलकता-700006 से 'श्री श्री रामकृष्ण कथामृत' का (बंगला में) पाँच भागों में प्रणयन एवं प्रकाशन किया था। इनका बंगला से यथावत् हिन्दी अनुवाद करने में श्रीमती ईश्वरदेवी गुप्ता ने भाषा-भाव-शैली— सभी को ऐसे सरल और सहज रूप में संजोया है कि अनुवाद होते हुए भी यह ग्रन्थमाला मूल बंगला का रसास्वादन कराती है।

8. Sri Sri Ramakrishna Kathamrita (English Edition)

श्रीमती ईश्वरदेवी गुप्ता के हिन्दी-अनुवाद से प्रोफेसर धर्मपाल गुप्ता द्वारा कथामृत का अंग्रेजी-अनुवाद। सभी पाँचों भाग प्रकाशित।

9. नूपुर (वार्षिक स्मारिका)

श्री म ट्रस्ट के संस्थापक और हम सब के पूजनीय गुरु महाराज स्वामी नित्यात्मानन्द जी के 101वें जन्मदिन पर उनकी स्मृति में 'नूपुर' नाम से सन् 1994 ईसवी में इस स्मारिका का प्रकाशन आरम्भ हुआ था। उसी स्मारिका ने अब वार्षिक पत्रिका का रूप ले लिया है, जिसमें अन्य बातों के अतिरिक्त ठाकुर रामकृष्ण परमहंस, माँ सारदा, श्री म, स्वामी विवेकानन्द, स्वामी नित्यात्मानन्द, 'श्री म दर्शन' आदि के बारे में प्रचुर सामग्री रहती है। साथ ही 'कथामृतकार श्री 'म' के द्वारा 'श्री 'म' दर्शन' में कही उन बातों को भी प्रकाश में लाया जाता है, जो 'श्री श्री रामकृष्ण कथामृत' में नहीं हैं। नूपुर-2018 के प्रथम भाग में श्री 'म' ट्रस्ट का इतिहास वर्णित है अंग्रेज़ी भाषा में।

10. लाइयाँ ते तोड़ निभाइयाँ (स्मारिका)

श्रीमती ईश्वरदेवी गुप्ता के 100वें जन्मदिवस पर सन् 2015 में यह स्मारिका प्रकाश में आई।

●